दिनका बाद अपन मुँहसँ कहैत काल प्रकाशकेँ एक टा नव अर्थ-बोध होइत छैक जेना ई अभिशाप ओहि भिखारिक नहि, समस्त नोकरीपेशा निम्नमध्यवर्गीय लोकक हो– एक गाम माङय तँ एक तामा, सात गाम माङय तैयो एके तामा।

मीरा खयनाइ लऽ अनैत छैक। ऊठिकऽ खाय बैसि जाइत अछि प्रकाश। मुँहमे कओर दैत-दैत एक बेर अनायास दृष्टि ऊपर उठैत छैक। मीराक आँखिमे नोर भरल छैक। ओ बामा हाथेँ ओकरा लग घीचैत छैक। मीरा अनायास एकदम समीप आबि ओकर पीठपर मुँह नुकाकऽ कानऽ लगैत छैक– निःशब्द। ओकर पीठपर अपनत्वक स्पर्श दैत प्रकाश मोन पड़बाक चेष्टा करैत अछि जे बाबी अपन खिस्सामे ओहि भिखारिक शाप-मुक्त होयबाक कोन उपाय कहने छलैक ?

●

युगपुरुष

माय औखन कहियो-कहियो पूछि बैसैत अछि–"बनारस मोन पड़ैत छऽ ? तोरा तँ ऐ कोनसँ ओइ कोन धरि धाङल छलऽ !" हमरा किछुओ मोन नहि पड़ैत अछि जकरा शहरक नक्शा कहल जा सकय । मोन पड़ैत अछि दू-चारि टा स्थान–एक टा छोट-छोट सीढ़ीवला मकान, नीलकण्ठ मन्दिर, मणिकर्णिका आ दशाश्वमेध घाट, जेना कोनो नोचल-नाचल चित्रमे बाँचल कतहु एक टा आँखि, एक टा हाथ, आ लाल साड़ीक कोर । मुदा हमरा लाल साड़ी नहि, एक टा लाल फ्राक मोन पड़ैत अछि । बनारसक चर्चा अयलापर सभसँ पहिने मोन पड़ैत अछि लाल फ्राक पहिरने ठाढ़ि एक टा छौंड़ी । मुदा लाल फ्राक आ गुलाबी गालबाली ओहि छौंड़ीक मुँह उदास छैक । सीढ़ीपर ठाढ़ि बजैत अछि–"हमसभ काल्हि चल जायब ।"

–"चल जयबेँ ? कतऽ ?" उज्जर हाफपैण्ट आ हाफशर्ट पहिरने ठाढ़ दस बरखक छौंड़ा पुछैत छैक– जेना विश्वास नहि भऽ रहल होइक ।

–"दोसर शहर । बाबूजीक बदली भऽ गेल छनि ।" छौंड़ीक स्वर आर उदास भऽ जाइत छैक ।

–"काल्हिए चल जयबेँ ? सत्ते ?"–छौंड़ाकेँ जेना तैयौ विश्वास नहि होइत छैक ।

–"हँ । काल्हिए जयबैक ।..."

छौंड़ाकेँ आर किछु नहि सुनाइ पड़ैत छैक । लगैत छैक, जेना पयर तरक सीढ़ी ससरि गेलैक । सौँसे संसार नाचऽ लगैत छैक आ फेर एक टा कोनो सक्कत चीजपर खसैत जोरसँ चीत्कार कऽ उठैत अछि–'माय गय...'

नहि जानि कतेक समय बीति जाइत छैक । आँखि खुजलापर देखैत छी जे

माय-बाबू, रघू झा भनसीया सभ घेरने छथि । माय सिरमामे अछि आ बाबू पौथानमे । आँखि खोलैत देखि माय चेहरापर झूकि जाइत अछि–"केहन मोन छऽ ?"

माय, बाबू, रघू झा सभक मुँह देखि मोन पाड़बाक चेष्टा करैत हम पुछैत छिऐक–"हमरा की भेल अछि ?"

मुदा बजिते माथमे चनक बुझाइत अछि । हाथ उठा माथ टोबऽ चाहैत छी तँ हाथ भरिगर बुझाइत अछि । हाथ-पयर सभ ठाम पट्टी बान्हल । हमरा सभ टा मोन पड़ऽ लगैत अछि । हम माय दिस तकैत छी ।

माय कानऽ लगैत अछि–"भगवान नव जीवन देलथुन अछि । छत्तीस घण्टापर होश भेल छऽ ।"

छत्तीस घण्टा ? हम चौंकैत छी । ध्यान जाइत अछि जे अपन डेरामे नहि, अस्पतालमे छी । छत्तीस घण्टा ? ओ तँ प्राते जाय लेल अछि ! हम बड़बड़ा कऽ ऊठऽ चाहैत छी । सौंसे देह दर्दसँ छटपटा उठैत अछि । माय लपकिकऽ पकड़ि लैत अछि आ नीक जकाँ गेरुआपर सुता पुछैत अछि–"की लेबऽ ?"

हम कोनोना कष्टसँ आँखि खोलि पुछैत छिऐक–"चम्पा कहाँ छौ ?" माय बाबूक मुँह ताकऽ लगैत अछि । फेर हमरा दिस तकैत कहैत अछि–"ओ तऽ चल गेलौ काल्हिए । बड़ कनैत छलौ तोरा लेल । बारह घण्टा अस्पतालेमे छलौ । मुदा ओकरसभक टिकट कटाओल छलैक । ओकर मायो तोरा लेल बड़ कनैत छलौक ।"

हम फेर आँखि मूनि लैत छी । माथ फेर बरकैत अदहन जकाँ टभकऽ लगैत अछि । देहमे जेना सौंसे सीसाक कुन्नीसभ गड़ि गेल होअय । बड़ी काल धरि आँखि बन्द कयने ओहि दर्दसँ छटपटाइत रहैत छी । माय हाथसँ माथ सोहरबैत अछि– अनवरत । ओकर ममत्व-भरल स्पर्शसँ दर्द क्रमशः घटैत अछि आ सौंसे देह सहज भऽ स्थिर भऽ जाइत अछि । बन्द आँखिक आगाँ बहुत रास चित्र पसरैत अछि । लगैत अछि, जेना चम्पा गेलि नहि अछि, हमर संग कंसार दिस दौड़लि जा रहलि अछि, हमर हाथ पकड़ने । हमरा संग चोरबा-नुक्की खेला रहलि अछि, हमरा संग छतपर ईंटक घर बना ओकरा माटिसँ लेबि रहलि अछि । हमहूँ लेबऽ चाहैत छी मुदा सभ टा थोपल-थापल भऽ जाइत अछि । ओ नीक जकाँ हाथ फेरि सभकेँ मिलबैत कहैत अछि- "तोँ किएक हाथ लगबैत छेँ ? छोड़ि दे । हम तोहर घर चिक्कन-चुनमुन बना देबौक ।"

अस्पतालसँ घुरलापर छत सुन्न लगैत अछि । कंसारक दड़रल बूटक भुजा

आ पकाओल अल्हुआ कुस्वाद लागऽ लगैत अछि । बाबू एक दिन मायकेँ कहैत छथिन–"चलू, दोसर मोहल्ला चली । ऐ मकानक सीढ़ी बड़ कम चाकर छैक । हरदम कोँढ़ धड़कैत रहैत अछि ।"

माय कहैत छनि–"अलच्छो बड़ अछि । जल्दीसँ ताकू कोनो दोसर । आब ऐमे कनेको मोन नहि लगैत अछि ।"

मकान बदलि जाइत अछि । संगियो बदलि जाइत अछि । मुदा मोन ओहिना उदास-उदास । नव संगीमे मोन नहि रमैत अछि । चुपचाप अपन नवका मकानक छतपर ठाढ़ नीलकण्ठ मन्दिरक त्रिशूल देखैत रहैत छी, लोकक भीड़ देखैत छी, कीर्त्तन सुनैत छी । तखने कानमे क्यो बाजि उठैत अछि– चल, दुनू गोटे 'बाबा'क दर्शन कऽ आबी ।"

माने विश्वनाथक मन्दिर । हम कहैत छिऐक–"ओतऽ बड़ भीड़ रहैत छैक । कतहु हेड़ा जयबेँ तँ...?"

ओ विश्वासपूर्वक बजैत अछि— "नीक जकाँ हमर हाथ पकड़ि लिहेँ, हेड़ायब कोना ?"

मुदा ओ हेड़ा गेलि छलि– हम हाथ पकड़ि बचा नहि सकल छलिऐक । नहि जानि कतऽ होयति ? 'बाबा'क मन्दिरमे जा नीलकण्ठक त्रिशूल देखि कतेको बेर पुछलियनि, मुदा क्यो जवाब नहि दऽ सकलाह । बाबाक मन्दिरो जायब छूटि गेल । खाली बेर-बेर पुरना मकानक चक्कर काटि अबैत छी– कहीं चम्पा घूरि आयलि हो !

एक दिन साँझ भऽ गेल रहैक । गलीसभमे बत्ती जरि रहल छलैक, मुदा छतपर झलफल अन्हार छलैक । हम ओही अन्हारमे बैसल रही कि बाबू ऊपर आबि बजलाह–"एतऽ की भऽ रहल छैक ?"

हम कने डेराइत जकाँ कहलियनि–"कहाँ किछु, किच्छो नहि ।"

–"तँ नीचाँ चलह कोठलीमे । एतेक पैघ भऽ गेलाह, मुदा स्कूलो नहि जाइत छह । डेरोपर नीक जकाँ पढ़ैत नहि छह आइ-काल्हि । काल्हिसँ स्कूल जाह आ साँझकेँ किताब लऽकऽ बैसह हमरा लग ।"

हम स्कूल जाय लगैत छी, साँझकेँ किताब लऽ बैसैत छी बाबू लग । मुदा मोन कथूमे नहि लगैत अछि । पाठ सभ दिन बिसरि जाइत अछि । बाबू बिगड़ैत नहि

छथि, मुदा हुनका दु:ख होइत छनि आ आर मोनसँ पढ़बाक इनाम भेटैत अछि बाबू दिससँ– सभ दिन एक टाका । टाका जमा भेल जाइत अछि– दस...पचीस...एक सय...डेढ़ सय... । हम पूर्ववत् हँसऽ-खेलाय लगैत छी, माय-बाबूजी निश्चिन्त भऽ जाइत छथि ।

मुदा ओहि राति फेर हुनक चिन्ता बढ़ि जाइत छनि । राति भरि दुनू गोटे जगले रहैत छथि । ओ 'धमाका' बेर-बेर होइत छैक । सौंसे मकान हिलि जाइत छैक । पहिने लगैत छनि, जेना डाकूसभ मकानक दरबज्जा तोड़ि रहल होइक वा कोनो बौआइत साँढ़ दरबज्जामे ढाही मारि रहल होअय । रग्घू झा बेर-बेर ठेललापर ऊपर छतपरसँ नीलकण्ठ मन्दिरक पंडाकेँ सोर पाड़ैत छथिन– पुलकित...पुलकित...! डेरायल आवाज ततेक घिघिआयल छनि जे प्रायहे मन्दिर धरि पहुँचल होयतनि । कोनो उत्तर नहि अबैत छनि । मुदा ओ 'धमाका' बन्द भऽ जाइत छैक । किछु काल अँटकर लगौलाक बाद जहिना आँखि लागऽ लगैत छनि कि फेर वैह धमाका । राति भरि जगले बीति जाइत छनि ।

मकानक सभ किरायेदार सभ राति ओ धमाका सुनबाक अभ्यस्त भऽ जाइत अछि । अँटकर बहुत लगैत अछि– जेना क्यो नोट छपैत अछि, क्यो बम बनबैत अछि, कोनो चोर-डाकू अछि, मुदा कोनो तथ्य नहि भेटैत छैक ककरो । आ सभ दिन धमाका आब सूतलमे लोकके चौंकबैत नहि छैक, सभ अभ्यस्त भऽ जाइत अछि जेना !

अभ्यस्त आरो बातक भऽ जाइत अछि लोक । जेना बानरक उपद्रव । एक दिन खुट्टीपरसँ बाबूक सभ टा धोती-कमीज उठा छतपर बैसि जाइत छनि । लाख नेहोरा-विनती कयलोपर नहि छोड़ैत छनि । एहि छतसँ ओहि छत । अन्तमे केरा-गुड़ आदि देलापर कपड़ा छोड़ैत छनि तँ सभ टा तीरी-तीरी भेल । काजोपर जाय लेल कपड़ा नहि । कोनोना नव धोती आ रेडीमेड कमीज पहिरि काजपर जायबा लेल तैयार होइत छथि तँ रग्घू झा भनसीया तमाशा करैत छथि । खयनाइ परसि आगूमे दैत कहैत छथिन–"की कहू मालिक ! आइ दालि जे बढ़ियाँ मिलल अछि । छौंको तेहने देलिऐक अछि । देखियौक तँ केहन स्वाद भेलैक अछि !" बाबू बाटीक दालि भातपर ढारैत छथि तँ छुच्छ पानि, घी देल, छौंकल ! पुछैत छथिन–"एहिमे दालि कहाँ अछि औ ?"

–"सैह तँ कहलहुँ जे आइ तेहन मिलल अछि जे स्वादि-स्वादि खायब !"

माय झट दौड़िकऽ भनसाघर जाइत अछि आ चूल्हिक पाछाँसँ सुपतीमे राखल दालि उठौने घुरैत अछि–"दालि भेटत कतऽसँ ? दालि तँ ओहिना पड़ल अछि । खाली पानिकेँ छौंकिकऽ मिलल दालिक वर्णन कऽ रहल छथि ।"

बाबू छुच्छ भात-तरकारी खा काजपर चल जाइत छथि । रग्घू झाकेँ किछु कहब व्यर्थ । सभ हुनक एहि प्रकारक बुधियारीक अभ्यस्त भऽ गेल अछि । तीन टा थारी । माय-बाबू आ हमसभ खा लैत छी, तँ चुमकीसँ अपन खयनाइ लोहियेमे परसि बैसि जाइत छथि । क्यो टोकैत छनि तँ चोट्टे कहि बैसैत छथिन–"आहि ! थारी माँजऽ धरि के बैसल रहत ? लोहिये कोन खराब अछि ? एक्के बेर सभ टा बर्त्तन माँजि लेब ।' टोकबो लोक छोड़ि दैत छनि । मुदा ओहि दिन हम कानऽ लगैत छी । बाबू हमरा रग्घू झाक संग विदा कऽ दैत छथि– "जा, केश छँटा आबह ! कानपर लटकल जाइत छह ।"

रग्घू झा हमरा सैलूनमे बैसा कैंचीसँ सभ टा केश कटबाक आज्ञा दऽ दैत छथिन । हम विरोध करैत छियनि । ओ हमरा डाँटि दैत छथि– "अहाँ चुप्प रहू ! मालिकक आडर अछि ।" हम चुप्प भऽ जाइत छी । सभ टा केश कटा जाइत अछि । अपन दकचल माथ देखि कानऽ लगैत छी आ कनिते डेरा अबैत छी । बाबू रग्घू झाकेँ डँटैत छथिन तँ निर्विकार बजैत छथि–"अहीँ तँ कहने रही ।"

तहिना माय ओहि दिन कहने रहनि–"आब चलू गाम । एतऽ नीक नहि लगैत अछि । अशुभपर अशुभ । शंकर कोठासँ खसला, अहाँकेँ ओहन टायफायड आ ताहिपर ई अपशकुन ।"

बाबूक सभ टा बुझायब व्यर्थ जाइत छनि । मायक मोनमे डर पैसि जाइत छैक । ओ सभ दिन जिद करऽ लगैत छनि । ओ अपशकुन ओकरा नहि बिसरैत छैक । ओहि दिन काजपर जयबा काल कान्हपर कारकौआ बैसि गेल रहनि । भय बाबुओकेँ भेल रहनि, मुदा दबा गेल रहथि । माय मुदा नहि मानैत छनि । गाम जयबा लेल राजी कऽ लैत छनि । दिनक निर्णय भऽ जाइत अछि । गाममे काजो बाबूजी लेल ठीक भऽ जाइत छनि ।

ओहि दिन हमरा आशंका होइत अछि । गाम चल जायब तँ चम्पासँ भेँट कोना होयत ? ओ फेर घूरिकऽ एहि शहरमे आओति, हमरा ताकति तँ कोना भेटबैक ? हम दौड़ल-दौड़ल पुरना मकान लग जाइत छी । बड़ी काल एम्हर-ओम्हर चक्कर कटैत छी । फेर एक टा कोइला उठा मकानक प्रवेश-द्वारपर लिखि दैत छिऐक– "हमसभ गाम जा रहल छी... हमर पता... गाम-अलकपुर, पोस्ट-अलकपुर, जि.-दरभंगा— शंकर"

हम निश्चिन्त भऽ घूरि अबैत छी । आब चम्पाकेँ खबरि भऽ जयतैक । घूरिकऽ आओति तँ अबस्से हमरा चिट्ठी लिखति । पता लीखि देने छिऐक । प्रात

भेने फेर चिन्ता होइत अछि– कहीं ओहि मकानमे नहि आबय, तखन कोना खबरि होयतैक ? हम कोइलाक टुकड़ी उठा सौंसे शहर घूमि जाइत छी... मणिकर्णिका घाटक सीढ़ीपर, विश्वनाथ मन्दिरक गलीक देबालपर, दशाश्वमेध घाटक सीढ़ीपर सभ ठाम लिखि दैत छिऐक– हम गाम जा रहल छी... हम गाम जा रहल छी...हमर पता...

तखन निश्चिन्त भऽ जाइत छी । आब अबस्से चम्पाकेँ खबरि भऽ जयतैक । डेरा घूरि मायकेँ पुछैत छिऐक–"बनारससँ गाम चिट्ठी कय दिनमे पहुँचैत छैक ?"

–"दू-तीन दिनमे । तोँ ककरा लिखबही ?" माय पुछैत अछि ।

–"ककरो ने । ओहिना पुछलियैक अछि ।" मायकेँ हम टारि दैत छिऐक, मुदा मोने-मोन सोचैत छी जे चम्पा घुरति तँ दू दिनक भितरे खबरि कऽ देति । हमहूँ चिट्ठी लिखबैक ।

हम प्रसन्नतापूर्वक गाम जयबा लेल तैयार भऽ जाइत छी ।

कतेक ठाम गाड़ी बदललाक उपरान्त जखन हमरालोकनि यात्राक अन्तिम चरणमे पहुँचलहुँ आ जेना-जेना गाम लग अबैत गेल, सभक मोन उदास होइत चल गेल । किछु छूटि जयबाक उदासी । छौ-सात बरख कतहु एक ठाम बिता लेलापर ओ गामे-घर सन भऽ जाइत छैक । ओकर छुटबाक दुःख गामसँ परदेस जयबाक दुःखसँ कम नहि होइत छैक । कमसँ कम हमरा तँ ओ दुःख बड़ पैघ लागि रहल छल । माय-बाबूजीक मोनमे किछु छुटबाक संग-संग छूटल गाम-घर घुरबाक भितरिया उल्लास प्रायः रहल होइनि । मुदा हमरा तँ अपन गाम-घरक कोनो स्मरण नहि छल । बनारसे घर-आङन सन लगैत छल । ओ बहुत पाछू छूटि गेल छल आ जे लग आबि रहल छल तकर कोनो स्वरूप हमर मोनमे नहि छल । 'गाम' शब्द हमरा लेल अपरिचित छल । एहि अपरिचित-परिचित स्थानक यात्रामे कोनो उत्साह अनुभव नहि भऽ रहल छल ।

गामक स्टेशन प्रायः बड़ लग आबि गेल छलैक । सौंसे डिब्बामे अपने भाषा बजनिहार यात्रीसभ भरि गेल छलैक । धक्कमधुक्की मचल छलैक मुदा ताही बीच एकटा मधुर स्वरक गीत सूनि सभ संचमंच बैसि गेल । जे ठाढ़ छल सेहो शान्त भऽ ओकरे ताकऽ लागल । एक टा छौंड़ा, सतरह-अठारह बरखक, कन्हासँ झोरा लटकौने, हाथमे गीतक किताबसभ लेने गाबि रहल छल–'भोर भेलै हे पिया भिनसरबा भेलै हे !' ओकर स्वर बड़ मधुर छलैक, चेहरा एकदम कारी आ नाक-नक्श नीक । लोक दम सधने सुनैत रहल । गीत खतम भेलापर फरमाइश होबऽ लगलैक– क्यो गजल सुनऽ चाहैत छल, क्यो फिल्मी गीत । लागल जेना अधिकांश यात्री ओकरा पहिनेसँ चिन्हैत छलैक आ सभ अपन-अपन पसिन्दक फरमाइश कऽ रहल छलैक । दोसर स्टेशन जा धरि लगिचयलैक नहि, ओ सभक फरमाइश पूरा करैत रहल । स्टेशन लग अबैत देखि ओ झोरासँ किताबसभ निकालि बेचऽ लागल । एक आना दाम । बड़ लोक किनलकैक । हमहूँ बाबूजीकेँ कहलियनि–"एक टा हमरो कीनि दियऽ ।"

बाबूजी मना करैत छथि–"की करबह एहन-ओहन गीतक किताब ?"

माय हमर सिफारिश करैत अछि–"कीनि दियौ ने ! बच्चाक मोन छै, छोट भऽ जयतैक ।"

बाबूजी एक टा किताब कीनि दैत छथि । स्टेशन अबिते ओ छौंड़ा उतरिकऽ दोसर डिब्बा दिस चल जाइत अछि । हम ओहि गीतक किताबक पन्ना उनटबैत छी, मुदा सभ टा उटपटांग लगैत अछि । हमरा जे प्रभावित कयने छल से तँ ओहि किताबक गीत नहि छलैक, ओ तँ छलैक ओहि छौंड़ाक कण्ठ । किताबकेँ उनटा-पुनटाकऽ हम ओहिना सीटपर राखि दैत छिऐक । ईहो ध्यान नहि रहैत अछि गामक स्टेशनपर उतरैत काल जे ओ किताब गाड़ियेमे छूटि गेल ।

गामक स्टेशनपर अन्हार छलैक । साँझ भेलापर गाड़ी पहुँचल रहैक । स्टेशन अन्हार, बाट अन्हार, सौंसे गाम अन्हार । कतहु-कतहु डिबिया-लालटेमक भुकभुकी, जेना सौँसे गाम एक टा अन्हारक टीला होइक जकर कात-कातमे कतहु भगजोगनी चमकैत होइक । हमरा गाम नीक नहि लगैत अछि ।

मुदा प्रात भेने दिनक इजोतमे वैह गाम नीक लागऽ लगैत अछि । दरबज्जापर फुलबाड़ी— गुलाब, गेना, तीरा, ओढ़ूल आ करोटन । नारिकेर आ सुपारीक गाछ । बाड़ीमे लताम-शरीफा । सामनेमे पोखरि, पोखरिक भीड़पर चारू कात घर आ दछिनबरिया भीड़पर विशाल भालसरीक गाछ । हमरा सभ टा नीक

लागऽ लगैत अछि । भरि दिन गाममे बौआइत छी आ बौआइत-बौआइत धारक कात धरि चल जाइत छी । बागमतीक धार आ ऊपरमे मन्दिर । मन्दिरक कातमे बड़क झमटगर गाछ आ गाछपर डोल-बाती खेलाइत धीया-पूता, संगतुरिया । हमहूँ सभक संग बड़क डारि पकड़ि एम्हरसँ ओम्हर कूदऽ लगैत छी । पहिने डर होइत अछि, मुदा फेर निधोख खेलाय लगैत छी ।

मुदा रातिमे फेर डर होबऽ लगैत अछि । साँझेसँ घरसभ अन्हार । बाबी लग सूतल रही । घरमे डिबियो नहि । मिझा गेल छलैक । डरेँ बाबीक कोँढ़मे सटल रही आ बाबी नीक जकाँ अपन जर्जर शरीरसँ साटि लेने रहय । हमर शरीरक थरथरी आ स्पर्शसँ ओ बूझि जाइत अछि । पुछैत अछि–"डर होइत छौ ?"

–"हँ ।" हम आर नीक जकाँ ओकर देहकेँ जकड़ैत कहैत छिऐक–"चारमे किदन सरसराइत छैक ।"

–"होयतैक कोनो मूस, छुछुन्नरि । एकाध टा साँखड़ो छैक । एक बेर बिछौनेपर खसल रहय ।"

–"बिछौनपर साप ?" हम आर डेराइत पुछैत छिऐक ।

–"चारमे साँखड़ एकाध टा कहियो आबिए जाइत छैक । मुदा तोँ डेरो जुनि । खिस्सा सुनबेँ ?"

–"हँ, कह ने !" हम अपन ध्यान हँटयबाक चेष्टा करैत छी, मुदा बेर-बेर चारक सरसराहटि दिस ध्यान जाइत अछि ।

बाबी खिस्सा कहैत अछि–"ताइ दिनुका खिस्सा कहैत छियौक । तोरा तँ खिस्से लगतौक । किछुओ ने देखलेँ । की छलौ ई घर आ की भऽ गेलौ ! जतऽ ई झाँझनवला फुसही घर छौक, ततऽ तिनमहला छलैक । सौंसे झाड़-फानूस लागल। दरबज्जासभ तेहन पैघ जे हाथीपर चढ़ि हाथी घर पैसि जाय । मुख्य दरबाजापर सोनाक दू टा कलश राखल ।

–"सोनाक कलश ?" हम जिज्ञासा करैत छिऐक ।

–"हँ रे, सोनाक कलश । भनसीया, नोकर, खबासिनक ढेर, आइ ने सभ बिला गेल अछि ! ओहि दिन तँ राज छल । हमर आँखिक सोझाँक गप्प । ससुर राजा छलाह, इलाकामे डंका बजैत छलनि । मुदा छलथुन बड़ा कंजूस ।"

–"कंजूस ? से कोना ?" हमर जिज्ञासा बढ़ल जाइत अछि ।

–"सभ तरहेँ । घैलक घैल घी । सैकड़ो घैल मचान बान्हिकऽ राखल रहैत छलनि आ ककरो एक्को छिटकाक दर्शन नहि । बोराक बोरा मखान भड़ारमे फेकल रहैत छलनि आ सभ फुटहा फकैत छल । राहड़िक दालि सड़ैत रहैत छलनि आ खेसाड़ीक दालि खाइत-खाइत सभ तंग रहैत छल । मुदा बेरपर तेहन शाहखर्च बनि जाइत छलथुन जे जुनि पूछ । तोहर बाबाक उपनयनमे पचाढ़ीक महन्थ भड़ार देखऽ गेलथिन तँ दस बोरा मरीच राखल देखि फटकेपरसँ घूरि गेलथिन । हमर बियाहमे, गाममे सौंसे राउटी खसबा देलथुन । बाप दरिद्र छलाह । मुदा सभ टा वस्तु-जात आ कार्यकर्ता संग लेने गेलथुन । तेहन बियाह भेल जे एखनो इलाकामे लोक चर्चा करैत अछि । जेँ ओना नाग बनि सभपर बैसल रहैत छलाह तेँ ने धन छलनि, इलाकामे धाख छलनि, जमींदारीक तरक्की छलनि । मुदा तोहर बाबा तेहन ने बहरयलथुन जे सभ टा साफ । शाहखर्ची ! नीक खयनाइ, नीक रहन-सहन, साहेबी ढंगक धीयापूताक पढ़ाइ-लिखाइ, कर-कुटुम्बक भरण-पोषण । औंठा बोरैत चल गेलाह । बाँट-बखरा भेलनि तँ अथाह समुद्रमे पड़ि गेलाह । अपने तँ खेपि गेलाह, मुदा तोहर बाप-पित्तीकेँ अथाहमे छोड़ि गेलथिन ।.... सूति तँ नहि रहलेँ !'

–"नै गय, कह ने ! तखन की भेलै ?"

–"तखन अयलै भूकम्प । सभ टा ढाहैत चल गेलैक । कोठा-बङ्गला सभ पस्त । तोहर काकी आ पितियौत भाइयोकेँ संग लेने गेलैक– ऐ अभागलिकेँ ओहो दिन देखबाक छलैक । ओही भूकम्पक बाद ई फूसक घर बनलौ, डरक लेल । खाली फूसक आ टीनक घर । टीन गर्मीमे जरऽ लगैत छैक आ फूसक चारमे साँखड़ सरसराइत छैक । तेँ कहलियौक अछि ताहि दिनुका खिस्सा । तोरा तँ सभ टा खिस्से लागल होयतौक । कतहु सिक्कड़ो ने जोगाकऽ राखल छौक जे देखबितियौक जे तीन-तीन टा हाथी झुमैत छलौक दरबज्जापर आ बाप बग्घीमे बैसिकऽ स्कूल जाइत छलथुन ।"

बाबी ताइ दिनुका खिस्सा कहैत जाइत अछि । हमरा मोनमे अन्हार आ चारमे सरसराइत कोनो वस्तुक भय बिला जाइत अछि । हमहूँ ताइ दिनुका गप्पमे हेरा जाइत छी । आ ओही बीच कखनो आँखि लागि जाइत अछि ।

स्कूलमे पहिले दिन अकचका जाइत छी । नाम लिखा जहिना क्लासमे पयर

दैत छी, गाड़ीमे किताब बेचऽवला ओहि छौंड़ाकेँ एक टा बेंचपर बैसल देखैत छिऐक । प्राय: ओहो चिन्हैत अछि हमरा । हाथसँ लग अयबाक इशारा करैत अछि । हम ओकर बेंच लग जा ठाढ़ भऽ जाइत छिऐक । ओ टोकैत अछि–"बैस ने !" हम ओही बेंचपर बैसि जाइत छी आ डेस्कपर झोरा रखैत पुछैत छिऐक–"मुदा तोँ तँ ओइ दिन गाड़ीमे किताब बेचि रहल छलेँ ?"

ओकर मुँह तमतमा जाइत छैक–"तँ की भेलै ? हम नहि पढ़ि सकै छी ?"

–"पढ़ि किएक ने सकै छेँ ?" हम बात सम्हारैत पुछैत छिऐक— "हम तँ ओहिना पुछने छलियौक । की नाम छौ तोहर ?"

–"रत्नेश्वर झा । मुदा सभ हमरा रतना कहैत अछि ।"

–"तँ हमहूँ रतना कहबौ । हमर नाम शंकर अछि ।"

–'तँ दोस्ती पक्का । ला, हाथ बढ़ा ।" ओ हाथ बढ़बैत अछि ।

हम हाथ बढ़बैत कहैत छिऐक–"पक्का । मुदा एक टा शर्तपर ।"

–"केहन शर्त्त ?"

–सभ दिन टिफिन आ छुट्टीमे गीत सुनाबऽ पड़तौक । मंजूर छौक ?"

–"मंजूर ।" ओ हँसैत अछि ।

–तँ ला हाथ ।" हम ओकर हाथ पकड़ि लैत छिऐक ।

यद्यपि ओकर अवस्था क्लासक सभ छौंड़ासँ बेसी छलैक, हमरोसँ पाँच-सात बरख पैघे छल, मुदा गीत सुनबाक लोभमे झट दोस्ती कऽ लेबामे हमरा कोनो तारतम्य नहि भेल । शुरूमे सम्बोधन किछु कृत्रिम बुझाइत छल, अवस्थाक फर्कक कारण। मुदा फेर सभ टा सहज भऽ गेल । क्लास छोड़ि-छोड़िकऽ हमरा लोकनिक जमघट होबऽ लागल– कौखन आमक छाहरिमे, कौखन-कौखन इनारपर, डिस्ट्रिक्ट बोर्डक सड़कक कातमे । गीत, गजल, कौवाली, कीर्तन सभ-किछु रतनाक कण्ठसँ नीक लगैत छल आ ओ मस्त भऽकऽ झूमि-झूमि गबैत छल । कौखन दुइये गोटे, कौखन आरो श्रोता। एहिना एक दिन दुनू गोटे एकसरे रही, गीत बहुत भेलैक तँ एक टा प्रश्न फेर ओहि दिन उठल मोनमे आ पूछि बैसलिऐक–"तोँ गीतक किताब किएक बेचैत छलेँ ?"

–"जाय दहीक । की करबेँ पूछिकऽ ?" रतना टारऽ चाहैत अछि।

–"नै, आइ नहि मानबौ । सभ दिन टारि दैत छेँ, आइ कहऽ पड़तौक।" हम जिद्द करैत छिऐक ।

–"नहि मानै छेँ, तँ सूनि ले । मुदा सुनिकऽ हमरासँ घृणा नहि करिहेँ । हम नीक लोक नहि छी, भैयो कोना सकैत छलहुँ ? हमर बापो तँ नीक लोक नहि अछि । ओ ताड़ी आ गाजाक निशामे बुत्त रहैत छल । घरमे जकरा-तकरा उठा लबैत छल । माय मना करैत छलैक तँ कूटिकऽ थौआ कऽ दैत छलैक । ताड़ी-गाजाक निसाँमे ओकरा ईहो ध्यान नहि रहैत छलैक जे घरमे धीयापूता सूति रहल वा जगले अछि । आर भाइ-बहीन तँ छोट-छोट छल, मुदा हमरा निन्न नहि होइत छल । दिन भरि देहमे किदन-कहाँदन होइत छल । आखिर एक दिन तंग भऽ एकसर दुपहरियामे हमहूँ अपन हरबाहक बेटीकेँ पकड़ि लेने छलिऐक । तखने हमर कसाइ बाप नहि जानि कहाँसँ आबि गेल । माल-जाल जकाँ डेङा देलक, राति भरि खुट्टासँ बान्हिकऽ रखलक । अन्न-पानि नहि देलक । माय नेहोरा-विनती कयलकैक तँ भोरे खोलि देलक । हाथ-पयर खुजिते हम जे पड़यलहुँ से घूरिकऽ नहि अयलियनि ।"

–"भागिकऽ तोँ कतऽ चल गेलेँ ?" हमर उत्सुकता बढ़ले जाइत छल ।

–"ओ बड़ कष्टक दिन छल । भूखल-पियासल, एम्हर-ओम्हर बौआइत रहलहुँ । फेर एक टा जंक्शनपर पहुँचि गेलहुँ । ओतहि अपने वयसक छौंड़ासभकेँ लेमनचूस-टाफी बेचैत आ पालिस करैत देखलिऐक । पालिसवला धंधा हमरा पसिन्न नहि पड़ल । लेमनचूसवला छौंड़ासभसँ दोस्ती कयलहुँ आ गाड़ीमे घूमि-घूमिकऽ लेमनचूस बेचऽ लगहुँ– सिमरियासँ नरकटियागंज धरि ।"

–"फेर तोँ किताब कोना बेचऽ लगलेँ ?"

–"गाड़ियेमे बल्लू मिसरसँ भेँट भऽ गेल । ओ गीत बनाकऽ ओकरा छापिकऽ गाड़ीमे बेचैत छल । मुदा ओकर गला फाटल बाँस सन छलैक । क्यो डिब्बामे घुसऽ नहि दैत छलैक ओकरा । हमर गीत सुनलक तँ पाछू लागि गेल । हमरो काज पसिन्द पड़ल । गीत गायब आ अढ़ाइ रुपैया रोज होटलक खयनाइ, कैंची सिकरेट, मदनानन्दमोदक आ सिनेमा । खूब मजा कयलौं !"

रतना बजैत-बजैत बीतल दिनक स्मृतिसँ आनन्दित भऽ उठल ।

–"तँ फेर छोड़ि किएक देलेँ ओ काज ?" हम फेर प्रश्न कयलिऐक ।

–"तोँ नहि बुझबहीक भाइ ! ओइ धंधामे बड़ लफङा छैक । सार पुलिसवला आ टी.टी. सभ बड़ तंग करैत छैक । बिन-टिकटक बहाना कऽ पकड़ि लैत छैक आ दुर्गति कऽ दैत छैक । नहि बुझलहिक ? कोना बुझबहीक ? कहियो राति बितलापर कोनो घरसँ भागल जुआन छौंड़ी वा कमसिन छौंड़ाकेँ स्टेशनपर उतरैत देखहिक तखन ने बुझहीक जे कोना ओकर सभक लेर टपकऽ लगैत छैक !"

हमरा किछु बुझबामे नहि आयल । बकर-बकर ओकर मुँह तकैत रहलिऐक । ओ हमर भाव बूझि बाजल–"असल बात ई छलैक जे हमरा पढ़बाक छल । घरसँ भागऽसँ पहिने अपर पास कऽ गेल रही । ऐ बीच हमर बाप कैक बेर मनबऽ गेल, मुदा हम घुरा देलिऐक । फेर सोचलौं– मैट्रिक कमसँ कम जरूर पास करबाक चाही । बस, फैसला कऽ लेलहुँ आ घूरि अयलहुँ ।"

हम जेना किछु सोचैत कहलिऐक–"मुदा एक टा बात हमरा बूझऽमे नहि आयल । तोँ अपन हरवाहक बेटीकेँ पकड़ि लेलहिक, तै लेल तोहर बाप किएक एतेक मारलकौ जे तोरा घर छोड़ि भागऽ पड़लौक ?"

रतना ठठाकऽ हँसऽ लागल । बड़ी काल धरि हँसैत रहल । ततेक हँसल जे हमर मोन तमसा गेल । हमरा तमसाइत देखि ओ बाजल–"बिगड़ जुनि । तोँ नहि बुझबहीक ओ बात एखन । बच्चा छेँ । तोँ बारह वर्षक छेँ आ हमर अठारहम अछि । सभ टा बूझि जेबहिक जखन अठारहममे पहुँचबेँ ।"

हमर तामस तैयो कम नहि भेल । एहन कोन बात छैक जाहि लेल हमरा छौ वर्ष ठहरऽ पड़त ? अबस्से किछु नुका रहल अछि । मुदा रतना हमरा परी-कथाक नायक जकाँ रहस्यमय आ आकर्षक लागऽ लागल । ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व अद्भुत छलैक– एकदम आबनूसी रंग, आँखि, नाक सभ टा निखरल, हाथमे कड़ा, गरामे हनुमानी चकती आ पायजामापर पैच-पैच छापवला बुशशर्ट । अपन मोछ ओ खूब नोकगर करा लेने छल जकरा ओ 'रंजन-कट' कहैत छलैक आ बेर-बेर माथपर लटकि आयल केशकेँ खूब अन्दाजसँ ऊपर झटकि लैत छल । चलैत काल दुनू पंजापर जोर दैत, सभ डेग झूमि-झूमिकऽ चलैत छल आ बेर-बेर अपन भँगिमापर अपने मुसकिया उठैत छल । रतना हमरा लेल ईर्ष्याक वस्तु भऽ गेल । ओकर अठारहक बयस ईर्ष्याक वस्तु भऽ गेल । हम एकदम अधीरतापूर्वक अठारहम वयसक प्रतीक्षा करऽ लगलहुँ ।

चाहलासँ छौ वर्ष छौ पलमे नहि बीति सकल । मुदा समय बितैत रहल । ओ तँ बितबे करैत अछि, ओकरा रोकब, जमा करब वा बढ़ाकऽ, ठेलिकऽ जबर्दस्ती आगू लऽ जायब कखनो संभव नहि होइत छैक । कौखन लागि जाइत छैक जे समय

घसकियो ने रहल अछि आ कौखन समय भागल जाइत सन लगैत छैक । मुदा ओकर गति तँ सभ दिन एक्के रंग रहैत छैक ।

मुदा ई सभ बात हम कहाँ बुझैत छलिऐक ओहि दिन ? बहुत रास बात नहि बुझैत छलिऐक । खाली एतबे बुझैत छलिऐक जे बेसीसँ बेसी समय रतनाक संग बिताबी, ओकर गप्प सुनी, ओकर गीत आ गजल सुनी ।

एक दिन रतना पुछलक–"हमर गाम चलबेँ ?"

रतनाक गाम धारक ओहि पार छलैक । धारक पार दूर धरि कोनो घर नहि छलैक, खाली बँसबिट्टी आ गाछी । ओहि गाछीसभक बाद सघन बस्ती छलैक । मुदा से हम नहि देखने छलिऐक । ओम्हरुका लोकसँ खान-पान वा आवागमन नहि छलैक हमरसभक परिवारमे । हम किछु द्विविधामे पड़ि गेलहुँ । बाबूजी सुनताह तँ की कहताह ?

रतना हमर द्विविधा देखि बाजल–"जायमे की हर्जा छैक ? खैहेँ नहि ।"

हम अतिरिक्त उत्साह देखबैत कहलिऐक–"चलबो करबौक आ खयबो करबौक । नहि खुअयबेँ तँ नहि जयबौ ।"

रतनाक घर गामक एकदम दोसर छोरपर छलैक । गाममे बेसी घर फूसेक छलैक, एकाध टा खपरैल आ कच्चा ईंटाक घर आ गामक बीचमे एक टा पक्का ईंटाक कोठा । सभ दरबज्जापर बैसल लोकसभ हमरा जाइत देखि चिन्हबाक चेष्टामे गरदनि नमराबऽ लागल । किछु गप्पो-सप्प हमरे प्रसंग जे हम नहि सुनि सकलिऐक । मात्र एतबे लागल जे हमर आयब एक टा महत्त्वपूर्ण घटना छल ।

रतनाक घर फूसेक छलैक– तीनू कात घर आ एक कात टाटसँ घेरल । दरबज्जा नहि । हमरा अङने लऽ गेल । ओकर मायक पयर छुअलियनि तँ गदगद होइत बजलीह– "सुदामाक घर कृष्ण अयलाह अछि । धन्य भाग ! कहाँ सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग..."

ओ ततेक आदर-सत्कार कयलनि जे हमरा लाज होबऽ लागल । खूब ठूसि-ठूसिकऽ चूड़ा-दही खयलहुँ आ रतनाक संग एक-दू अङना आर घूमि अयलहुँ । एक टा प्रौढ़ा हमर बड़ सत्कार कयलनि आ अपन ज्ञानक प्रदर्शन करैत बजलीह–"हमरालोकनि तँ अहाँक माय-काकी जकाँ पढ़लि-लिखलि नहि छी । मुदा अनपढ़ नहि छी । हनुमान-चालीसा, किस्सा तोता-मैना, सचित्र कोकशास्त्र सभ पढ़ि चुकल छी ।"

हम हुनकर ज्ञानक समक्ष नतमस्तक भऽ गेलहुँ । कतेको बरख बाद जखन हुनक सूचीमे सम्मिलित पुस्तकसँ हमर परिचय भेल तँ भभाकऽ हँसी लागि गेल । आइ सोचैत छी जे आब यदि कहियो हुनकासँ भेँट होयत आ ओ अपन ज्ञान-भण्डारक सूची बाँचऽ लगतीह तँ हमर आकृतिपर पहिल बेर सन निर्दोष भाव नहि रहि सकत ।

रतनाक घरसँ घुरैत काल साँझ भऽ गेल— एकदम झलफल । जल्दी-जल्दी डेग झटकारने घूरल अबैत रही कि बाटमे एक ठाम रतना हाथ घीचि ठाढ़ कऽ देलक । एक टा पुरुष अपनासँ एक हाथ पैघ लाठी लेने जा रहल छल–"देखि ले ! यैह हमर बाप अछि । सोझे चिलम फूकिकऽ आबि रहल अछि । आँखि देखैत छहीक !"

हम एकदम सिटपिटा गेलहुँ । अन्हारोमे दू टा आँखि चिनगी जकाँ चमकि रहल छलैक । आर जल्दी-जल्दी डेग बढ़ौलहुँ ।

धारसँ चैलमे पानि लेने एक टा पनिभरनी छौंड़ी जा रहलि छलैक । रतनाकेँ देखि ठिठिआय लगलैक । हमरा क्रोध भेल– "अनेरो ठिठियाइत अछि !"

रतना हँसैत बाजल–"अनेरो नहि, छैक एक टा बात । मुदा आइ नहि । आइ क्यो नहि । आइ लाल भौजी बजौने अछि । मौगीक देहसँ उठैत सुगन्ध चिन्हैत छहीक ? नहि ? तोँ एकदम बुद्धू छेँ ।

हमरा बड़ जोर तामस होइत अछि । कने जोरसँ पुछैत छिऐक–"की बजलेँ ?"

रतना ओहिना हँसैत बाजल–"खिसियो जुनि । हमर मतलब अछि जे तोँ खाली पढ़ाकूजी छेँ । खाली क्लासमे फस्ट अयलासँ की होयतौक ? ई सभ नहि बुझबहीक एखन, बच्चा छेँ ।"

ओकर बच्चा कहब हमरा अपमानजनक लागल । तेरहम बीति रहल छल, मोछक पम्ही देने जा रहल छल, हाथ-पयर मजगूत छल, क्यो बच्चा कहय से पसिन्न नहि छल । हम धार पार कऽ अपन घर चल अयलहुँ । मुदा रतनाक हँसी हमर देहपर छहलैत रहल । मोनमे एक टा हीनभाव जन्म लैत रहल जेना हम किछु नहि होइ, किछु बुझिते नहि होइ ।

नीक जकाँ अन्हार भऽ गेल छैक । गामक बथानसभसँ धुआँ उठि-उठि एखनो आकाश दिस छिड़िआयल जा रहल छैक । दरबज्जा सभपर राखल लालटेन

आ कौखन सम्मिलित अट्टहास वा घोंघाउज । मुदा हमर ध्यान ओहि सभपर नहि छल । आइ रतनाक हँसी हमर मोनमे ओ सभ जनबाक उत्सुकताकेँ बढ़ा गेल छल, जकरा बारहम वयसमे नहि बूझल जा सकैत छलैक । हम बाहर दलानमे बैसल एक टा अज्ञात अनुभवक असफल कल्पना करैत रहलहुँ ।

–"बैसल की करै छैँ ?" कोम्हरोसँ आबि नीरा टोकलक ।

नीरा हमरे संगतुरिआ अछि । बयसमे एक-डेढ़ बरख जेठे । गामक सम्बन्धे बहीन । ओना तँ बड़ खटखटाहि, मुदा हमरासँ खूब पटैत छलैक ।

–"किछु नै ।" हम जवाब दैत छिऐक ।

–चल चोरा-नुक्की खेलाय । प्रमोद आ गीताकेँ सेहो बजा लैत छिऐक ।"

–"चल ।"

हम तैयार भऽ जाइत छिऐक । प्रमोद हमरासँ बेस पैघ अछि, नीरोसँ दू वर्ष पैघ, मुदा खेलमे अधिक काल सन्हिया जाइत अछि । गीता हमरे बतारी अछि ।

अन्हार घरमे नुकाइत काल, सन्नूक वा केबाड़ीक दोगमे पकड़ैत काल कतेको बेर नीरा वा गीता देहसँ लपटि जाइत अछि; मुदा प्रमोद जखन ककरोसँ लपटैत अछि, बेसी काल लपटल रहि जाइत अछि, अन्हारमे नीराक संग किछु फुसफुसाइत अछि । हम देखियोकऽ बेसी ध्यान नहि दैत छिऐक । मुदा कनेके काल बाद नीराक कक्का लालटेम लेने ओम्हरसँ गरजैत अबैत छैक–"के सभ अछि ? के सभ एना अन्हारमे हुड़दंग मचौने अछि ?"

–"हम छी शंकर ।" हम निधोख सामने ठाढ़ भऽ जाइत छी ।

–"आर के छौक ?" कक्का फेर पुछैत छथि ।

–"प्रमोद अछि । अरे ! कतऽ निपत्ता भऽ गेल ?"

लालटेमक इजोतमे लगैत अछि, जेना नीराक कक्काक आँखि धधकि उठलनि । ओ नीराक डेन पकड़ि घिचने दोसर दिस लऽ गेलथिन– "चल, आइ तोहर सभ टा गर्मी झाड़ि दैत छियौक ।"

हमरा एहि काण्डक कोनो अर्थ नहि लगैत अछि । चोरबा-नुक्की तँ सभ दिन खेलाइत छी, आइ की भेलैक ? गीतो डेरायलि सन एक दिस सटकि गेलि । हम गुनधुन करैत अपन आङन चल अयलहुँ । माय देखलक तँ पूछि बैसलि–"नीराक संग खेलाइत छलेँ ?"

—"हँ ।" हम संक्षिप्त उत्तर दैत छिऐक ।

—"ओकरा संग जुनि खेलो ।" मायक ई आदेश अप्रत्याशित छल ।

—"किएक ने खेलाउ ? वैह तँ पक्का दोस्त अछि हमर ।" हम जिद्द करैत छिऐक ।

—"नै, छौंड़ी संग दोस्ती नहि होइ छै । ओकर तँ बिआह भेल छैक । वर आयल छैक । लोक दस तरहक बात गढ़तौक ।"

—"लोक किएक गढ़त गप्प ? हम तँ अबस्से खेलायब ।"

"नहि, तोँ नहि खेलयबेँ ।" मायक स्वर कठोर भऽ जाइत छैक ।

—"ओ नीक छौंड़ी नहि छैक । काल्हिए ओकर वर एक टा चिट्ठी पकड़लकैक, तामसे आगि भेल छैक, तोहर नाम लपेटतौक ।"

—"हमर नाम कथीमे लपेटत ? चिट्ठी पकड़लकै तँ की भेलैक ? सातममे पढ़ैत छैक आ चिट्ठी लिखऽ नहि औतैक नीराकेँ ?"

माय हँसऽ लागलि–"तोँ नहि बुझै छहीक । बात मान, ओकरा संग नहि खेलो । किएक, से एखन नहि बुझबहीक, बच्चा छेँ ।"

हमरा मायक हँसी नीक नहि लागल । रतनो एहिना हँसैत छल । एहन कोन बात छैक ? हम किएक नहि बूझि सकै छिऐक ? ओहि दिन बड़ी राति धरि निन्न नहि भेल । बिछाओनपर जागल, रातिक अन्हार आ निस्तब्धतामे हम बेर-बेर एतबे सोचैत रहलहुँ– ओ कोन बात छैक ?

पढ़ुआ कक्का आ बंगट कक्कामे अधिक काल गरमा-गरम बहस भऽ जाइत छनि । बंगट कक्का छथि व्यावहारिक लोक, सिद्धान्त आदि लेल जान देबऽवला नहि । हरदम कहैत छथिन–"हम तँ नओक बदलामे छओ खर्च करैत छी । गामक हाट छोड़ि शहरक बजार नहि जाइत छी ।" पानक एक पातक चारि टुकड़ा कऽ चारि खिल्ली बनबैत छथि आ चारि आदमीक परिवारमे तीन पाव कम्मे

चाउरसँ सँझुका बेरहटक इंतिजाम सेहो करैत छथि । पढ़ुआ कक्काकेँ देखिते कहऽ लगैत छथिन–"राज तँ छल अंगरेजक ! कोनो वस्तुक कमी नहि । एहि देशी राजमे तँ बज्जर पड़ि गेलैक सभ वस्तुपर । एहन स्वराज्य लऽकऽ कि चाटब ?"

पढ़ुआ कक्का उत्तेजित भऽ जाइत छथि–"अहाँ स्वराज्यक अर्थ नहि बुझैत छिऐक । कतेक बलिदान आ तपस्यासँ ई उपलब्ध भेल अछि । स्वतन्त्रताक पाँच बरखक बादो एहन गप्प कयनिहार देशमे महजूद छथि, से देखि आश्चर्य होइत अछि ।"

—"आश्चर्य तँ हमरा होइ अछि स्वतन्त्रताक गीत गौनिहार लोकनिपर । एकरे नाम स्वतन्त्रता छैक तँ हम गुलामे नीक । चारि पाइ सस्त भेटत वस्तुसभ..." बंगट कक्का अपने सुरमे छथि ।

पढ़ुआ कक्का एकदम छड़पि उठैत छथि–"अहाँ सन व्यक्तिकेँ स्वतंत्र देशमे रहबाक अधिकार नहि अछि । खाली चारि पाइ बचति लेल प्राण देने छी । औ प्रचण्ड, आजादी रक्त-तर्पणसँ भेटैत छैक आ ओही बलेँ टिकैत छैक ।"

—"से तँ बुझलहुँ बाबू ! मुदा लोक कथीपर टिकत ? खाली आजाद हवामे साँस लेलासँ पेट भरि जयतैक ? ई कङरेसिया सभ चीजकेँ डुबा देलक । आचार-विचार, संस्कृति सभकेँ डुबा देलक आ आब कहैत अछि जे खालीपेट खुशी रहू ।"

पढ़ुआ कक्का कट्टर कांग्रेसी छथि, एकदम छड़पि उठैत छथि–"मुँह सम्हारिकऽ बाजू । अहाँ की जानऽ गेलिऐक जे कांग्रेस की कयलक अछि देशक लेल ? कहियो जहल गेल छी ?"

ई पढ़ुआ कक्काक ब्रह्मास्त्र छनि । बेयालीसक आन्दोलनमे जहल गेल रहथि । पत्नी रुग्ण रहथिन, मरि गेलथिन । पढ़ुआ कक्का जहलेमे छलाह । तहियासँ गाम-इलाकाक लोक हुनका पक्का कांग्रेसी नेता मानि लेने छनि । पढ़ुआ कक्काक नामोक इतिहास बड़ मनोरंजक छनि । बड़ इन्तिजामक संग पढ़बा लेल शहर गेल छलाह– नाम पड़ि गेल छलनि पढ़ुआ कक्का । मुदा मिडिल पास करबासँ पहिनहि घूरि आयल छलाह । गाममे बेकार बैसल छलाह । बेयालीसक आन्दोलनमे एक टा अंग्रेज दारोगाकेँ बान्हिकऽ रखने छलाह गाममे, जहल भेल छलनि आ नेता भऽ गेल छलाह ।

ई सभ बात हमरा बादमे सुनल छल । मुदा पढ़ुआ कक्का आ बंगट कक्काक झगड़ा बरोबरि सुनऽमे अबैत छल । देयादीमे छलाह, सटले घर छलनि ।

दुनूक बहसमे खूब मजा अबैत छल । यद्यपि आजादी आ स्वराज्यक अर्थ हमरा एतबे अबैत छल ओहि दिनमे जे पन्द्रह अगस्तकेँ स्कूलमे झण्डा फहराओल जाइत छैक आ गामोपर बाबूजी अपन मकानक ऊपरमे तिरंगा टाङि दैत छथिन ।

मुदा ओहि बेर एक टा आर अर्थ लागल । भोरे रतना पहुँचि गेल– "चल, बरौनीसँ भऽ अबैत छी ।"

–"किएक ?" हम अकचका गेलहुँ ।

–अरे, एतबो नहि बूझल छौक ? आइ पन्द्रह अगस्त छैक । आइ गाड़ी फ्री । जेम्हर मोन हो, घूमि आ । हम तँ सभ साल चारूकात बौआ अबैत छी । ऐ बेर तोहूँ चल । खूब मजा होइ छैक ।"

हमरा उत्सुकता भेल आ डरो । बाबूजी सुनताह तँ की कहताह ? तैयो ओकरा संग स्टेशन अयलहुँ । खाली मायसँ दस टाका माङि लेलिऐक बेर-कुबेर लेल । स्टेशनपर खूब भीड़ छलैक, जेना कोनो मेला होइ । हम टाका रतनाकेँ दैत कहलिऐक–"हमर टिकट लऽ आ, हम बिनटिकटे नहि जयबौक ।"

रतना नोट घुरबैत बाजल–"बताह भेल छैँ ? अजुका दिन टिकट ? हम तँ अनदिनो नहि कटबैत छी । मुदा आइ तँ सभकेँ फ्री पास छैक ।"

गाड़ी आबि गेलैक । भीड़सँ लदल । सैकड़ो आदमी छतपर बैसल, पौदानपर लटकल । बच्चा, जुआन, अधबयसू सभ तरहक लोक । हमरा साहस जबाब दऽ गेल । हम रतनाकेँ कहलिऐक–"तोँ जो, हम नहि जा सकबौ एहन भीड़मे ।"

रतना जिद कयलक । मुदा हम ओकरा एकसरे बिदा कऽ देलिऐक । ओ सभकेँ ठेलि-ठालि एक टा पौदानपर लटकि गेल । गाड़ी जखन खुजलैक, सम्मिलित स्वरसँ सभ चिकरल– स्वतंत्र भारत की– जय !

गाड़ी 'स्वतंत्र भारत' गांधी-नेहरूक नारा लगबैत चल गेल आ हम प्लेटफार्मपर एकसर रहि गेलहुँ । नौ बाजल छलैक, मुदा रौद खूब तिक्ख छलैक । गाम घूरऽसँ पहिने सोचलहुँ जे कनेक शेखपुरा बजारसँ होइत चली आ 'आजाद केबिन'क चाह पीबि ली । रतनाक संग दोस्ती भेलासँ आजाद केबिनक चाह आ शेखपुरा बजारक चक्कर लगयबाक लुतुक हमरो लागि गेल ।

ओहुना शेखपुरा बजार इलाकाक एकमात्र आकर्षण-केन्द्र छलैक । स्टेशनक लग, पहिले गुमतीसँ जे रस्ता पश्चिम दिस जाइत छैक आ एकटा चौबटियापर आबि

चारूकात चल जाइत छैक, ओहि सड़कक दुनू कात बजार छैक— गुमतीसँ चौबटिया धरि । चौबटियासँ एक रस्ता उत्तर दिस रेलवे पुल पार करैत ब्राह्मण सभक बस्ती दिस चल जाइत छैक आ दोसर रस्ता पश्चिम दिस मुसलमान सभक बस्तीमे । दछिनबरिया रस्ता खादी भण्डार होइत दरभंगा शहर दिस चल जाइत छैक । आ पुबरिया रस्ता गुमती धरि जाइत छैक । गुमतीसँ चौबटिया धरि दू-तरफी दोकान छैक– मंगनू मिसरक भाङक बरफीक दोकान, मिथिला डिसपेन्सरी, आजाद केबिन, अनीस टेलर मास्टर आ सरकारी फेयर प्राइस सोप एक कात, आ दोसर कात आँटाक चक्की, फैन्सी स्टोर्स, सेठ बनवारीक कपड़ाक दोकान, किरानाक दोकान, आ ठीक चौबटियापर पानबाली गुलबिया । कहियो गुलाब सन रहलि होयति, मुदा एखन काँट सन सुखायलि छलि, मुदा बारह बरखक बेटीकेँ एखनेसँ रङि-ढौरिकऽ दोकानपर बैसबैत छलि । कहैत छैक जे हरामीसभ बेसी सुन्नर होइत अछि से गुलबियाक बेटीकेँ देखिकऽ विश्वास होइ छलैक । 'हरामी'क माने ओहि दिनमे हम नहि बुझैत छलिऐक । तखनो ने किछु बुझने छलिऐक जखन रतनाक संग पहिल बेर शेखपुरा बजार गेल रही आ गुलबियाकेँ देखा रतना कहने छल– 'ऐ आफतकेँ देखि ले । बुढ़ारीमे ई टीम-टाम छैक । जुआनीमे ककरो संग भागि पड़ायलि छलि आ दू बरख बाद सनेस दऽ 'यार' पड़ा गेल छलैक । सनेसक संग एही चौबटियापर घूरि आयलि छलि । देख ने ओहि हरामी छौंड़ीकेँ, एखनेसँ हाथ-पयर निकालि रहलि छैक । यैह तँ ऐ चौबटियाक 'रौनक' छैक ।"

मुदा हमरा हिसाबेँ चौबटियाक असल 'रौनक' छलैक आजाद केबिनमे । इलाकाक छोट-पैघ सभ श्रेणीक लोकक पहिल पसिन्न– आजाद केबिनक चाह आ घुघनी । साहित्यकार-राजनीतिज्ञ, तरुण बाबू, डाक्टर घोष, हीरोक सरदार रतना आ जोड़ीदार पूरन, विद्यार्थी आ शिक्षक, नेना आ पछुलगुआ, बूढ़ आ बच्चा सभक लेल आजाद केबिनक चाह आवश्यक । शनि आ बुधकेँ पेठियाक दिन तँ आरो चहल-पहल रहैत छैक । पेठियामे बौआइत गस्सल-गस्सल देहबाली छौंड़ी-मौगीकेँ देखबा लेल सभसँ उपयुक्त स्थान– आजाद केबिन (ई हम बादमे बुझलिऐक) । भाषण आ साहित्यिक चर्चा लेल सभसँ श्रेष्ठ स्थान– आजाद केबिन (ई किछु पहिनो बुझलिऐक, किछु बादोमे) आ सभसँ नीक चाह लेल सभसँ नीक स्थान– आजाद केबिन (ई हम पहिले दिन बूझि गेलिऐक ।)

मुदा शेखपुरा बजारक 'रौनक' दू व्यक्तिक कारणेँ आर बढ़ल-चढ़ल छलैक । एक टा सफल ज्ञान-विज्ञान कलामर्मज्ञ श्याम बाबू आ दोसर रत्नेश्वर झा उर्फ रतना । श्याम बाबूक ज्ञान स्कूल कालेजक नामपर मिडिल स्कूल धरि सीमित

छलनि, जकर परीक्षामे कौपीकेँ सादा जमा करैत लिखने छलथिन–'हे कौपी तू जाइयो, श्रीमान् के पास, पूरा नम्बर लाइयो, कर जाइयो पास ।' परीक्षक सहृदय छलनि । कौपीपर श्याम बाबूक लेल अमूल्य सुझाव लिखि देने छलनि–"इडिल-मिडिल की छोड़ो आस, खुरपी लेकर छीलो घास ।" श्याम बाबू आज्ञाकारी छात्र जकाँ शिक्षकक परामर्श मानि लेलथिन आ खुरपी लऽकऽ घास छीलऽ लगलाह । महींस कीनि लेलनि । पानिमे दूध मिला बेचऽ लगलाह । रुपैया सूदिपर आबऽ लगलनि, मूल सुरक्षिते रहलनि । आब हुनका कोनो चिन्ता नहि छनि । घास आब चरबाह छिलैत छनि । अपने चौबटियापर खेहारि-खेहारिकऽ सूदि असूलैत छथि । जे आयबे छोड़ि देलक तकरा घर धरि खेहारि मारैत छथिन । मुदा जे सूदिपर रुपैया नहि लेने छनि तकरो कल्याण नहि छैक । अकारण कोनो बातमे टाङ अड़ाकऽ झगड़ा मोल लेबऽमे पारंगत छथि श्याम बाबू । विषय कोनो होअय, व्यक्ति क्यो होथि, चोट्टे बीचमे सन्हिया जयताह । यदि सामनेवला पार्टी मुँहदब्बू अछि, ओकरा प्रेमसँ एक घण्टा बेइज्जति करथिन आ यदि सामनेवला मुँहगर अछि तँ प्रेमसँ घण्टो बेइज्जति होइत रहताह ।

रतनाकेँ बेइज्जति करब मोस्किल । चोट्टे एक टा डायलाग–'हमसे टकराने बाला धूल में मिल जायगा ।' मंगनू मिसरक दोकानसँ चारि टा भाङक बरफी, आजाद केबिनमे उधारक चाह आ घुघनी खाकऽ, गरामे हनुमानी चकती आ हाथमे सरदारजीवला कड़ा पहिरि, कौखन पसिनियाँक घरसँ चौठी ताड़ी चढ़ा, ओ मस्त साँढ़ जकाँ शेखपुरा बजारमे घूमैत-फिरैत अछि आ धाराप्रवाह भाषण दैत रहैत अछि कोनो विषयपर, ककरो पक्षमे । कोनो आश्चर्य नहि जे भोरमे जकर पक्षमे बाजि रहल हो, साँझमे ओकर विपक्षेमे बाजऽ लागय । ताधरि बजैत रहय जा धरि शेखपुरा बजारमे एक्को टा श्रोता उपस्थित छैक आ सड़क सुन्न नहि भेल छैक । तखन आजाद केबिनक प्रोप्राइटर हाथ जोड़िकऽ ओकरासँ केबिन बन्द करबाक अनुमति लैत छैक आ रतना अपन मस्त चालिसँ दुनू पंजापर बेरा-बेरी झुमैत, माथपर लटकि अबैत केशकेँ बेर-बेर ऊपर झटकैत अपन गाम दिस बिदा होइत अछि । ओहि हालतिमे जखन कखनो मस्तीमे ओ गाबऽ लगैत अछि 'सागर से सुराही टकराये बादल को पसीना आ जाये' तँ बाट चलनिहार ठाढ़ भऽ जाइत छैक आ गामक कनियाँ-बहुरिया, बियाहलि-बिनबियाहलि टाट-फरकीसँ हुलकी मारऽ लगैत छैक ।

बाबू एक दिन टोकने छलाह– ''तोँ रतनाक गाम गेल छलह ? ओकर घर खयलह-पीलह ?''

हम स्वीकृतिमे मूड़ी डोला देने छलियनि । बाबूक आकृतिपर एक टा आहत सन भाव आबि गेल छलनि– ''हम तोरा सभ तरहक स्वतंत्रता देने छियह । मुदा हमरा ई आशा नहि छल जे तोँ परिवारक मर्यादा आ परिपाटीकेँ एना तोड़ि देबह । तोरा बुझल नहि छलह जे हमरालोकनि हकारो-तिहारमे ओहि गाम नहि जाइत छी ? वैहलोकनि एकतरफा अबैत-जाइत छथि, खयबो करैत छथि, हमरालोकनिक घर नोत भेलापर । सौंसे गाम चर्चा भऽ रहल छह । ककरा-ककरा जबाब दियौक ?''

हमरा तामस भऽ जाइत अछि– ''ककरो जबाब देबाक काज नहि । हम कोनो चोरि वा अपराध कयने छी ? परिपाटी तँ बदलबे करैत छैक, एक्के परिपाटी सभ दिन कोना चलतैक ? ओहि गाम जयबा-अयबामे कोन हर्ज छैक ?''

बाबू कनेक तमसाइत आ तमसायलो तँ बेसी आर दुखित होइत बजलाह– ''हर्ज छैक, तोँ नहि बुझबहक । हमरालोकनिक धन चल गेल, आब एक टा इज्जति बाँचल अछि इलाकामे । आइयो ओसभ, धन-सम्पत्ति भेलोपर अपनाकेँ छोट बुझैत अछि । हमरासभकेँ महत्त्व दैत अछि, हमरे गामक नाम लऽकऽ बाहर महत्त्व पबैत अछि । तोँसभ एना ओकर घर अयबह-जयबह तँ फेर कतऽ रहतह अन्तर ? कोना देतह आदर ?''

हमहूँ अपन बातपर अड़ल रहैत छी– ''कोन काज छैक अन्तर रहबाक ? दोस्तीमे अन्तर किएक ? हमरा तँ ओहू गामक लोक नीक लगैत अछि, रतना नीक लगैत अछि ।''

बाबू बुझबैत कहने छलाह– ''तोँ जिद्द कऽ रहल छह, मुदा परिणाम नहि सोचैत छहक ? नीक लोक ओहू गाममे छैक, मुदा ओकरासभक सामाजिक प्रतिष्ठा हमरालोकनिसँ कम छैक आ रतना तँ एकदम बदनाम छौंड़ा अछि । ओकरा संग रहलासँ तोहूँ बदनाम भऽ जयबह । ओकर संग छोड़ि दैह ।''

ओहि दिन बाबूजीक बात हम नहि मानैत छियनि । रतनाक संग नीक लगैत अछि आ ओकर व्यक्तित्व परीक नायक जकाँ आकर्षित करैत अछि ।

मुदा आकर्षण टूटऽ लगैत अछि । ओकर खलनायकी व्यक्तित्व चिन्हार होबऽ लगैत अछि आ दसमा क्लासमे अबैत-अबैत एकदम असह्य भऽ उठैत अछि ओकर काजसभ । सोलहममे पयर दैत छी हम आ रतनाक ई व्यक्तित्वक सम्मोहन

टूटि जाइत अछि आ एक-एक कऽ बहुत रास घटना ओकर असली रूप हमर सामने स्पष्ट कयने चल जाइत अछि ।

एक दिन ओ स्कूलक सभ टा कागत-पत्तर चोराकऽ रद्दीक भाव बेचि दैत छैक । चोरी पकड़ा जाइत छैक, मुदा डरे ककरो ओकरा किछु कहबाक साहस नहि होइत छैक । हमरा ज्ञात होइत अछि तँ बड़ क्षोभ होइत अछि । टोकैत छिऐक तँ सहज भावसँ बजैत अछि– ''रुपैयाक काज छल, रद्दी बेचि देलिऐक । एहिमे कोन बेजाय बात छैक ?''

फेर एक दिन ओ स्टेशनपर मारि-पीट कयलक, छोटा बाबूक कपार फोड़ि देलकैक । मोकदमा भेलैक आ तीन मास जहलसँ भऽ आयल । जहलसँ घूरिकऽ आयल तँ टोकलिऐक तँ बड़ शानसँ बाजल– ''एहिमे लाजक कोन गप्प ? जहल तँ बड़का-बड़का नेतासभ जाइत छथि ।'' ओहि राति रेलक फर्स्ट क्लासक डिब्बासँ सभ टा गद्दावला सीट उखाड़ि कऽ लऽ अनलक ।

तखन ओकर 'लाल भौजी'कें सेहो देखलिऐक । चालीसक वयस, पैघ-पैघ धीयापूता । देखिकऽ हमरा आश्चर्य भेल । हम तमसाइत पुछलिऐक– ''तोहर मायक बयस छैक । झूठ-मूठ खिस्सा बना बदनाम करैत लाज नहि होइत छौक ? तोरा सन-सन तँ धीयापूता होयतैक ओकरा ।''

ओ हँसैत बाजल– ''पढ़ाकू जी ! सोलहम बयस भेने की होयत ? एखन आरो बहुत रास बात अहाँ नहि बुझबैक । प्रेममे बयस नहि देखल जाइत छैक । ओकर देह देखैत छिऐक ? –केहन कस्सल-कूसल छैक । एकदम मजगूत काठी । फेर स्वामी परदेसिया छैक, साल-दू सालमे एक बेर अबैत छैक । बुझलिऐक किछु ?''

हम एकदम उत्तेजित होइत कहलिऐक– ''हम सभ टा बूझि गेलिऐक । ई सभ काज तोँ छोड़ि दे । बड़ लाज होइत अछि हमरा तोहर कृत्यपर ।''

ओकर आकृति एकदम कठोर भऽ गेलैक– ''दुनियाँमे सभसँ सस्त चीज की छैक, तोरा बूझल छौक ?

हम ओकर मुँह ताकऽ लगलिऐक ।

–''उपदेश ।'' ओ ओहिना कठोरतासँ बाजल– ''आ उपदेशकसँ हमरा एकदम घृणा अछि, खाहे ओ जे हो ।'' ओ पिचसँ जमीनपर थुकैत, ओहिना दु पंजापर बेरा-बेरी झुमैत चल गेल आ हम अपमानित जकाँ ठाढ़ रहि गेलहुँ ।

दू दिन बाद घूरनसँ भेँट भेल– रतनाक जोड़ीदार, पक्का दोस्त । देखिते हमरा घेरि लेलक– ''अहाँ कनेक रतनाकेँ बुझा दियौक शंकर बाबू !''

–''की बुझा दियौक ?''

–''कहितो कोनादान लगैत अछि, मुदा बिनकहने उपायो नहि अछि । हमर कनियाँ दोस्तीक लेहाजे हँसि-बाजि लैत छैक, बस्स, बातकेँ बतंगड़ बना देलक । सभ ठाम हमर स्त्रीकेँ बदनाम करैत फिरैत अछि ।''

–''तँ एहिमे हम की करू ? अहाँक तँ पक्का दोस्त अछि...''

–''दोस्ती गेल चुलहामे ।'' घूरन उत्तेजित होइत बाजल– ''जखन ओ बैमन्ना दोस्तीपर लात मारि देलक तँ हमहूँ थुकैत छिऐक ओकर दोस्तीपर । मुदा ई हमर इज्जतिक प्रश्न अछि । अहाँ कनेक बुझा दियौक ।''

हम कोनो आश्वासन नहि दऽ सकलिऐक घूरनकेँ । 'लाल भौजी'वला गप्प हमरा मोन छल । रतनाक उत्तर हमरा बूझल छल । तैयो भेँट भेल तँ टोकि देलिऐक– ''आइ घूरन भेटल छल । किदन-सभ कहैत छल तोरा दऽ ।''

ओ उपेक्षासँ बाजल– ''की कहैत छलौक ओ हिजड़ा ?''

हमरा एक टा दोस्तक लेल ओकर ओ सम्बोधन अपमानजनक लागल– ''एना कहैत छहीँ अपन दोस्तक लेल ? ओकर स्त्रीकेँ बदनाम करैत छहीँ ?''

रतना ओहिना उपेक्षासँ बाजल– ''तँ रोकि लेलओ अपन स्त्रीकेँ । डाँड़मे दम्म नहि तँ स्त्री बौअयबे करतैक । हमरा छोड़ि देलासँ की होयतैक, क्यो आर मजा करतैक ।''

हमरा ओकर गप्प असह्य लागऽ लागल । एकदम बिगड़ैत कहलिऐक– ''तोहर गप्प-सप्प आ आचरण आब सभ टा सीमा लँघने जाइत छौक ।''

ओहो ओहिना कठोरतासँ बाजल– ''तोहूँ सभ टा सीमा लँघने जाइत छेँ । हमर व्यक्तिगत जीवनमे हस्तक्षेप करैत छेँ । से अधिकार हमर मायो-बापकेँ नहि छैक । हम कहि चुकल छियौक, उपदेशसँ हमरा एकदम घृणा अछि ।''

हमहूँ उत्तेजित होइत कहलिऐक– ''आ हमरा तोहर प्रत्येक आचरण आ अभिव्यक्तिसँ घृणा अछि । अपन आचरण सुधार, नहि तँ ई दोस्ती निमहब मोश्किल भऽ जयतौक ।''

ओ एकदम लापरवाहीसँ बाजल– ''एहन दोस्तीक चिन्ते ककरा छैक ? राख अपन दोस्ती आ उपदेश अपने लग, हमरा नहि चाही । हमर तोहर दोस्ती केहन ? हम सिंह छी, तोँ गीदड़ ।''

हमरा आँखिमे नोर आबि गेल । ओकरा लेल माय-बाबू, समाजक प्रत्येक व्यक्तिक विरोध कयने रही । आशा छल जे एक दिन सुधरि जायत । मुदा हमर दोस्तीक ई मूल्य छैक ओकर दृष्टिमे से नहि बूझल छल । आहत-अपमानित घर घूरि अयलहुँ ।

मुदा घर अबैत-अबैत लागल जेना मोन हल्लुक भऽ गेल होअय । ओकर दोस्ती एम्हर अपमान आ शंकाक कारण बनि गेल छल लोकक दृष्टिमे । स्वयं हमरो मोनक कोनो कोनमे एहि दोस्तीकेँ तोड़ि-ताड़ि फराक भऽ जयबाक इच्छा नुकायल छल आ ई अनायास सभ टा समाप्त भऽ गेलापर जे क्षणिक दुख भेल छल से बिला गेल । लागल जेना एक टा दाग धोआ गेल हो आ कोनो अप्रिय लोकसँ पिण्ड छूटि गेल होअय, एक टा अशोभन, अप्रीतिकर घटना टरि गेल होअय । मोन प्रसन्न आ हल्लुक भऽ गेल ।

मुदा फेर लागल जेना गाममे रहि, एक्के स्कूलमे पढ़ि एहि सभसँ एना फराक भऽ सकब संभव नहि होयत । ओ अपन लाइन नहि छोड़त आ ओकर कुकीर्ति लेल सभ हमरा टोकबे करत– अहाँक दोस्त आइ ई कयलक... आइ ओ कयलक । एहि दागकेँ छोड़ायब एतेक सोझ नहि होयत ।

तखने हमरा दिमागमे एक टा उपाय सूझि गेल । ई विचार ततेक तेजीसँ दिमागमे आयल जे हमरा स्वयं आश्चर्य भेल । मुदा ओहि आश्चर्यमे एक टा प्रसन्नता निहित छल । हम ओही क्षण बाबूक समक्ष ठाढ़ भऽ कहलियनि– ''गाममे साइन्सक पढ़ाइ ठीक नहि होइत छैक । हमरा दरभंगा स्कूलमे नाम लिखा दियऽ ।''

शुरू-शुरूमे बड़ उदास आ सुन्न लागय । यद्यपि शहरमे बेसी चहल-पहल, बेसी रौनक आ मनोरंजनक साधन रहय तैयो सदिखन उदास आ सुस्त रही । लागय जेना किछु छूटि गेल होअय । स्कूलक सभ विद्यार्थी अपरिचित, शिक्षक अपरिचित आ सौंसे वातावरण अपरिचित । समय काटब मोश्किल भऽ जाय । मुदा ताहि दिन हमरा लागय जे गामक दिन आ शहरक राति नीक होइत छैक । साँझक बाद शहरमे

समय काटब आसान भऽ जाय । आर नहि किछु तँ सिनेमा आ रोशनीक बाढ़िमे डूबल शहरमे एम्हर-ओम्हर बौआयब ।

मुदा एकसर सिनेमा देखब आ घूमब बेसी दिन नहि चलल । एक टा दोस्त भेटि गेल । अरुण– माने अरुण कुमार बनर्जी । शुरू-शुरूमे ओकरासँ हमरा डर होइत छल । कनेक हुड्ड सन छल । क्लासमे अनेरो हंगामा कयने रहय । मास्टरोसभकेँ नहि गुदानैक । हम गामसँ आयल एक टा दब्बू छौंड़ा रही– सभसँ पछिला सीटपर दबकल बैसल रही, शिक्षक आ सहपाठी सभक दृष्टिसँ उपेक्षित । मुदा एक दिन अरुण हमर बेंचपर आबिकऽ बैसि रहल । हम डेरा गेलहुँ । अबस्से कोनो उत्पात करत । आर घोकचिकऽ बैसि गेलहुँ । मुदा ओ नहि मानलक । कानमे मुँह सटबैत बाजल– ''देख, तोरे देखैत छौक ।''

–''के ?'' हम ओहिना डेराइत पुछलिऐक ।

–''आर के ? वैह छौंड़ी, देखि ले ।''

हमर कनपट्टी लाल भऽ गेल । क्लासमे दू टा छौंड़ी सेहो पढ़ैत छलैक । मुदा हम लाजक लेल कखनो ओम्हर तकितो ने छलिऐक । गामक स्कूलमे छौँड़ीसभ नहि पढ़ैत छलैक । गाममे छौँड़ीसभक संग हम खूब हँसि-बाजि लैत रही । मुदा ई दुनू छौँड़ी गामक छौंड़ी सन नहि छलि । नहि जानि किएक ओकरासभ दिस तकिते कनपट्टी गरम आ लाल भऽ जाइत छल । खासकऽ शोभाकेँ देखलापर । आ ओकरे विषयमे अरुण कहि रहल छल जे हमरे ताकि रहलि अछि । हमर कनपट्टी गरम भऽ गेल । हम कनेक गरदनि घुमा ओम्हर देखलिऐक तँ लागल जे सत्ते एम्हरे देखि रहलि अछि आ दुष्टतापूर्वक मुसकिया रहलि अछि । हम लजाकऽ फेर दोसर दिस ताकऽ लगलहुँ ।

''देखलहीक ?'' –अरुण फेर कानमे मुँह सटबैत बाजल– ''अबिते बाजी मारि लेलें, शाबास !''

हम तैयो कोनो जवाब नहि देलिऐक । मुदा अरुण ओहि दिन हमरे बेंचपर धसना खसौने रहल । साँझखन अपन घरो लऽ गेल । माय-दीदी सभसँ भेँट करौलक आ सभकेँ एतबे कहलकैक– ''क्लासक एक टा छौंड़ी एकरासँ प्रेम करैत छैक ।''

ओकर घरसँ घुरैत काल हमरा लागल जेना हम सत्ते प्रेममे छी । हमरा लागल जेना ई सम्पूर्ण शहर हमरे सम्बोधित कऽ रहल अछि– 'तोँ प्रेममे छेँ, तोँ

प्रेममे छेँ ।' आ सौंसे शहर संगीतमय भऽ उठल । अपन कोठलीक अन्हारमे भोजनक लेल मेस जाइत काल बाटक सुन्न एकसरपनमे सभ ठाम, सभ अवसरपर कानमे किछु गुनगुनाइत रहल, पयरक गति बदलि गेल, आँखिक भँगिमा आ दृष्टि सेहो बदलि गेल ।

आ दोसर दिनसँ चोरा-चोराकऽ शोभाकेँ देखैत रहब नियम जकाँ भऽ गेल । जखन दृष्टि मिलि जाय, विश्वास आर मजगूत भऽ जाय जे अबस्से ओ हमरा दिस आकृष्ट अछि । आब हमर सीट बदललापर हमरा दिस तकैत अछि वा नहि । आ अपन धारणाक पुष्टि हमरा प्रत्येक बेर सीट बदललापर भेटि जाय जे शोभा हमरा तकैत अछि । किएक तकैत अछि ? ई प्रश्न अपनेसँ पूछि आ स्वयं उत्तर दऽ हम अपन धारणाकेँ पुष्ट बनबैत गेलहुँ ।

आ दिन-राति बदलि गेल । धरती आ आकाश बदलि गेल । एक टा एहन उन्माद आ तरंगमे समय बीतऽ लागल जाहिमे सभ-किछु बहि जाय– सभ टा निषेध, सभ टा औचित्य । चलैत गाड़ीक संग जे किछु बजैत अछि, लोककेँ तकरे प्रतिध्वनि इंजिनक शब्दमे बुझाइत छैक, तहिना प्रत्येक स्वर, प्रत्येक बात हमरे मोनक धारणाक प्रतिध्वनि जकाँ बुझाय । मुदा एक टा आर पुष्टि एखन बाँकी छल– स्वयं शोभाक मुँहसँ प्रेमक स्वीकृति । प्रेम ककरा कहैत छैक, प्रेम की होइत छैक, से हमरा नहि बूझल छल । मुदा जे किछु हमरा आ शोभाक बीच भऽ रहल छल, प्रायः ओकरे नाम प्रेम थिकैक । हम एहि अपरिचित अनुभूतिक गुदगुदीसँ ततेक अस्थिर भऽ उठलहुँ जे एक टा चिट्ठी लिखि देलिऐक ओकर नाम । चिट्ठी लिखि टिफिनमे ओकर किताबक बीच दबा देलिऐक आ चुपचाप क्लास छोड़ि डेरा आबि गेलहुँ । ओहि दिन आर क्लासमे बैसबाक साहस नहि भेल । राति भरि कल्पनामे मगन रही जे शोभा अबस्से जवाब देत, हमर प्रेमक प्रतिदान देत, अपन हृदय खोलिकऽ राखि देत पत्रमे ।

ओहि दिन भोरमे नहायमे बेसी काल समय लागि गेल । कपड़ा कोनो पसिन्ने ने आबय । बड़ गुनधुनक बाद उज्जर पैंट आ उज्जर शर्ट पहिरि, केशकेँ नीक जकाँ सरिया, मुँहमे खूब पाउडर मलि स्कूल दिस विदा भेलहुँ । क्लासमे शोभा नहि आयलि छलि । हम अधीरतापूर्वक प्रतीक्षा करऽ लगलहुँ । तखने हेडमास्टर साहेबक चपरासी आबिकऽ कहलक– "अहाँकेँ बजबैत छथि ।"

हमरा लागल जेना काल्हि क्लास छोड़ि भागि जयबाक 'रिपोर्ट' मोनिटर कऽ देने होयत, तकरे बजाहटि अछि । हम डेरायल आ कोनो नीक बहाना सोचै

हेडमास्टर साहेबक आफिसमे पहुँचैत छी । हेडमास्टर साहेब बड़ी काल धरि मूड़ी नहि उठबैत छथि । एक टा कागत सामने टेबुलपर राखल छनि । किछु काल बाद हेडमास्टर साहेब ओ कागत उठा हमरा हाथमे दऽ दैत छथि– "ले, अपने पढ़ि ले ।"

हम कागत खोलैत छी । हमरे लिखल चिट्ठी शोभाक नाम । हमर हाथ थरथराय लगैत अछि । लाजे मूड़ी गोँति लैत छी । मोन होइत अछि जे धरती फाटि जाय आ हम ओहीमे नुका रही । मुदा हम आफिसक सक्कत सीमेन्टपर ठाढ़ रही आ हेडमास्टर साहेबक चेहरा दुखी, मुदा एकदम कठोर छलनि ।

–"की कहबाक छह ?" किछु काल बाद हेडमास्टर साहेब टोकैत छथि ।

–"किछु नहि मास्टर साहेब ! हमरा सजाय दियऽ । तकरे पात्र छी ।" हम ओहिना मूड़ी गोँतैत कहैत छियनि ।

–"की सजाय होयबाक चाही ?" हेडमास्टर साहेब हमरेसँ पूछैत छथि ।

–"हमरा सभक सामनेमे पचास बेँत लगा स्कूलसँ निकालि दियऽ ।" हमरा अपन ग्लानिसँ निस्तार नहि भेटैत अछि ।

–"ठीक । तँ तैयार भऽ जाह । छुट्टीक बाद सभकेँ जमा करबैक, नोटिस कऽ दैत छिऐक । एखन क्लासमे जाह ।"

हम ओ चिट्ठी ओहिना हाथमे लेने बरबराइत छी । बाहर अयलापर ध्यान अबैत अछि जे ई चिट्ठी तँ हेडमास्टर साहेबकेँ देबाक चाही । घूरिकऽ ओ चिट्ठी ओहिना टेबुलपर राखि दैत छियनि आ क्लासमे चल अबैत छी । हमर आकृति निश्चित रूपसँ एकदम निष्प्रभ आ हताश रहल होयत, कारण क्लासमे सभ हमरे देखऽ लागल । हम चुपचाप पछिला सीटपर बैसि जाइत छी । सभक उठल दृष्टिक हमरा उनटा अर्थ लागल छल । भेल जेना सभकेँ हमर नीचताक खबरि भऽ गेल छैक आ चिट्ठीवला काण्ड सभ बूझि गेल अछि । हम एकदम घृणासँ भरि शोभाकेँ देखैत छिऐक । ओहो हमरे दिस ताकि रहलि छलि । मुदा हमरा आँखिक उत्कट घृणा देखि ओ सहमि गेलि । दोसर दिस ताकऽ लागलि । ओ दिन जेना पहाड़ सन रहय । बितबाक नामे ने लेअय । बड़ मोश्किलसँ साँझ भेल । छुट्टीक घंटी बाजल आ सभ अपन घरक बाट धयलक । हमरा आश्चर्य भेल जे किएक सभ आफिसक आगूमे जमा नहि भेल ? हेडमास्टर साहेबक आफिसमे पहुँचलहुँ । हमरा देखिते बजलाह– "हम बहुत सोचि-विचारिकऽ फैसला कयलहुँ अछि जे तोँ एतहि रहबह । तोरा सन तेज विद्यार्थीकेँ एक टा गलती माफ भऽ सकैत छैक यदि मोनसँ

ओकर प्रायश्चित्त करऽ लेल तैयार हो । तोरामे प्रायश्चित्त करबाक दृढ़ता छह, तेँ हम ई चिट्ठी तोरे आपस करैत छियह ।"

हम हेडमास्टर साहेबक हाथसँ ओ चिट्ठी लऽ लैत छी । आँखि डबडबा जाइत अछि । ओहि चिट्ठीक टुकड़ी कऽ हेडमास्टर साहेबकेँ पयरपर राखि हम कानऽ लगैत छी । बड़ी काल धरि कनैत रहैत छी । ता धरि कनैत रहैत छी जा धरि मोन एकदम हल्लुक नहि भऽ जाइत अछि । मास्टर साहेब हमरा नहि टोकैत छथि। कानिकऽ जखन शांत होइत छी, हमरा पीठपर हाथ फेरैत कहैत छथि– "जा, आब जा, आ सभ टा बिसरि जाह जेना किछु भेले ने होअह ।"

हम बाहर चल अबैत छी । बाटमे सभ किछु, सभ टा वातावरण, जे एक दिन हमरा संगीतमय लागल छल, मुँह दुसैत लागल । लागल जेना ई शहर आब फेरसँ उदास आ सुन्न भऽ जायत, जेना चम्पाक गेलापर बनारस भऽ गेल छल । मुदा चम्पाकेँ हम नहि बिसरल छिऐक । शोभाकेँ बिसरऽ पड़त । ओ एक टा दाग थिक जकरा रगड़ि-रगड़ि कऽ मेटाबऽ पड़त । ओ एक टा शाप अछि जकरासँ मुक्त होबऽ पड़त । हृदय आ शरीरक प्रत्येक अंशकेँ काटि देबऽ पड़त जतऽ शोभाक नाम उगल छल । हेडमास्टर साहेबक विश्वासक रक्षा करऽ पड़त । एहि निश्चयक संग हमर डेग बाटपर बेसी जोर-जोरसँ बजरऽ लगैत अछि ।

–"तोँ हमरा दिस एना किएक तकैत छेँ ?" ओहि दिन हमरा एकस
पाबि शोभा टोकि बैसलि ।

हम फेर डेरा गेलहुँ । शोभा पहिल बेर बाजलि छलि आ सेहो एक ट
आक्षेपक संग । अबस्से कोनो काण्ड होयत फेर ।' हम बा

–"हम किएक ताकब अहाँकेँ ? झुट्ठे सन्देह भेल अछि ।
टारबा लेल कहलिऐक ।

–"झूठ नहि बाज ! एतेक अबोध नहि छी हम । आँखिक भाषा बुझै
छिऐ । पहिने तँ तोँ एना नहि तकैत छलेँ ? कहाँ चल गेलौ ओ दृष्टि ?"

हमरा मोनमे किछु धधकऽ लागल । आगि लगाकऽ धाही उठबाक कारण पूछि रहलि अछि । ओहि दृष्टिकेँ ताकि रहलि अछि जकरा टाकु घोपि अपने अन्हरा चुकलि अछि । अबस्से कोनो चालि होयतैक एहूमे ? हम ओकर आकृतिपर अपन दृष्टि गाड़ि दैत छिऐक । ओ एकदम अस्थिर होइत बाजि उठैत अछि— नहि ताक एना हमरा दिस । लगैत अछि जेना कोनो लहास हमरा अपनामे लपेटि जरा देत । एहन कोन अपराध भेल अछि हमरासँ ?"

हमर मोनमे घृणाक बाढ़ि आबि जाइत अछि । यदि एक टा नीक छौंड़ी जकाँ हमर पत्र हेडमास्टरकेँ दऽ हमर शिकाइत कयलक, तँ ओहिमे ओकर कोनो दोष नहि छलैक । मुदा ओ काण्ड कऽ फेर जे नाटक कऽ रहलि छलि ताहिसँ हमरा ओकर चरित्रपर सन्देह होबऽ लागल आ मोनक घृणा तीव्र भेल चल गेल ।

हम हाथ जोड़ैत कहैत छिऐक– "अपराध अहाँसँ नहि, हमरासँ भेल अछि, मुदा तकर आर कतेक सजाय देब ? पहिनहि पूर्ण सजाय पाबि चुकल छी हम ।"

ओकर मुँह कनौन सन भऽ जाइत छैक– "हम की सजाय देलियौक अछि तोरा ? अनेरो हमरापर लांछना लगबैत छेँ । हमहीँ बेकूफ छी जे तोरा दिस दोस्तीक हाथ बढ़ौलियौक । तोरा आब घमण्ड भऽ गेल छौक, क्लासमे फर्स्ट करैत छेँ, डिबेट आ खेल-कूदमे सभसँ आगू रहैत छेँ !"

–"मुदा ओ चिट्ठी ?" हमरा मुँहसँ अनायास बहरा जाइत अछि ।

–"कोन चिट्ठी ?" तेना अकचकाइत अछि जे हमरा विश्वास करऽ पड़ैत अछि जे ओकरा चिट्ठीक विषयमे किछुओ नहि बूझल छैक । ओकरा ओतहि छोड़ि हम दौड़ल हेडमास्टर साहेबक कोठली दिस जाइत छी । चपरासीक हाथ पुर्जा पठायब सेहो मोन नहि रहैत अछि । धड़धड़ायले हुनक आफिसमे पैसि जाइत छी– "सर, एक टा बात पुछबाक अछि अहाँसँ ।"

–"हमरा बूझल अछि । हमरा तऽ आश्चर्य भऽ रहल छल साल भरिसँ जे तोँ किएक ने ओ सबाल पूछऽ आयल छेँ ?"

–"अहाँकेँ बूझल छल सर ? तखन तँ अहाँकेँ ईहो बूझल होयत जे हमर ओ चिट्ठी के अहाँकेँ दऽ गेल छल ?"

–"हमरा बूझल अछि । मुदा तोँ हमर प्रिय छात्र छह, स्कूलकेँ तोरासँ बड़ आश छैक, तेँ कहैत छियह जे ई जनबाक चेष्टा नहि करह जे ओ चिट्ठी कोना हमरा लग पहुँचल ।"

—"अहाँकेँ विश्वास करू सर, जे वचन हम अहाँकेँ देने छी, ओकर पालन अबस्से करब । खाली छातीपरक एक टा बोझ हल्लुक भऽ जायत ।" हम जिद्द करैत छियनि ।

—"तोहर मोनक सान्त्वनाक हेतु एतबे पर्याप्त होयतह जे चिट्ठी हमरा ओ नहि देने छलि, जकरा तोँ देने छलहक । ओकरा तँ ओ भेटबो नहि कयलैक । किताबसँ कम्पाउण्डमे खसि पड़लैक । क्यो पौलक आ हमरा दऽ गेल ।"

—"मुदा के देलक सर ओ चिट्ठी ? अहाँकेँ के देलक ?" हम एक टा अप्रत्याशित प्रसन्नतासँ भरल जिद्द करऽ लगलियनि ।

—"ई बुझबाक तोरा कोन काज छह ? क्यो पाबि सकैत अछि । के देलक से जानि मात्र प्रतिशोधक अतिरिक्त आर कोन मंतव्य सिद्ध होयतह तोहर ? जा, जिद्द जुनि करह ।"

हम हेडमास्टर साहेबक अफिससँ चल अबैत छी, प्रसन्न हवामे उड़िआइत। एतेक दिनसँ राखल पाथर छातीपरसँ हँटि गेल छल आ स्वाभाविक रूपसँ साँस लऽ रहल छलहुँ । शोभा ओहिना, ओही स्थानपर ठाढ़ि छलि जतऽ छोड़िकऽ गेल छलिऐक । हम दौड़ल ओकरा दिस बढ़लहुँ । मुदा फेर पयर थकमका गेल । की कहबैक ? कहबैक जे तोरा एक टा चिट्ठी लिखने छलियौक जे तोरा नहि भेटलौक । कहबैक जे ओहिमे लिखने छलियौक जे हम तोरासँ... हम तोरासँ... नहि, हमरा नहि कहि होयत । ई अध्याय आब एतहि समाप्त भऽ जाय तँ नीक । एकरा खोललासँ आर अधिक कष्टसँ बेसी कथूक संभावना नहि अछि । शोभा निर्दोष भावेँ दोस्तीक हाथ बढ़ौलक अछि, ओकरा फेर सभ टा पुरना बात सुना घुरा देब उचित नहि होयत । ओकर दोस्तियोकेँ स्वीकार कऽ लेबाक चाही ।

शोभाक लग आबि हम हँसऽ लगैत छी । हमरा प्रसन्न देखि ओहो हँसबाक चेष्टा करैत अछि– "की भेलौ ?"

—"भेल किछु नहि । खाली तोहर गप्प मोन पड़ैत अछि । तोँ कहलेँ जे हम बड़ घमंडी भऽ गेल छी ! घमण्डीक कोन लक्षण देखलेँ तोँ हमरामे ?" हम बात बदलैत कहैत छिऐक ।

—"बात नहि बना । तोँ कोनो चिट्ठीक गप्प करै छलैँ, ककर चिट्ठी छलैक ?" शोभा उत्सुकतासँ पुछैत अछि ।

—"छलै एक टा चिट्ठी । कोनो उकट्ठी हमरा विषयमे अण्ट-सण्ट लिखि देने छलैक हेडमास्टर साहेबकेँ । तोरो नाम छलैक, तेँ हमरा भेल जे तोँ लिखने होयबेँ ।" हम फूसि बाजि जाइत छी ।

शोभा हमर बातक प्रायः विश्वास कऽ लैत अछि । दुखसँ ओकर मन एकदम उदास आ छोट भऽ जाइत छैक– "तोँ हमरा एतेक नीच बुझैत छलेँ ?"

हम बात टारैत कहैत छिऐक– "आब छोड़ ओ बात । आब तँ दोस्त भऽ गेल छी हमरालोकनि ।"

हमरालोकनिक दोस्ती एकदम पक्का भऽ जाइत अछि । स्कूलमे फेर तरह-तरहक चर्चा होबऽ लगैत अछि । अरुण सभ दिन टोकैत अछि– "वाह ओस्ताद, किला फतह ।" मुदा आब ओकर शाबासी हमर मोनमे पहिल बेर सन तरंग नहि उत्पन्न करैत अछि । लगैत अछि जेना किछु छल मोनमे जे मरि गेल अछि । हम अपने हाथेँ मारि देने छिऐक, ओकरा फेरसँ जिआयब संभव नहि होयत ।

जिआयब संभव होइतो नहि अछि । समय ससरि जाइत अछि । हमरालोकनि दोस्तीसँ आगू नहि बढ़ैत छी । मैट्रिकक परीक्षा समाप्त भऽ जाइत अछि । गाम जयबाक तैयारी करऽ लगैत छी । जाहि दिन गाम जयबाक छल, ताहि दिन तेहने लागल जेना बनारस छोड़ैत काल लागल छल । बनारसक गली-देबालपर चम्पाकेँ अपन पता दऽ आयल छलिऐक, मुदा कोनो पत्र नहि आयल । दरभंगाक शोभा अछि, मुदा ओकरा किछु कहि सकैत छिऐक । हम जनैत छी जे ई शहर प्रायः छूटि रहल अछि, शोभा छूटि रहलि अछि । फेर भेंट प्रायः संभव नहि हो । मुदा हमरा मोनमे कहबा लेल की सत्ते किछु नहि अछि ? एक दिन शोभाकेँ जे पत्र लिखि कहऽ चाहने छलिऐक, से की आब सत्ते मरि गेल अछि ? तखन ई शहर छोड़ऽ काल एतेक दुःख किएक भऽ रहल अछि ? मात्र दू वर्षक सम्पर्कक कारण, वा आर किछु ?

हमर मोनसँ किछु बाहर आबऽ लेल औनाइत रहल । मुदा जेना बाट अवरुद्ध छल । प्रायः मोनक चतुर पक्ष छल जे सावधान कऽ रहल छल जे खतम होइत कथाकेँ फेरसँ शुरू कयलापर अन्तहीन दुःखक अतिरिक्त आर किछु उपलब्ध नहि होयत । प्रायः हमर कौलिक संस्कार छल जे एक दिन एकटा तरंगमे बहि गेल छल आ पत्र लिखि बैसल छल । मुदा आब ओ जागि उठल छल । हम ई कोना करब ? गामपर बाबू सुनताह तँ की कहताह ? वा मोनक डर छल जे फेर ओ पत्र पहिले बेर जकाँ उपेक्षित नहि भऽ जाय आ जे दुःख एक बेर सह्य कऽ गेल छी से दोबारा सहल नहि होअय ।

मुदा बहुत सतर्कताक बादो शहर छोड़ैत काल एक टा घटना घटित भऽ

जाइत अछि । गाड़ी छुटबासँ पूर्व एक टा आठ-दास बरखक छौंड़ा एक टा पुर्जा दऽ जाइत अछि– ''हमरा बूझल अछि, तोँ हमरा एकटा पत्र लिखने छलेँ । ओ हमरा नहि भेटल । हम बहुत दिन प्रतीक्षा कयलहुँ, मुदा आइ निर्लज्ज भऽ लिखैत छियौक, हमर ओ चिट्ठी तोँ हमरा घुरा नहि सकैत छेँ ? –शोभा ।''

हम चलबासँ पूर्व शोभाकेँ ईहो नहि कहि सकलिऐक जे ओ चिट्ठी तँ ओही दिन फाड़िकऽ हेडमास्टर साहेबक पयरपर अर्पित कऽ देने छलिऐक ।

कक्कासँ जीवनमे बहुत-किछु सिखने छी– ब्रिज आ शतरंज खेलायब, अखबार आ ग्रन्थ पढ़ब । मुदा हुनक एक टा चीज हमरासँ नकल नहि भऽ सकल। माने बंसी खेलायब । मोन साधिकऽ दिन भरि टकटकी लगौने तरेड़ा दिस तकैत रहब कहियो संभव नहि भेल । क्यो पैघ माछ फँसा लेअय आ घिरनीसँ ओकरा खेलाबय तँ देखबामे हमरो नीक लगैत अछि । कक्काकेँ कतेक बेर आध-आध मोनक रोहु घिचैत देखने छियनि, ओहि कालमे कक्काक रुग्ण कंकालक फुर्ती देखि आश्चर्य होइत छैक लोककेँ । मुदा हमरा आश्चर्य होइत अछि तरेड़ापर टकटकी लगौने रौदमे बैसल खेलाड़ीकेँ देखिकऽ । एहिसँ छोटका बंसीमे पोठी-टेङड़ा मारब हमरा नीक लगैत अछि, सेहो जल्दी-जल्दी तरेड़ा घिचय आ धड़ाधड़ घिचने जाइ ।

बैसारीमे मोन अकच्छ भऽ गेल छल । परीक्षाक बाद किछु दिन कक्काक 'स्टौक'पर खेपि गेलहुँ । सभ दिन एक टा पुस्तक दऽ देथि हाथमे– ''लैह, पढ़ने छह ?'' हम पढ़लोकेँ दोहरा-तेहरा जाइ, समय काटऽ लेल । कक्काक तँ संगि किताब, ताश-शतरंज आ बंसी छनि । पत्नी तीस बरख पहिने छोड़ि गेल छथिन । एक टा बेटा, सेहो जुआन, स्त्री-सन्तानवला । कक्का एकदम एकाकी । कौखन ताश-शतरंज आ नहि क्यो जुटल तँ बंसी । आ यदि बंसीक सेहो समय नहि रहलैक तँ पुस्तक, जासूसीसँ लऽ वेदान्त-महाभारत धरि, कालिदास, शेक्सपियरसँ लऽकऽ स्टार आ माया सीरीज धरि ।

बैसारीमे हम कक्काक सभ स्टौक चाटि गेल रही । पुरना 'माधुरी' आ 'सुधा'क फाइलसभ सेहो उनटा गेल रही । मुदा समय कटिते ने छल । रिजल्टक

बेर लगिचायल छल, मुदा प्रकाशनक कोनो तिथि घोषित नहि भेल छलैक । प्रतीक्षामे कछमछी बढ़ि गेल छल ।

बेर-बेर शोभा मोन पड़ैत छलि । एकान्तमे, रातुक एकसरमे, ओकर प्रथम आ अन्तिम चिट्ठी (एक टा पुर्जी) बेर-बेर पढ़ि जाइत छलहुँ । मुदा तकर बाद आगू किछु नहि सुझैत छल । शोभाकेँ की लीखि सकै छलिऐक आब ? संग छूटि गेल छल । साल-दू सालमे सासुर चल जायति ओहो । बिसरि जायत जे कहियो ककरो एक टा पुर्जी लिखने छलैक । मुदा हम ओकर ई पुर्जी जीवन भरि संग रखबैक । ओ हमरा सदिखन मोन देआओत जे कहियो एक टा निर्दोष प्रेम हमरा भेटल छल आ तकर स्मृति सदिखन हमरा जीवनमे किछु करबाक प्रेरणा दैत रहत, जेना चम्पाक स्मृति । एक टा निर्दोष फूलक स्मृति जकरा हम अपन घर-आङनमे सजा तँ नहि सकलहुँ; मुदा जकर गमक जीवन भरि हमर मन-प्राणमे बसल रहत, हमर एकान्तकेँ, हमर व्यस्तताकेँ सुवासित कयने रहत । कौखन लगैत छल जेना हम कायर छी, आगू बढ़िकऽ ओकर प्रेमकेँ स्वीकार किएक ने करैत छी ? मात्र एक टा आदर्श कल्पनामे किएक भेतिआयल छी ? जे उपलब्ध अछि, समर्पित अछि तकरा हाथ बढ़ा घीचि किएक ने लैत छी अपना दिस ? हम अपन मोनकेँ बुझबऽ चाहैत छलिऐक जे एहिमे कायरताक नहि, वास्तविकताक प्रश्न छैक । वास्तविकता यैह छैक जे ओ विजातीय अछि, ओकरा हम ग्रहण कऽ घर नहि आनि सकैत छिऐक ? तखन मात्र चारि दिन लेल स्नेह बढ़ौलासँ लाभ ? मोनक ओ असंतुष्ट कोण हमर तर्कपर हँसैत छल– ''प्रेममे जातिक प्रश्न ? विलक्षण ? आ फेर जेना घृणासँ बाजऽ लगैत छल... कायर... कायर.... कायर... ।

ओहू दिन हम मोनक ओही असंतुष्ट कोणक भर्त्सनासँ घबड़ा गेल रही । समय कटबा लेल कोनो पुस्तको नहि छल । पुरान कोनो हाथमे लऽ बैसबो कयलहुँ तँ भीतरक ओ आवाज आर तीव्र भऽ गेल । हम घबड़ाकऽ घरसँ बहरा गेलहुँ । अनिद्राक रोगी जकाँ भरि गाम बौआ अयलहुँ । कतहु क्यो नहि अभरल । निराश घुरैत काल पोखरिक घाटपर पढ़ुआ कक्का भेटलाह– छोटकी बंसी लेने बैसल । एक टा पितरिया लोटामे छलबलाइत तीन-चारि टा पोठी आ घाटपर पाथल दू टा बंसी । हमहूँ लग जा एक टा बंसी उठबैत कहलियनि– ''लाउ, हम खेला दैत छी ।''

पढ़ुआ कक्का कनेक बोर हमरा हाथमे दऽ दैत छथि । हम बंसी दोसर दिस पाथि दैत छिऐक ।

–''एखन किछु दिन रहबह गाममे ?'' पढ़ुआ कक्का टोकैत छथि ।

–"रिजल्टक लेल ठहरल छी, आब तँ अबेर भेल जाइत अछि ।" हम बंसी छिपैत कहैत छियनि ।

एक टा छोटकी पोठी ऊपर अबैत अछि । पढ़ुआ कक्का पोठीकेँ बंसीसँ छोड़ाकऽ लोटामे रखैत कहैत छथि– "एहि राजमे कोनो काज बेरपर होइत छैक जे रिजल्ट होयतैक ?"

हमरा आश्चर्य होइत अछि । पढ़ुआ कक्काक मुँहसँ अपन राजक विषयमे एहन गप्प ? हमरा नहि रहि होइत अछि, टोकि दैत छियनि– "मुदा पढ़ुआ कक्का, ई तँ अहाँक अपन राज थिक !'

पढ़ुआ कक्का पैघ साँस लैत बजैत छथि– "अप्पन राज अछि, तेँ तँ दुःख अछि । विदेशीसँ अपेक्षे कहाँ छल ? अपेक्षा तँ अछि अपन राजसँ । मुदा कहाँ किछु देखैत छी ! एक युग बीतऽ जा रहल अछि स्वतंत्र भेना, मुदा प्राप्त की भेल अछि ? मात्र मौखिक आश्वासन, कल्हुका सपना । धर्मशास्त्री जेना स्वर्गक लोभमे जनताकेँ परतारैत रहलथिन, तहिना ई नेतासभ काल्हिक सपना देखा जनताकेँ ठकि रहल छथि ।"

–"मुदा पढ़ुआ कक्का, बिन सपना देखने तँ किछुओ नहि उपलब्ध होइत छैक । स्वाधीनताक स्वप्न यदि शहीदलोकनि नहि देखितथि तँ ई स्वतन्त्रता भेटैत ?"

–"से तँ ठीके कहैत छह । सपना देखऽ पड़ैत छैक । ओकरा साकार करबा लेल सभ किछु अर्पण करऽ पड़ैत छैक । सपना तँ हमहूँ देखने रही, अपन सुखो-शान्तिकेँ अर्पण कऽ देने रही । की भेटल ? आइयो ओहिना अशान्त छी । पेट नहि भरैत अछि तेँ बुढ़ारीमे बंसी लेने पोखरिमे बैसल छी, चारियो टा पोठी होयत तँ झोसकऽ काज चलि जायत ।...हे... हे...हे...कतऽ ध्यान छह... तरेड़ा गोतिकऽ लऽ गेलह....छीपह....छीपह... ।

हम हड़बड़ाकऽ छीपि दैत छिऐक । एक टा पोठी पानिसँ ऊपर ऊठि फेर पानियेमे खसि पड़ैत अछि । पढ़ुआ कक्काक मोन उदास भऽ जाइत छनि– "च् च् च्, केहन पैघ पोठा छल !"

हमरा बड़ दुःख होइत अछि । माछ छूटि जयबाक नहि, पढ़ुआ कक्काक टूटि जयबाक । क्रान्ति आ स्वतन्त्रताक गप्प करैत-करैत एकदम पोठी छूटि जयबाक दुःखपर आबि गेल छलाह, आ स्वाधीनता आ त्यागक बात एकदम बिसरि गेल छलाह । ई पढ़ुआ कक्का हमरा लेल अपरिचित छलाह । हम तँ ओहि पढ़ुआ

कक्काकेँ चिन्हैत छलियनि जे क्रांति आ स्वाधीनताक गप्प करैत काल बाँकी सभ किछु बिसरि जाइत छलाह, अन्न-पानि घर-द्वार आ अपनाकेँ बिसरि जाइत छलाह । एक टा पोठी छूटि गेलासँ हताश भऽ जायवला पढ़ुआ कक्कासँ पुरना आशावादी पढ़ुआ कक्काक तुलना करैत हमर मोनमे किछु कचकैत अछि ।

हम एकदम ध्यानस्थ भऽ जल्दी-जल्दी दस टा पोठी मारि दैत छियनि । पढ़ुआ कक्काक आकृति चमकऽ लगैत छनि जेना कोनो भारी दुश्चिन्तासँ मुक्ति भेटि गेल होइनि ! बेर-बेर लोटा हिला-डोला कऽ माछकेँ गनैत छथि । हमर मोन कोनादन करऽ लगैत अछि । हम बंसी पढ़ुआ कक्काकेँ हाथमे दैत कहैत छियनि– "आब जाइत छी कक्का !'

–"जाइत छह ?" पढ़ुआ कक्काक मोन फेर उदास भऽ जाइत छनि– "खूब तँ खा रहल छह तोहर घाटपर ! कनेक काल आर बैसह ने !"

हम पढ़ुआ कक्काक आग्रह नहि सुनैत छियनि । बंसी दऽ घाटसँ ऊपर चल अबैत छी । दिन खसल जा रहल छलैक । सूर्यक गोला खूब लाल-लाल पश्चिममे धधकि रहल छलैक । कनियेँ कालमे ई अस्त भऽ जायत– ठीक पढ़ुआ कक्का जकाँ । हम सोचैत छी आ आङन दिस डेग बढ़बैत छी ।

दरबज्जा लग अबिते एकदम चौंकि उठैत छी । दरबज्जापर रतना बैसल अछि– दू वर्षक बाद । गाम छोड़लाक बाद फेर कहियो ओकरासँ गप्प नहि भेल छल । दूरोसँ देखादेखी नहि । आइ फेर ओकरा बैसल देखि कोनो अनिष्टक आशंकासँ कोँढ़ काँपि जाइत अछि । मुदा शिष्टाचारवश पूछऽ पड़ैत अछि– "कखन अयलेँ ?"

हमर प्रश्नपर ओ उत्साहित भऽ उठैत अछि– "बस्स, आबिए रहल छी । मुदा तोँ तँ अपन एहि अयोग्य दोस्तकेँ एकदम बिसरिए गेलेँ ? हमरासँ गलती भेल, मुदा हम तँ पहिने कहने रहियौक जे हम नीक लोक नहि छी । फेर हमरासँ दोस्ती कयलाक बाद एना मुँह किएक मोड़ि लेलेँ ? फेर ककर बलपर हम सुधरितहुँ ? मुदा तोँ विश्वास कर, तोरा सामने जे ई रतना ठाढ़ छौक से ओ रतना नहि छौक, जकरासँ तोरा घृणा छलौक । ई तँ एक टा नव रतना छौक, ओहन रतना जेहन तोँ चाहैत छलेँ । हमर विश्वास कर, हम झूठ नहि कहैत छियौक ।"

रतना फेर अपन परिचित, नाटकीय अंदाजमे बाजि रहल छल । बेर-बेर अपन माथक केश ऊपर झटकि रहल छल आ हाथसँ गरदनिक हनुमानी चकती

एम्हर-ओम्हर ससारि रहल छल । मुदा आब ओकर जादूक असरि खतम भऽ गेल छलैक । अट्ठारहक वयस आब अपरिचित नहि छल हमरा लेल आ एहि परिचयक संग ओकर खलनायकी व्यक्तित्व आकर्षक नहि, डेराओन आ घृणास्पद भऽ उठल छलैक । हम ओहिना निर्विकार ओकर गप्प सुनैत रहलिऐक ।

ओ फेर बाजऽ लागल– "तोरा विश्वास नहि भऽ रहल छौ हमर बातपर ? एतेक घृणा भऽ गेल छौक हमरासँ ?"

हम ओकर मोन राखऽ लेल कहलिऐक– "नहि-नहि, घृणा किएक करबौक ? छोड़ पुरना बात । कह, परीक्षा केहन भेलौक ?"

ओ फेर उत्साहित होइत बाजल– "एकदम फर्स्ट क्लास यार ! हमर 'सेन्टर'मे खूब छूटि छलैक । सभ टा किताबसँ उतारि देलिऐक । पास तँ करबे करब । तोरा जकाँ फर्स्ट डिवीजन नहि, मुदा 'रॉयल' डिवीजन तँ भेटिए जायत ।"

ओ हँसऽ लागल । ओकर 'रायल' डिवीजनवला बातपर हमरो हँसी लागि गेल । ओ ऊठिकऽ ठाढ़ होइत बाजल– "एखन जाइत छियौक । काल्हि साँझमे अबिहेँ आजाद केबिन दिस । तोँ तँ रस्ते बिसरि गेलेँ ओम्हरुका !"

रतना चल गेल । ओकर निमंत्रणक तखन हम कोनो जवाब नहि देलिऐक । ओकर संग छुटलाक बाद शेखपुरा बजारक बाट हम छोड़ि देने रही । दू वर्ष भऽ गेल छल । मुदा दोसर दिन साँझमे हम अनायास शेखपुरा बजार दिस बिदा भऽ गेलहुँ । दू बरखक पहिलुक स्मृति जोर मारलक आ एक बेर आजाद केबिनक चाह पीबाक इच्छा जबर्दस्ती हमर डेग ओम्हर घिसिआबऽ लागल ।

शेखपुरा बजारक कतेको परिचित आकृति हमरा देखि मुस्किआयल । कतेको नमस्कार कयलक । तरुण बाबू दूरेसँ देखि लपकल अयलाह– "कहिया अयलहुँ गाम ? कुशल छैक ने !"

–"दया अछि अपनेक । अप्पन कहू ?" हम शिष्टाचारवश पुछलियनि ।

तरुण बाबू प्राय: एही प्रश्नक प्रतीक्षामे छलाह, झट शुरू भऽ गेलाह– "अपन की कहू ? अहीँक दोस्त रतना एकदम बेहाल कयने अछि । अहाँकेँ प्राय: बुझल नहि होयत । अहाँक गेलाक बाद हम कतेक मदति कयलिऐक ओकर । रुपैया-पैसा किताब-कौपी– सभ तरहेँ । तकरे बदला दऽ रहल अछि । सौँसे चौराहापर हमर इज्जतिकेँ घिसिया रहल अछि । हमर धीया-पूताक संग अपन नाम जोड़ि हमरा बाट चलब मोस्किल कऽ देने अछि । अहाँक पुरान दोस्त अछि, कनेक बुझा दियौक ।"

हम कोनो आश्वासन नहि दैत छियनि । रतना आजाद केबिनसँ हमरा तरुण बाबू लग ठाढ़ देखि लैत अछि, हाक देबऽ लगैत अछि । तरुण बाबू एक दिस ससरि जाइत छथि । रतना लपकल बाहर अबैत अछि– "चल, केबिनमे चल । कोन अशुद्ध लोकक मुँह लागि गेलेँ अबिते ? की कहैत छलौक ?"

हम ओतहि ठाढ़ कहैत छिऐ– "आर की कहताह, तोरे गुणगान कऽ रहल छलथुन । खूब बदला दऽ रहल छहुन तोँ उपकारक !"

रतनाक आकृति एकदम कठोर भऽ जाइत छैक । हमरा ओ दिन मोन पड़ैत अछि जहिया एहने एक टा प्रसंगपर हमर दोस्ती टूटि गेल छल– अनमन ओहने आकृति, किछु आर कठोर । हमरा दिस ओही दृष्टिएँ तकैत कहैत अछि– "अबिते फोड़ि लेलकौ तोरा । सार, एकदम हरामी अछि । कोनो दिन खून पीबि जयबैक एकर । आ तोहूँ चट सभ बातक विश्वास कऽ गेलहीँ ! कनेक पुछितहीँ जे हमर मदति किएक करैत छल ? ककरा जबर्दस्ती सभ राति अपन बिछौनपर सुतबैत छलैक आ सौंसे देहपर हाथ फेरैत छलैक ? हमहूँ सारकेँ तेहन ने बदला देलिऐक अछि जे जीवन भरि मोन रहतैक !"

हमरा लागल जेना नेनाक दोस्तसँ नहि, एक टा व्यवसायी गुण्डासँ गप्प कऽ रहल होइ । हम पाछाँ घुमैत कहलिऐक– "हम जाइत छी !"

ओ दौड़िकऽ आगू आबि गेल– "चाह पीबिकऽ जो ।"

–"नहि, हम जायब । बाट छोड़ि दे ।"

हम दृढ़तापूर्वक कहलिऐक । ओ बाट छोड़ि देलक ।

पटनासँ असफलता आ निराशाक संग घूरऽ पड़ल । साइन्सक पढ़ाइ रुचिक अनुकूल नहि रहबाक कारणेँ मोन पढ़ब-लिखब दिससँ हँटैत गेल आ मैट्रिकक प्रथम श्रेणी आइ.एस-सी. मे कोनो काज नहि आबि सकल । लज्जित आ पराजित योद्धा जकाँ परीक्षा छोड़ि गाम आबि गेलहुँ । अपन ई असफलता मोनमे शूल जकाँ भोँकऽ लागल आ पढ़ाइक उपेक्षाक परिणाम सामने अयलापर पश्चात्ताप आ ग्लानिक अतिरिक्त आर कोनो उपाय नहि रहल ।

तकर ई अर्थ नहि जे दू वर्षक साइन्स कालेजक पढ़ाइक स्मृति मात्र ग्लानि
आ पराजय-बोध टा छल । ई दूनू वर्ष बड़ उल्लास आ आनन्दसँ कटल छल– उमंग
आ उत्तेजनासँ भरल दू वर्ष । मित्रमण्डलीमे सभ तेहने छल जे सभ बैसि जाय तँ मात्र
हँसी आ आनन्दक आर कोनो चीज अगल-बगल सेहो नहि फटकि सकय ।

एहि मण्डलीमे सभसँ पहिल नाम करुणेशक अबैत छैक । ओहि गम्भीर
आ कठिन आकृतिक पाछू ओतेक हास्य आ सूक्ष्म व्यंग्यक स्रोत बहैत होयतैक से
जानब कठिन छलैक लोकक लेल । हमरो नहि लागल छल । सभ दिन क्लासमे
देखैत छलिऐक । कोनो खास आकर्षण नहि बुझाइत छल । मुदा ओहि दिन जखन
पहिल टरमिनलक कौपी बाँटल गेलैक, अनायास सम्पूर्ण क्लास ओकरा चीन्हि
गेलैक । ओकरा परीक्षामे कोनो प्रश्नक उत्तर नहि अबैत छलैक, मुदा सादा कौपी देब
अपमानजनक लगलैक । खूब बेसी नम्बरसँ पास कऽ आयल छल, झट एक टा पैघ
निबन्ध लिखि गेल सम्पूर्ण कौपीमे– ''महाराज करुणेश कुमारक राज्याभिषेक !''
शिक्षक महोदय ओकरा 'वार्निंग' दैतो काल हँसने बिना नहि रहि सकलाह ।

ओकरो हमरेवला बीमारी छलैक, विषयक प्रति अरुचि । फैशन आ चौतरफा
दबाबमे ओहो साइंस लऽ लेने छल, मुदा मोन ओकरा साहित्य आ दर्शनक पुस्तक
पढ़ऽमे लगैत छलैक । हमरा दुनू गोटेक दोस्ती अनायास मजगूत होइत चल गेल ।

एक दिन ओ होस्टल भेट करऽ आयल । आग्रह कयलिऐक तँ भोजनपर
बैसि गेल आ खयबामे हमरासँ बाजी लगा बैसल । हमर खोराक सामान्यसँ अधिक
अछि । मुदा पराजय स्वीकार करब ओकर स्वभावमे नहि छलैक, जिद्दमे खाइत चल
गेल । ओकर क्षीण काया देखि सभक आँखिमे विस्मय आ आश्चर्यक भाव पसरि
गेलैक । ओकर तीक्ष्ण दृष्टिमे ओ भाव आबि गेलैक । झट बाजल– ''अहाँसभकेँ
आश्चर्य किएक भऽ रहल अछि ? हम एक बेरक खिस्सा कहैत छी । हम एक टा
डाक्टरसँ खून जाँच कराबऽ गेल रही । डाक्टर स्लाइडकेँ माइक्रोस्कोपसँ देखलक
तँ देखिते रहि गेल । कनेक काल बाद आश्चर्यसँ मूड़ी उठाकऽ बाजल– ''अहाँक
खून तँ विचित्र अछि ! ने आर.बी.सी. ने डब्लू.बी.सी. । खाली भात दालि तरकारी
भरल अछि ।''

सभकेँ हँसी लागि गेलैक । ओकर प्रत्युत्पन्नमतिक प्रशंसा सभकेँ करऽ
पड़ैत छलैक । मुदा ओकर 'विट', ओकर तीक्ष्ण बुद्धि, किछुओ संग नहि दऽ
सकलैक । ओकरो परीक्षा छोड़ऽ पड़लैक ।

मित्रमण्डलीमे दोसर नाम आनन्दक अबैत अछि । क्लास छोड़ि 'देवानन्दके

सिनेमा देखब आ होटलमे बैसि डोसा-कचालू खायब ओकरा पसिन्न छलैक । हमहूँ संग दैत छलिऐक । देखबा-सुनमामे बड़ सुन्नर छल, तेँ एक टा अतिरिक्त बीमारी छलैक । प्रत्येक तेसरा दिनपर एक टा प्रेम भऽ जाइत छलैक । कखनो ककरो नाम हाथपर खोधबा लैत छल, तँ कखनो रुमालपर ककरो नाम लिखि छातीसँ सटने रहैत छल । प्रत्येक बैसकीमे ओकर कोनो नवीनतम प्रेम-समस्याक समाधान हमरालोकनिकेँ ताकऽ पड़ैत छल । मुदा एक बेर पैघ आफत आबि गेल । आनन्दक सूचीमे सभसँ नव नाम जे छलैक ताहिसँ मित्र मण्डलीमे कपरफोड़ौअलिक स्थिति आबि सकैत छलैक । आनन्दक घोषणाक अनुसार ओकर नवीनतम प्रेमिका रमणक जेठकी बहिन छलैक । रमण डंटासँ आनन्दक कपार फोड़बा लेल तैयार छलैक मुदा ओकर बहिनकेँ पता लागि गेलैक । ओ आनन्दकेँ चिन्हैत छलैक । रमणकेँ आ हमरा बजाकऽ कहलक– 'तोँ लोकनि अनेरे मारि-पीट लेल उद्यत छेँ ! दस दिन थम्हि जो, ओकर सूचीसँ हमर नाम उतरि जायत । ओकरा ककरोसँ प्रेम नहि छै, ने होयतैक । ओकरा तँ प्रेमिकाक एकटा पैघ सूची चाहिऐक जकरा ओ कोनो प्रदर्शनक वस्तु जकाँ सभकेँ देखा-सुना सकय ।'' सत्ते, दोसर सप्ताह आनन्दक सूचीमे दोसर नाम आबि गेलैक– 'प्रीति बनर्जी ।'

रमण एहि मण्डलीमे सभसँ संयत आ व्यवहार-कुशल छल । क्लास ओ छोड़ैत छल, सिनेमोमे संग भऽ जाइत छल, गंगाक चक्कर सेहो लगा अबैत छल, मुदा ओकरा वस्तुत: एहि सभमे बेसी मतलब नहि छलैक । ओकर रुचि छलैक राजनीतिमे । बेसीसँ बेसी लोकक परिचय आ सद्भाव प्राप्त करब ओकरा पसिन्न छलैक आ ओहिमे ओकरा सफलतो भेटैत छलैक ।

मुदा परीक्षामे ओकरो असफलते भेटलैक । आनन्द परीक्षो ने दऽ सकल । मुदा रमणक बाप पैघ डाक्टर छलैक आ आनन्द छल आइ.ए.एस.क बेटा । बीचमे एक टा गरीब, एक टा शिक्षकक बेटा हम फँसि गेल रही । करुणेश सेहो घरक सम्पन्न छल । बाबू हमरा बड़ मानैत छलाह, ककरोसँ कम ठाठ नहि रहैत छल हमर । मुदा घरक असली हालत तँ नुकायल नहि छल हमरासँ ।

परीक्षा छोड़लाक बाद हमरालोकनि एक-दोसरसँ नुकाइत रहलहुँ । सभ दिन अपन असफलताक लेल एक दोसरकेँ उत्तरदायी मानि रहल छल मोने-मोन । मात्र रमणपर आशा छल, ओकरो परिणाम प्रतिकूले भेलैक । एहन परिस्थितिमे गाम जायब छोड़ि आर कोनो उपाय नहि रहल । परीक्षा छोड़लाक बाद गाम जयबासँ डेराइत रही– बाबूजीकेँ कोना मुँह देखयबनि ? मुदा पटनामे आर रहबाक कोनो बहाना नहि छल । बोरिया-बिस्तर लऽकऽ गाम चल अयलहुँ ।

अयला कतेको दिन बीति गेल छल । मुदा बाबू किछुओ नहि पूछि रहल छलाह । हुनक चुप्पी हमर अपराधबोधकेँ आर बढ़ा रहल छल । माय खाली नोर खसा बाजलि– ''कतेक आस छल तोरासँ !''

एक दिन हमहीँ साहस कऽ बाबू लग ठाढ़ भऽ गेलहुँ– ''हम आब साइंस नहि पढ़ब । मोन नहि लगैत अछि । प्राइवेटसँ आइ.ए. देब ।''

बाबू किछु नहि बजलाह । मात्र एतबे कहलनि सभ टा सुनलाक बाद– ''बेस, आर्टो कोनो बेजाय नहि । जाहीमे मोन लागह, सैह करह ।''

मुदा बाबूक टूटल हृदयक अनुमान ओहि दिन लागल छल जहिया महेन्द्र आबि गोड़ लगने छलनि । महेन्द्र गामक स्कूलमे हमरे संग पढ़ैत छल, कहियो हमरासँ बेसी नम्बर नहि अबैत छलैक । ओ आइ.एस-सी. फर्स्ट डिबीजनमे पास कयने छल । इंजीनियरिंग कालेजमे नाम लिखा आयल छल । ओकर चमकैत ब्लेजरपर बाबूक दृष्टि अँटकि गेल छलनि आ आशीर्वाद दैत काल आँखि डबडबा गेल छलनि । हम लगमे ठाढ़ ई सभ देखने छलियनि आ लज्जा तथा अपराध-बोधसँ गरदनि झुकि गेल छल । ओही दिन मोनमे संकल्प कयने रही जे बाबूक आँखिमे डबडबाइत नोरकेँ चमकैत हँसीमे बदलऽ पड़त ।

मुदा गाममे सभ ठाम हमर असफलता आ अकर्मण्यताक डिगडिगिया पिट रहल छल । सान्त्वना वा सहानुभूति देनिहार क्यो नहि । मात्र अपमानजनक उक्ति प्रत्येक तेसरा दिन कानमे पड़ि जाय– ''बुड़िया गेलथिन मास्टर साहेबक राजकुमार। बेसी दुलार कयलासँ यैह होइत छैक । 'सेन्स' छोड़ि देलथिन । गामसँ प्राइवेट देथिन आ मास्टरे साहेब जकाँ कतहु मास्टरीमे लागि जयताह ।''

सुनियोकऽ कतेक बेर अनठाबऽ पड़ल । उपाये कोन छल ? हारल व्यक्तिकेँ बजबाक अधिकार नहि होइत छैक । हम बेसी काल घरेमे नुकायल रही ।

नहि जानि कोना रतनाकेँ पता लागि गेलैक । एक दिन घरपर पहुँचि गेल– ''एना नुकायल किएक रहैत छेँ ? घरसँ बाहर आ । फेल कऽ गेलेँ तँ की भेलैक ? फेर पास भऽ जयबेँ ।''

ओकर सहानुभूति हमर जरल मोनपर नोन सन लागल । हम किछु जवाब नहि देलिऐक । ओ एकदम मित्रतापूर्वक बाजल– ''छोड़ ई घरघुसना प्रवृत्ति । चल हमर गाम चल । अपन भौजीसँ भेट नहि करबेँ ?''

हमरा मोन पड़ल जे परुकाँ रतनाक विवाह भऽ गेल छलैक । पटनेमे सुनने रही । ओकर आग्रहकेँ टारैत कहलिऐक– ''आइ नहि, फेर कहियो ।''

रतना फेर बहुत दिन निपत्ता रहल । मुदा लगभग दू मास बाद एक दिन तमतमायल आबि हमरा लगमे बैसि गेल– ''हम ओकर खून कऽ देबैक !''

हम एहि अप्रत्याशित घोषणासँ चौंकैत कहलिऐक– ''ककर ?''

रतना ओहिना तमतमाइत बाजल– ''आर ककर ? ओही कमीनाक ! कहितो लाज होइत अछि जे ओ कमीना हमर बाप थिक । आइ चेथड़ी कऽ लाशकेँ गामक चौराहापर टाँगि देबैक !''

रतनाक जीवनक ततेक रास विचित्रतासँ हमर परिचय रहल अछि जे ओकर कोनो बातसँ हमरा आश्चर्य नहि होइत अछि । मुदा आइ जेना दनादन गारि दैत अपन बापक सम्मान कऽ रहल छल, ताहिसँ किछु आश्चर्य भेल । ओकरा शान्त करबाक उद्देश्यसँ कहलिऐक– ''केहन गप्प करै छेँ ! होशमे आ !''

ओ अपन परिचित नाटकीय अन्दाजमे बाजल– ''होश बाँकी कहाँ अछि दोस्त ? ओ कमीना काजे तेहन कयलक अछि ! आब तोरा कोना कहियौ ? कोना कहियौ जे हमर बाप हमर स्त्रीकेँ भोगऽ चाहैत अछि ?''

हम एकदम सन्न रहि गेलहुँ । ई बात एकदम अप्रत्याशित छल । ओकरा डँटैत कहलिऐक– ''की अण्ट-सण्ट बाजि रहल छेँ ? तोरा लाज होयबाक चाहियौक ।''

–''लाज तँ होइत अछि दोस्त ! मुदा अपनापर नहि, ओहि कमीनाक काजपर । हम दू दिन लेल बाहर गेल रही, मायो नैहर गेलि छलि । बस्स, मौका भेटि गेलैक । लागल एक राति पुतोहुक घर पैसऽ । ओ बाहर निकालि देलकैक तँ भरि राति केबाड़ पीटैत रहल आ ओ बेचारी डरेँ थरथर करैत रहलि । आइ हमर अयबाक खबरि सूनि कोम्हरो भागि पड़ायल अछि । मुदा भागिकऽ जायत कतऽ ? काल्हि भोरे सभ देखतैक चौराहापर टाङल ओकर लाश ।''

बजैत-बजैत ओकर साँस फूलऽ लगलैक । कारी चेहरा तमतमाकऽ ललाओन भऽ गेलैक आ नाकक पूड़ा फलकऽ लगलैक । आङुर हाथक कड़ापर सक्कत भऽ गेलैक आ गरदनिक चकती फुलैत साँसक संग ऊपर-नीचाँ करऽ लगलैक । ओ घृणासँ ठोर उनटिकऽ तमाकूसँ पचपचाइत मुँहसँ एक बेर 'पिच्च' दऽ बाहर थुकलक आ ऊठिकऽ ठाढ़ होइत बाजल– ''एखन जाइत छियौक ।''

हमर किछु कहबासँ पूर्व ओ बाहर जा चुकल छल । हमरा आशंका भेल जे आइ कोनो काण्ड भऽकऽ रहतैक । हमर डेरायल दृष्टि ओकर अनुसरण कयलकै ।

हमरा ई देखि आश्चर्य भेल जे एहि तमसायलो हालतिमे ओ अपन परिचित 'स्टाइल'मे चलल जा रहल छल— दुनू पंजापर बेराबेरी झुलैत आ माथपर लटकि आयल केशकेँ बेर-बेर ऊपर झटकैत ।

हमरा हँसी लागि गेल ।

एहि बेर पटनामे बहुत रास परिवर्त्तन भेटैत अछि ।

आनन्द नहि अछि, ओ आइ.एस-सी. कहुना पास कऽ गेल छल मुदा ओकर बापक बदली कलकत्ता भऽ गेल छलैक आ ओ चल गेल अछि । ओतहि सेन्ट जेबियर्स कालेजमे नाम लिखौने अछि । एक दिन होस्टलमे आबि गेल छल, संगमे एक टा बंगाली छौंड़ा छलैक । दुनू रहल दू दिन । दुनूक अयबाक उद्देश्य बादमे बुझबामे आयल । कलकत्तामे ओकर प्रेमिकाक सूची आर पैघ भऽ गेल छलैक, तकर सुनाबऽ आयल छल । प्रायः ओकरा सन्देह छलैक जे हमरालोकनि अविश्वास करबैक, तेँ एक टा गवाही संग लेने आयल छल । दुनू गोटेक कलकत्ता विशेष कऽ रमण । घूरि गेलाक बाद हमरा कतेक दिन धरि ओकर यात्राक उद्देश्यपर हँसी लगैत रहल । ओ एहू बे

मुदा करुणेशकेँ देखि कानऽ-कानऽ सन मोन भऽ गेल । असफल भऽ गेल छल । हमरा नाम लिखौला कतेक दिन भऽ गेल मुदा ओकरासँ भेंट नहि भेल । डेरोपरसँ कतेक बेर घूरि अयलहुँ– हरदम ताला लटकल । ओकर परिवारक लोकसभ गाम चल गेल छैक, डेरामे ओ एकसर रहैत अछि– से पता लागि गेल छल । एक दिन खूब राति बितलापर केबाड़ खटखटौलिऐक । कोनो उत्तर नहि । हम लगातार बड़ी काल धरि पीटैत रहलिऐक । तखन ककरहु ओंघायल सन स्वर आयल–"के ?"

आ कनेक काल बाद दरबज्जा खूजल । भीतर एकदम अन्हार, किछु देखा नहि पड़ल । तखन क्यो दियासलाइ खड़रिकऽ हमरा मुँह दिस उठौलक आ चौंकि बाजल–"तोँ छेँ ? आ भीतर आ ।"

मुदा हम करुणेशकेँ ओहि क्षणिक इजोतमे नहि चीन्हि सकलिऐक । दर्

बढ़ल, आँखि धँसल, केश ओझरायल आ कपड़ा-लत्ता एकदम मैल । ओ दू-तीन टा काठी खड़रि हमरा बाट देखौलक । कहुना एक टा चौकी लग पहुँचि बैसि गेलहुँ । फेर एकदम अन्हार भऽ गेल । मात्र छाया टा देखि सकैत छलिऐक । दुनू गोटे मौन अन्हारमे बैसल रही ।

अन्तमे मौन तोड़ैत ओ बाजल–"कहैत किएक ने छेँ, जे कहऽ आयल छेँ ? मुदा हम जनैत छियौक । अखबार हमहूँ पढ़ने रही, फर्स्ट डिवीजनसँ पास भेल छेँ । आरो किछु कहबाक छौक ?"

हम दुःखसँ बौक भऽ जाइत छी । हमर अयबाक ई अर्थ छैक ओकर दृष्टिमे ? हम उठैत कहलिऐक–"जाइत छी ।"

ओ अन्हारेमे हाथ पकड़ि लेलक–"अधलाह लागि गेलौक ? माफ कर भाइ ! मुँहे खराप भऽ गेल अछि । कोनो सोझ कथा बहराइते नहि अछि ।"

हम बैसि जाइत छी । मोन कोनादन करऽ लगैत अछि । एकदम भरभरायल स्वरमे पुछैत छिऐक–"ई की हाल बनौने छेँ ?"

ओ फेर कटु भऽ जाइत अछि–"बस-बस, आगू नहि, ई नहि चाही । ई दया आ सहानुभूति नहि चाही । कोनो आर गप्प कर ।"

हम फेर चुप्प भऽ जाइत छी । ओ अन्हारमे किछु गीड़ैत अछि पानिक संग— प्रायः कोनो गोली । कनेक काल मौन रहलाक बाद स्वाभाविक कोमल स्वरमे पुछैत अछि–"अयलाक पश्चात्ताप होइत होयतौक ?"

–"नहि-नहि, पश्चात्ताप किएक होयत ? खाली दुःख भऽ रहल अछि । कहियो सोचनहुँ नहि रही जे तोरा एहि हालमे देखबौक ।"

–"हमहूँ कहाँ सोचने रही शंकर ! कहाँ सोचने रही जे कहियो जीवनमे एतेक अन्हार भऽ जायत ? कहाँ सोचने रही जे अन्हारे हमर नियति भऽ जायत आ प्रकाशसँ डर होबऽ लागत ? मकानक काटल लाइन तँ लागि सकैत अछि मुदा ताहिसँ मोनमे इजोत होयत ? तेँ छोड़ि देने छिऐक– एकाकार कऽ देने छिऐक– बाहर-भीतर सभ– अन्हार । आ निन्न ! मुदा सेहो कहाँ होइत अछि ? नहि जानि की सोचैत रहैत छी अन्हारमे टकटकी लगौने ? आब तँ गोलियो सभ काज नहि करैत अछि ।"

हम ओकरा बुझबैत कहलिऐक— "मुदा तेहन कोन अन्हेर भऽ गेलैक

अछि दुइए बर्षमे ! जाय दही । फाड़ि दे रद्दी पन्ना जकाँ जीवनक ई दू वर्ष, ई साइंसक झंझट आ दऽ दे प्राइवेटसँ आइ.ए. । अबस्से नीक रिजल्ट होयतौक ।"

ओ फेर कटु भऽ उठल– "परामर्शक हेतु धन्यबाद । प्रत्येक सफल व्यक्तिकेँ परामर्श देबाक अधिकार होइत छैक । ओना तँ ई बात हमहूँ सोचि सकैत छी । मुदा नहि, असफल लोककेँ सोचबोक अधिकार नहि होइत छैक ।"

–"एक टा बात कहैत छियौक करुणेश ! असफलता जीवनमे हमरो भेटल अछि, ओकर क्लेशसँ हम परिचित छी । मुदा ओहिमे हमरा अपन-आनमे अन्तर करबाक विवेक बाँकी छल ।" एहि बेर हमहूँ कटु होइत कहलिऐक ।

ओ हँसऽ लागल । ओहि अन्हारमे ओकर ओहि हँसीमे हमरा कोनो टूटल शीशाक झनझनाहटि लागल । हँसिते बाजल–"तोँ ठीक कहैत छेँ । हम अविवेकी आ दुराचारी भऽ गेल छी । आब नीक लोककेँ हमरा संग चलबोमे लाज होइत छैक । तोँहू भागि जो अन्हारेमे, क्यो देखि लेतौक ।"

ओ बिछौनपर मुँह झाँपिकऽ पड़ि रहैत अछि । देह हिलैत छैक– नि:शब्द । हमरा बुझबामे नहि अबैत अछि जे ओ हँसि रहल अछि वा कानि रहल अछि । फेर लगैत अछि जे दुनूमे कोनो अन्तर नहि छैक करुणेशक हेतु । हमरा अपन उपस्थिति अकारण आ उपेक्षित बुझाइत अछि । भारी डेगे आ भारी मोन लेने हम ओहि अन्हार घरसँ चल अबैत छी ।

रमणकेँ देखलासँ लगैत अछि जे पटनामे किछुओ नहि बदलल छैक । ओहिना हँसमुख आ मिलनसार । मेडिकल कालेजमे आबि गेल अछि । अपन क्लाससँ छुटलापर बाँकी समय रमणक संग नीक जकाँ कटि जाइत अछि ।

आ रमणक संगमे एहि बेर बहुत रास नव तथ्यक ज्ञान होइत अछि । बहुत रास एहन बात जकरा हम देखियोकऽ नहि बुझैत छलिऐक, आस्ते-आस्ते ओकर अर्थ खूजऽ लगैत अछि हमरा समक्ष ।

रमणकेँ राजनीतिमे खूब रुचि छैक । पहिनो छलैक । मुदा आब ओ सक्रिय

भाग लेबऽ लागल अछि । छात्र-यूनियनक काउन्सिलरक पदक हेतु उमेदवार भऽ जाइत अछि । हमरा राजनीतिमे, खाहे कोनो स्तरक हो, कोनो रुचि नहि छल । मुदा रमणक खातिर प्रचारमे घूमऽ पड़ैत अछि, मीटिंग आदिमे सम्मिलित होबऽ पड़ैत अछि ।

पहिले मीटिंगमे एक टा नव गप्प सुनबामे अबैत अछि हमरा । एक टा नेता ठाढ़ भऽ बाजऽ लगैत अछि–"हमरा सामने हमर बैकवार्ड छात्रबंधुक समस्या अछि । हम हुनक पाँच सय वोट अहाँकेँ देआय सकैत छी, यदि अहाँ हुनक हितक रक्षाक आश्वासन दी ।"

हमरा ई बात बड़ विचित्र लागल । हम किछु कहऽ जा रहल छलिऐक, रमण हाथ दबा फुसफुसाइत बाजल–"चुपचाप सुनैत जो । बैकवार्डक हितक माने बुझैत छहिक, एकरो एक टा सीट चाहिऐक, ई वाइस-प्रेसिडेण्ट लेल ठाढ़ होयत ।"

तहिना राजपूत नेता, कायस्थ नेता, ब्राह्मण नेता, यादव नेता सभ बाजि गेल। छात्र नेता एक्को टा ठाढ़ नहि भेल । सभ अपन-अपन वर्ग-विशेषक हितक रक्षाक गप्प कयलक, माने सभकेँ एक-एक टा सीट चाहिऐ कार्यकारिणीमे ।

हमर मोन अकच्छ भऽ गेल पहिले मीटिंगमे । रमण हमर कछमछी देखि रहल छल । बाहर अयलापर बाजल–"तोँ बोर भऽ रहल छलेँ ? मुदा सूनऽ पड़ैत छैक, सामाजिक क्षेत्रमे उतरलापर सभक बात सूनऽ पड़ैत छैक । आ सभ राजनीतिमे भितरिया बात एतबे रहैत छैक । ई छात्र-राजनीतिक अपन प्रान्तीय राजनीतिक एक टा छोटछीन रूप छौक । ओहू ठाम यैह होइत छैक–"सभक आधार जाति ओ गुट । जनताक हित आ आदर्शक गप्प मंचे टा पर होइत छैक, अंत:पुरक बैसकमे तँ यैह हिसाब-किताब आ जोड़-तोड़ होइत छैक ।"

रमणक बातमे यथार्थता छैक । मुदा ओ यथार्थवाद हमरा प्रीतिकर नहि लगैत अछि । हम एखनो आदर्शवादी रही— उदात्त भावनामे भसिआइत एहन संकीर्णताक गप्प हमरा नहि रुचैत अछि ।

रमण हमर अरुचिकेँ बूझि जाइत अछि, मुदा रुकैत नहि अछि । कहिते जाइत अछि–"तोरा प्राय: बूझल नहि होयतौक जे ई छात्र-राजनीति सेहो प्रन्तीय आ राष्ट्रिय नेता द्वारा संचालित होइत छैक । प्रत्येक नेताकेँ बेर-कुबेरमे हल्ला-फसाद, हड़ताल-हंगामा आदि लेल किछु समर्थक चाहिऐक । छात्र-राजनीतिमे हस्तक्षेप कयलासँ ओकरा ओहन व्यक्तिक समर्थन भेटि जाइत छैक । तेँ देखि ले, एही यूनियन-चुनावमे बैकवार्ड उमेदवार लेल बैकवार्ड नेतासभक गाड़ी घूमि रहल छैक

आ अन्य जातिक उमेदवार लेल ओहि जातिविशेषक मंत्रीक कार । एतेक खर्च जे भऽ रहल छैक एहि चुनावमे से बुझल छौक कतऽसँ अबैत छैक ? विद्यार्थी लग एतेक टाका कतऽसँ औतेक ? काल्हिए हमरासभकेँ एक टा मंत्रीसँ एक हजार टाका भेटल अछि एहि चुनाव लेल ।

रमण जे कहि रहल छल तकर अनुमान एकदम नहि छल हो हमरा, से नहि । मुदा जाहि नग्न रूपमे ओ ओकरा राखि रहल छल आ जतेक प्रामाणिक ढंगसँ ओ कहि रहल छल, तकर बाद ओहिपर अविश्वासक कोनो प्रश्न नहि छल ।

रमण आगू कहऽ लागल–"खाली विद्यार्थिए टा किएक, शिक्षक-प्राध्यापक वर्गमे सेहो सैह हाल छैक । ओकरो आधार जाति । ब्राह्मण परीक्षक होयतौक तँ तोरा बेसी नम्बर देतौक । मुदा ताहू लेल ओकर डेराक चक्कर लगाबऽ पड़तौक, बेर-कुबेर बजारसँ तर-तरकारी खरीद कऽ आनि देबऽ पड़तौक । से नहि कऽ रहल छेँ, तँ भविष्य खतरामे छौक । अपन प्रियपात्रकेँ शिक्षकगण पहिने सभ टा प्रश्न 'आउट' कऽ दैत छथिन, तैयो नहि सम्हरलैक तँ कापीमे जोड़-तोड़ । तेँ तँ तोरो कहैत छियौक जे आयल-गेल कर । एक्जामिनर के सभ होयतौक से तँ बुझले होयतौक ?"

रमण जीवनमे सफल होयत, ताहिमे ओहू दिन हमरा कोनो सन्देह नहि छल । मुदा ओकर परामर्श हम नहि मानि सकलिऐक । क्लासक अतिरिक्त कहियो कोनो शिक्षकसँ कोनो सम्पर्क नहि रहल ।

रमण काउन्सिलर चुना गेल । अगिला वर्ष छात्र-संघक प्रेसीडेण्ट सेहो भऽ गेल । सफलता ओकर बोलीमे छलैक, व्यवहारमे छलैक । अपन भविष्यक प्रति ओ सभ दिन आश्वस्त छल ।

मुदा जेना-जेना परीक्षा लग अबैत गेल, हम आशंकित होइत गेलहुँ । ओ गप्प फेर पटनासँ पछिला बेर बड़ अपमानित आ असफल भऽ घुरल रही । मुदा परीक्षा लग दोहरयबाक नहि चाही । हम मोने-मोन दृढ़संकल्पित रही । कौखन अपनापर अयलापर एक टा डर पैसि गेल । रमणक गप्प मोन पड़ऽ लागल । कौखन अपनापर तामस होअय जे किएक ने रमणक बात मानि प्राध्यापक लोकनिक डेराक चक्कर लगौलहुँ ? एहि 'स्पेशल पेपर' लेल कोनो तैयारी नहि छल, ओना आर सभ पेपरमे अपना पूरा विश्वास छल । मुदा निर्णायक तँ वैह 'स्पेशल पेपर' होयत, से बूझल छल । परीक्षा निकट अयलापर आर नीक जकाँ बुझा रहल छल । 'डिप्रेशन' बड़ बढ़ि गेल । सभ टा पढ़लो बिसरऽ लागल, घचपच होबऽ लागल एक-दोसरमे । रमणकेँ कहलिऐक । ओ एक टा डाक्टर लग लऽ गेल । किछु दवाइ देलक । किछु कम

भेटल, डिप्रेशन किछु कम बुझायल । हम मोने-मोन भगवानसँ प्रार्थना करऽ लगलहुँ जे कहुना ई संकट टरि जाय, परीक्षा भऽ जाय आ पुरान गप्पक पुनरावृत्ति रोकल जा सकय । खाहे जेना हो ।

भगवान हमर प्रार्थना सूनि लेलनि ।

आनन्द फेर पटने आबि गेल । रिजल्टसँ पहिने ओकरा एक टा पैघ फर्ममे सेल्स मैनेजरक नोकरी भेटि गेल छलैक । नीक दरमाहा, फ्री फर्निश्ड क्वार्टर, टेलीफोन आ कार । देखिकऽ ककरो ईर्ष्या भऽ सकैत छलैक । मुदा हमरा पतो नहि छल ।

परीक्षा भऽ गेल छल, तेँ निरुद्देश्य बौअयबाक अतिरिक्त कोनो काज नहि छल । एक दिन एहिना सड़कपर बौआइत काल, पटना मार्केट लग आनन्दसँ भेंट भऽ गेल छल । ओ गाड़ीमे बैसऽ जा रहल छल । हमरा देखलक तँ थम्हि गेल— "की रे ! की हाल छौक ?"

–"अपन सुना । बेस चकचकी देखि रहल छियौक ?"

हम ओकर मोटर दिस देखैत कहलिऐक । मोटर दिस देखलापर ध्यान गेल जे अगिला सीट-पर एक टा युवती सेहो बैसलि छैक– उन्नैस-बीसक वयस, कारी रंग, मांसल देह, आँखिपर चश्मा आ मुँह-कान रङल-ढौरल । लक्षण हमरा नीक नहि बुझायल ।

आनन्द हमरा मोटर दिस तकैत देखि बाजल–"कम्पनीसँ भेटल अछि, क्वार्टर, टेलीफोन आदि सभ किछु । आ ने कहियो डेरापर । ई ले हमर कार्ड ।" आनन्द हमरा हाथपर कार्ड राखि 'टाटा' करैत गाड़ी स्टार्ट कऽ देलक । हम ठाढ़े रहि गेलहुँ । हमरा लागल जेना कतहु-किछु अपरिचित सन होअय । ई आनन्द, कार्ड दऽ निमंत्रण देबऽवला आनन्द तँ हमर परिचित नहि छल । नहि जानि कहियासँ एहि शहरमे अछि । कलकत्तासँ आबि, हमर होस्टलमे रुकनिहार आनन्द तँ ई कथमपि नहि छल । हम बड़ी काल धरि अपन तरहत्थीपर पड़ल ओहि कार्डकेँ उनटबैत-पुनटबैत रहलहुँ जाहिपर लिखल छलैक– ए.के. झा, सेल्स मैनेजर ।

हम ओही गुनधुनमे लागल रहितहुँ मुदा हमर पीठक पाछू होइत चर्चा हमर ध्यान तोड़ि देलक–"ओहि गाड़ी महँक युवतीकेँ चिन्हलेँ ?" एक टा विकृत पुरुष-स्वर ।

–"अरे चिन्हबैक किएक ने ? एकरा के नहि चीन्हैत छैक ? सोसायटी-गर्ल । एक रातिक पचास टाका, आइ गाड़ीवला छौंड़ाक चानी छैक"–दोसर विकृत स्वर ।

हमरा घूमिकऽ पाछू देखबाक इच्छा नहि भेल । बजनिहार क्यो भऽ सकैत अछि । एहिसँ तथ्यमे कोनो अन्तर नहि पड़तैक । ओकर आकृतिए देखिकऽ किछु-किछु आभास हमरा भेटि गेल छल ।

मुदा दुःख हमरा एहि बातक नहि छल जे आइ ओकर गाड़ीमे एक टा बजारू छौंड़ी छलैक । युवती सभक प्रति ओकर दुर्बलता सभ दिनसँ छलैक । कोनो एहन-ओहन छौंड़ीक संग जीवन भरि हेतु बन्हा जाय तँ कोनो आश्चर्य नहि । मुदा आश्चर्य आ दुःख तँ एहि बातक छल जे आइ एतेक दिनपर भेँट कयलापर आनन्द हाथमे मात्र एक टा औपचारिक कार्ड दऽकऽ चल गेल । एही शहरमे एतेक दिनसँ रहिकऽ आइ धरि भेंट नहि कयलक ।

मुदा आनन्दक व्यवहारपर दुखित होइत काल एकाएक करुणेश मोन पड़ल । ओहो तँ एही शहरमे अछि । आइ एक वर्षसँ एक्को बेर ओकर खबरि लेलिऐ हम ? रमणो नहि गेल होयतैक प्रायः ? हमरा अपन एहि व्यवहारपर लाज होइत अछि आ तुरत करुणेशक घर दिस बिदा होइत छी ।

ओकर घरमे पयर दैत काल संकोच होइत अछि । मुदा डेरामे भीड़भाड़ देखैत छिऐक । ओकर माय-बाप, दुनू जेठ भाय सभ उपस्थित । सभक आकृति क्लान्त आ हताश । हम भयभीत होइत पुछैत छिऐक– "करुणेश कतऽ अछि ?"

ओकर माय हमरा दिस तकैत कहैत अछि–"तोरा किछु ने बुझल छौक ? आ, हमरा संग आ !"

हम हुनक संग दोसर कोठलीमे अबैत छी । एक टा चौकीपर करुणेश पड़ल अछि, दाढ़ी किछु आर बढ़ल, शरीर किछु आर कृश, मुदा आँखि एकदम भकभक जरैत जेना कतेक रातिसँ सूतल नहि होअय । हमरा देखिते जोरसँ अट्टहास करैत अछि–"आबि गेलेँ ! एकसरे किएक आयल छेँ ? तोहर ओ डाक्टर कतऽ गेलौ ? आ सेल्स मनेजर साहेब ? सभक संग किएक ने अयलेँ ?'

हमरा आश्चर्य होइत अछि ओकर बातपर । जे बात हमरा आइ धरि नहि

बुझल छल, सेहो एकरा बुझल छैक । कहैत छिऐक–"ओहो सभ औतौक मुदा तोँ किएक एना भेल छेँ ?"

–"से एकरासँ पुछही" । इह, नोर कोना चुबा रहल अछि जेना सत्ते दुःख होइ ! बड़ दुःख छौक तँ आ खोल हमर हाथ-पयर । खाली नोर चुबौलासँ नहि मानबौक ।" ओ अपन पयरकेँ जोरसँ झटकारलक आ तखन हमर ध्यान गेल जे ओकर हाथ-पयर बान्हल छैक । एक बेर गौरसँ ओकर आकृति देखलिऐ । भकभक जरैत आँखि । सभ टा स्पष्ट भऽ गेल ।

हमरा अपन बान्हल हाथ-पयर दिस देखैत देखि ओ फेर जोरसँ हँसल–"यैह देखऽ आयल छेँ, देखि ले ? बताह भऽ गेल छी हम । हाथ खोलबेँ तँ तोरा हबकि लेबौक । भाग, जल्दी भाग एतऽसँ ।''

हमरा ओहि कोठलीमे ठाढ़ नहि रहि होइत अछि । दोसर कोठलीमे आबि जाइत छी । करुणेशक बाप-भाइक बीच अपराधी जकाँ ठाढ़ रहैत छी । लगैत अछि जेना करुणेशक एहि हालक हेतु आंशिक अपराधी हमहूँ छी । हमसभ मिलि ओ दुनू साल नष्ट कयने रही । ओ क्षति हमरालोकनि भरि लेलहुँ, मुदा करुणेश ओकरा भरबाक चेष्टामे टुटैत गेल । अपनाकेँ बिसरबाक चेष्टामे टेबलेट आदिक मदति लैत रहल । मुदा ओ ओकरा आर तोड़ैत चल गेलैक आ एक टा खण्डित व्यक्तित्वक झनझनाहटिसँ आइ ई सम्पूर्ण घर झनझना रहल छैक । हमर मोनमे सेहो वैह झनझनाहटि पैसि जाइत अछि आ सम्पूर्ण शरीरकेँ सुन्न कयने चल जाइत अछि । बड़ी काल अवसन्न ओहि कोठलीमे बैसल रहैत छी ।

फेर साहस कऽ ओकर कोठलीमे जाइत छी । ओ हाथसँ आँखि मुनने पड़ल अछि । हमरा लग जयबाक साहस नहि होइत अछि । ओ आँखिपरसँ हाथ हटबैत अछि–"आ, हमरा लग आ । डर किएक होइत छौक हमरासँ ? हम तँ असमर्थ लोक छी, तोँ सभ सामर्थ्यवान छेँ । फेर हाथो-पयर बान्हल अछि । डेरा जुनि, लग आ ।" करुणेशक स्वर बदलल छैक ।

हम ओकर सिरमामे बैसि जाइत छिऐक । लगैत अछि जेना ओकर आँखिमे बहुत-किछु डगडग कऽ रहल छैक । हम ओम्हर ताकऽ चाहैत छिऐक तँ ओ झट आँखि बंद कऽ बजैत अछि–"तोरा लोकनिक कोनो दोष नहि छौक । सभ तँ हमर संगे ओंघरायल छलेँ, मुदा झट ऊठिकऽ ठाढ़ भऽ गेलेँ । मुदा हमरासँ मात्र एक बेर खसि पड़बाक अपमान सहन नहि भेल । तेँ बेर-बेर खसैत रहलहुँ आ मोनसँ ई मानियोकऽ जे दोषी मात्र हमहीँ छी, अनका दोषी मानि सभकेँ अपनासँ दूर भगबैत

ई नव आ अप्रत्याशित सूचना छल हमरा लेल । किछु आर जनबाक इच्छा सँ पुछलिऐक– "मुदा पछिला बेर तँ तोँ किछु आर कहि रहल छलेँ ?"

–"ओ हमर आँखिक धोखा छल । मतिये फेरि देने छलि ओ कुलटा । नाहक ओहन भ्रष्ट स्त्री लेल अपन बापकेँ बदनाम कयलहुँ, ओकर जान लेबऽपर तुलि गेलिऐक । मुदा आस्ते-आस्ते ओहि दुष्ट स्त्रीक सभ चालि खूजऽ लगलैक । विवाहसँ पहिनेसँ चालि-चलन ठीक नहि छलैक । कतेको गोटेसँ सम्पर्क छलैक । एतऽ हमर अनुपस्थितिमे हमर बापेकेँ फँसाबऽ लागलि, ओ नहि मानि डाँट-डपट कयलथिन तँ हमर डरक लेल उनटे खिस्सा गढ़ि लेलक । हमहूँ ओकर बातमे आबि गेलहुँ ओहि दिन । मुदा चालि-प्रकृति कतहु बदलैक ? आरो लोक सभपर वैह चालि खेलायलि । सभ टा बात खुजि गेलैक । एक दिन बेँतसँ चमड़ी उधेड़ि देलिऐक तँ अपने सभ टा कबूलि गेलि । ओही राति लात मारि घरसँ निकालि देलिऐक ।"

हमरा निर्णय करब कठिन भऽ गेल ओहि दिन जे ओ कहने छल से सत्य छलैक वा आइ जे कहि रहल अछि से सत्य छैक । मुदा एकटा बात सत्य छलैक जे ओ अपन स्त्रीकेँ घरसँ निकालि चुकल छल । हम आगू किछु नहि पुछलिऐक ।

जाइत काल ओ फेर बाजल–"तोरा तँ प्राय: ईहो नहि बूझल होयतौक जे परुकाँ साल हम दोसर विवाह कऽ लेलहुँ !... मुदा आइ साँझमे अबिहेँ जरूर... मन रहतौक ने ?"

ओहि दिन अपनो मोनमे आजाद केबिनक चाह पीबाक इच्छा फेर जोर मारि देलक । साँझ होइत देरी शेखपुरा दिस बिदा भऽ गेलहुँ । मुदा ओतऽ पहुँचिते जे काण्ड देखलहुँ तँ अयबाक पश्चात्ताप होबऽ लागल । पूरन आ रतना दुनू एक-दोसरपर आक्रमण करबा लेल कूदि रहल छल । एक गोटेक हाथमे टेङारी छलैक आ एक गोटेक हाथमे कोदारि । दुनू गोटेकेँ पाँच-पाँच गोटे पकड़ने छलैक, मुदा तैयो दुनू जोर मारि रहल छल । आखिर छोड़ौनिहारसभ दुनू गोटेक हाथसँ हथियार छीनि फराक-फराक कऽ देलकैक ।

पूरन हमरा देखिते लपकल आयल–"देखलिऐक कमीनाक भलमनसाहति ! एकर पहिल स्त्री बाट-घाट बौआयलि फिरैत छलैक । भिखमङनी सन हालति भऽ गेल छलैक, ई घरसँ निकालि देलकैक । बाप-भाय छैक नहि, भाइ-भाउज घरसँ टपऽ नहि देलकैक । एक टा पीसी लग चल गेल । ओ कोनो देयादनीक संग लगा देलकैक । ओतऽ गुजर नहि भेलैक । कतेको ठाम बर्त्तन-बासन मजलक, भानस कयलक, मुदा समर्थि स्त्रीक गुजर होयब केहन कठिन छैक से तँ बुझिते छिऐक ?

हम एक ठाम सड़कक कातमे भिखमङनी जकाँ बैसलि देखलिऐक तँ दया भऽ गेल । संग लेने अयलिऐक । आइ दुपहरियामे अपन छोट भाइक संग आङन पठबा देलिऐक । हम तँ एहि कमीनासँ बजितो ने छिऐक आइ कतेको वर्षसँ, मुदा ई किएक अपन चालिसँ बाज आओत ? हमर भाइ पहुँचाबऽ गेल छलैक तँ ओकरा दस हजार गारि देलकैक, अपन स्त्रीकेँ तुरत लतिया-जुतियाकऽ भगा देलक । नहि जानि फेर कतऽ गेलैक बेचारी ? सैह पुछलिऐक एतऽ जे यैह भलमनसाहति थिकैक, उपकार कयलियौक तँ गारि सुनलहुँ । बस्स, ऐश-तैश देखबऽ लागल । हमरो मिजाज रङि गेल । ओ तँ लोकसभ बचा देलकैक, नहि तँ आइ ओहि टेङारीसँ दू फाँक कऽ दितिऐक ।

पूरन सभ टा काण्ड सुनाकऽ चल गेल । ओकर जाइते रतना आयल– "की सभ कहैत छलौक ई हिजड़ा ? अपन स्त्रीक बदला लऽ रहल छल, नहि जानि कतऽसँ उठा अनलक, कहाँ-कहाँ अपन संग रखलक आ फेर आइ उपकार जनबऽ आयल छल । आइ बचा देलकैक लोकसभ, ने तँ ओही कोदारिसँ दोखरि दितिऐक ।"

हमरा भेल जे कोनो डेराओन आ वर्जित जगहमे आबि गेल होइ । झट घूरि गाम दिस बिदा भेलहुँ । रास्तामे दोबारा सप्पत खयलहुँ जे एहि चौराहापर फेर पयर नहि देब ।

तीन टा पैघ-पैघ वर्ष ससरि जाइत अछि । एम.ए.क डिग्रीक कतेको सत्यापित प्रतिलिपि एम्हर-ओम्हरक यात्रा करऽ लगैत अछि । देशक लाखो बेकार नवयुवक जकाँ हमहूँ 'बेकारी-कर' दैत चल जाइत छी– कतहु पोस्टल ऑडर, कतहु आवेदन-पत्रक दाम । यातायात ऊपरसँ । देशक रहनुमा अन्य जरूरी काजमे व्यस्त छथि । बेकारी सन गैर-जरूरी समस्यापर माथ खपयबाक अवसर हुनकालोकनिकेँ कम्म भेटैत छनि । जरूरी समस्या भेल कुर्सीक रक्षा आ तकरा लेल बरसाती बेङ जकाँ अपन क्षेत्रमे निर्वाचन-कालमे राग अलापि लैत छथि । बाँकी समय राजधानीक सुविधाजनक जीवनमे कुर्सी हथिअयबाक जोड़-तोड़मे व्यस्त । कहियो-कहियो जनताक आकुल आग्रहपर अनुगृहीत करैत कोनो विशाल जनसभामे बेकारी, भूख

आदि सन गैर-जरूरी मसलापर अपन गैर-मामूली वक्तव्य दऽ ओ फेर कुर्सीक चिन्तामे व्यस्त भऽ जाइत छथि ।

कौखन हमरा लगैत अछि जेना हमरासभकेँ कोनो उद्देश्यहीन-लक्ष्यहीन यात्रामे भोतिया देल गेल अछि जानि-बूझिकऽ आ भोतिआयल लोककेँ बचयबाक आश्वासन दऽकऽ किछु शक्ति आ सम्पत्तिक लोभी लोकसभ देशक भाग्यक नियंत्रण कऽ रहल छथि । कौखन आश्चर्य होइत अछि जे देशक की होयतैक जतऽ आक्रमणकेँ वरदान मानल जाइत छैक, 'ब्लेसिंग इन डिसगाइज ।' चीनी आ पाकिस्तानी आक्रमण मोन पड़ैत अछि । एकता हमरालोकनिमे मात्र विदेशी आक्रमणक कालमे अबैत अछि, सेहो कतेक प्रचार लेल आ कतेक वास्तविक, से कहब कठिन । हमरालोकनि, हमरा लगैत अछि, जन्मेसँ देशद्रोही छी । पहिने जाति, गाम, फेर जिला-जयबार, फेर प्रान्त आ अन्तमे देश । प्रत्येक नागरिक पहिने ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र अछि, फेर बिहारी, बंगाली, पंजाबी आ मद्रासी । आ अन्तमे भारतवासी । देशकेँ अन्तिम स्थान दैत छिऐक हमरालोकनि । ओना मंचपर अनेकतामे एकताक गप्प सुनबामे नीक लगैत अछि । मुदा कतहु स्वदेशी तिरंगाक अग्नि-संस्कार, कतहु राष्ट्रभाषा हिन्दीक पोस्टरक दाह-क्रिया आ कतहु क्षेत्रीय स्वार्थक रक्षा लेल अनशन आ प्राणत्याग । जे किछु करबाक अछि, जे किछु बजबाक अछि, से सभ हमरालोकनि घरे-आङनमे बाजि लैत छी, बाहर बकार बन्द भऽ जाइत अछि । अन्तरराष्ट्रीय राजनीतिमे पैघ शक्तिशाली देशक मुँह देखैत रहबाक अतिरिक्त कोनो काज नहि करैत छी । 'सहअस्तित्व'क सिद्धान्त मोन पड़ैत अछि जेना सापक मुँहमे बेङ । सहअस्तित्वक एहने स्थिति छैक देशक लेल ।

मुदा हमहूँ तँ एही देशक वासी छी । देश कहियो काल मोन पड़ैत अछि । अपने चिन्तामे सापक मुँहमे दबल बेङ जकाँ कोँकिआइत रहैत छी, सिम्मरक तूर जकाँ हवामे उधिआइत रहैत छी । 'इन्टरव्यू'क नामपर रचल गेल नाटकक एकटा असहाय पात्र जकाँ मंचपर एम्हर-ओम्हर गुड़कैत रहैत छी ।

पहिल बेर इन्टरव्यू दैत काल बड़ उत्साह छल– एक टा प्राध्यापक पद छलैक । मुदा इन्टरव्यू लेल पहुँचैत देरी उत्साह ठण्ढा भऽ गेल । प्रत्याशी उमेदवारक विशाल भीड़ आ भीड़मे सभ ठाम पैरवीक चर्चा । फल्लाँ व्यक्तिक हेतु ई स्थान रजिर्व छैक । इन्टरव्यूमे जयबासँ पहिने उत्साह मरि गेल । तीन बजे दिनमे (दस बजे बजाओल गेल छल) जखन बजाहटि भेल, भूखे-प्यासे कण्ठ सुखायल छल आ ठोरपर पपड़ी जमि गेल छल । हॉलमे बैसल पाँचो व्यक्तिकेँ नमस्कार करैत काल लागल जेना पाँचो 'जल्लाद' जकाँ हमर वध करबा लेल प्रतिबद्ध छथि । एकदम

असहानुभूतिपूर्ण दृष्टि आ रुच्छ प्रश्न । प्रश्नपर प्रश्न । उत्तर की देलियनि वा नहि देलियनि से कोनो तेहन महत्त्वपूर्ण नहि लागल । जेना मात्र प्रश्न फेकि देब कर्तव्य होइनि । उत्तर सुनब ओतेक आवश्यक नहि । हॉलसँ बहराइते काल परिणाम ज्ञात छल ।

दोसर इन्टरव्यू देबऽ एकटा मोफस्सिल कालेजमे पहुँचल रही । मोस्किलसँ पुछारी कयलापर कालेजक पता लागल । छोट-छीन आफिसक बाहर पैघ भीड़ । बाहर मैदानमे चारू कात छिड़िआयल लोक । रौदमे पसेनासँ तर-बतर । सूट-बूटवलाक हालति आरो खराब । मुदा सभक हालति खराब छलैक एहि समाचारपर जे ई इन्टरव्यू एक टा फार्स छलैक, कोनो स्थान खाली नहि छलैक । एक टा पुरने प्राध्यापकक अनियमित नियुक्तिकेँ नियमित करबा लेल ई आयोजन भेल छलैक । रौदमे चनकैत सभक माथ आस्ते-आस्ते गरम होबऽ लगलैक । दू-चारि टा बमकिकऽ आगू बढ़ल आ आफिसक सामने आबिकऽ चिचिआय लागल– "निकल, निकल बाहर । कहाँ गेल प्रिन्सिपल, सेक्रेटरी दुनू ? लोककेँ नाटक कऽ ठकैत छैक ? माल-जाल जकाँ सभकेँ मैदानमे ठाढ़ कऽ देने छैक आ अपने भीतर पंखामे बैसल अछि ।" हो-हल्ला मचि गेलैक । आफिसक केबाड़ बन्द भऽ गेलैक । इन्टरव्यू स्थगित । तमसायल उमेदवारसभ बिनबिनाइत कालेजक कम्पाउण्डमे बौआइत रहल ।

हमर मोन अकच्छ भऽ गेल । आर प्रतीक्षा करब व्यर्थ बुझायल । नहि जानि फेर कखन इन्टरव्यू शुरू होयतैक ? स्टेशन दिस बिदा भऽ जाइत छी । हल्ला-हंगामासँ ओहुना हमरा बड़ डर लगैत अछि । एकटा टमटमवला भेटैत अछि, ओहीपर बैसि जाइत छी । टमटमवला रस्ता साफ पाबि तेना घोड़ा दौड़बैत अछि जे हमरा डर होबऽ लगैत अछि । ओकरा टोकैत कहैत छिऐक– "एना नहि हाँकह । कतहु एक्सीडेण्ट भऽ जयतह ।"

टमटमवला रफ्तार कम करैत बजैत अछि–"अहाँ तँ एकदम डेरबुक छी बाबूजी !"

ई बात ओ बड़ सहज ढंगसँ कहैत अछि । मुदा बात हमरा लागि जाइत अछि । रतनो एक दिन गीदड़ कहने छल । सत्ते हम कायर आ भीरु छी ? कोनो वस्तुकेँ अधिकारपूर्वक हथिया लेब, कोनो समस्याक साहसपूर्वक समाधान ताकब हमरा अबिते नहि अछि । आइए बाँकी उमेदवारसभ डँटल रहल आ हम घूरि अयलहुँ । ओसभ कमसँ कम हंगामा तँ कयने होयत, प्रिंसिपल-सेक्रेटरीकेँ दस टा गारि तँ देने होयतैक । मुदा हमरासँ तँ सेहो पार नहि लागल । चुपचाप खसकि गेलहुँ । हमरा सभ-किछु शान्तिपूर्वक आ सुविधासँ चाही । तखन बैसल रहू हाथपर

हाथ राखि, कहियो अपने भट दऽ आगाँमे खसि पड़त । एना बौअयबाक कोन काज अछि ?

आइ फेर मोनक भर्त्सना उत्कट भऽ जाइत अछि । एक दिन यैह मोन शोभाक आह्वानकेँ मात्र सामाजिक आ पारिवारिक भये अनठा देबापर 'कायर' कहि दुतकारने छल । आइ फेर दुतकारि रहल अछि । शक्तिहीन नपुंसक । भाग्यक इशारापर हिजड़ा जकाँ नचैत । ई हिजड़ाक नाच कहिया धरि देखायब ? पुरुषार्थकेँ जगाउ । जे नहि भेटैत अछि, तकरा छीनि लियऽ । नहि तँ खेलाइत रहू यैह खेल । झिझिर कोना झिझिर कोना कोन कोना जाउ ? बेल तर मारलक, बबूर तर जाउ ।

मोनक एहि दुतकारकेँ हम फेर अनठा दैत छिऐक । एना करब कानून आ व्यवस्थाक खिलाफ होयत । सभ चीजक हेतु समय होइत छैक । समयसँ पहिने छिछिअयलासँ की होयत ? तोड़-फोड़, हल्ला-हंगामासँ ककरो काज नहि होइत छैक । मात्र अव्यवस्था आ उपद्रवक प्रसार होइत छैक, जान-मालक हानि होइत छैक।

मोनक भर्त्सना फेर चीत्कार करैत अछि–"सैह कह ने ! तोरा अपना प्राणक भय होइत छौक । जानवर जकाँ जीयब तोरा मंजूर छौक, मुदा मनुक्ख जकाँ संघर्ष करैत, अधिकार लेल लड़ैत मरि जायब तोरा मंजूर नहि छौक । तोरा चाहियौक भीख । सभ ठाम हाथ पसार आ सभ दिन हजारो मृत्यु मर...नपुंसक, हिजड़ा !

हम कान मूनि लैत छी ।

तीन टा वर्ष ओहूसँ पैघ-पैघ, ओहूसँ लम्बा ।

बहुत-किछु भऽ गेलैक एहि बीच । जे टुटपुजिया छल से पूजीपति भऽ गेल । जे घरक भगौआ छल से नेता भऽ गेल । एक टा कांग्रेस दू टा भऽ गेल। दिल्लीमे राजनीतिक सरगर्मी छल ।

मुदा हमर जीवनमे कोनो परिवर्तन नहि भेल छल । जतऽ तीन बरख पहिने छलहुँ, ताहिसँ एक्को डेग आगू नहि जा सकलहुँ । नहि जानि कतेक सय कोस पाछू ठेला गेलहुँ, हिसाब करब कठिन । पटना शहरक जीवनमे आब केवल घुटन, ऊब

आ अपमानक आर किछु नहि रहि गेल छल । आनन्द एक्के शहरमे होइतो अपरिचित भऽ गेल छल । करुणेशक पता नहि छलैक, एक दिन बतहपनीमे घरसँ बहरा गेल– नहि जानि कोन यात्रा-पथपर । रमण डाक्टर भऽ गेल छल– सफल आ व्यस्त, व्यावसायिक ।

हमरा शहरमे रहबा लेल एक टा आश्रय भेटि गेल छल कहुना । दीपक हमर संग पढ़ैत छल एम.ए. मे । एकटा छोटछीन नोकरी आ छोटछीन कोठली । मुदा कलेजा बड़ पैघ छलैक— आ पैघ कलेजा रहलापर एक टा छोटछीन कोठलीमे सौंसे संसार अँटि सकैत छैक । एक टा दोस्तो अँटि गेल छलैक ।

भोरे ओ आफिस चल जाइत छल । तालाक एकटा कुंजी ओकरा लग रहैत छलैक आ एक टा हमरा लग । ओ चल जाइत छल आ हमर दिनचर्या शुरू भऽ जाइत छल । फुटपाथी होटलक चाह आ सस्ता होटलक रोटी-तरकारी । मासमे एकाध कथा-कविता छपि जाइत छल । कहुना पेट भरि लेबा जोग भऽ जाइत छल । नहि रहल, तँ भरि पेट पानि पीबि शहरक परिक्रमा– अगणित । एक आफिससँ दोसर आफिस, एक सड़कसँ दोसर सड़क, एक विभागसँ दोसर विभाग । एक बेर एक टा छोट-छीन नोकरी भेटल छल । मुदा तीन दिनमे छुट्टी । काज छलैक नकली दबाइक व्यापारक नकली लेबुल सटबाक । हमरा तेसरे दिन पता लागल आ छोड़ि-छाड़िकऽ भागि पड़यलहुँ ।

ओहि दिन दीपक हमरापर एकदम रुष्ट भऽ गेल । डटैत बाजल– "दुनियाँ कतहुसँ कतहु चल गेल आ तोँ अपन स्थानपर टूटल पाथर जकाँ गड़ल-अड़ल छेँ ! कतेक मोस्किलसँ एक टा नोकरी भेटल छलौक, ओकरो छोड़ि अयले ?"

हम ओकरा शान्त करैत कहलिऐक–"तोरा नहि बूझल छौक ? ओ काज एकदम गैरकानूनी छलैक ।"

ओ ओहिना क्रोधमे बाजल–"पेट भरबा लेल सभ काज कानूनी छैक । ओ जकर पेट भरल छैक सोना-चानीसँ, तकरा लेल किछुओ गैरकानूनी नहि छैक, आ जकर पेट जरि रहल छैक तकरा लेल पेट भरबाक साधनो गैरकानूनी । देखैत नहि छँ जे जमाना कतहुसँ कतहु चल गेलैक । पहिने लोक घुसहा किरानी आ अफसरकेँ देखाकऽ कहैत छलैक–"देख, ई घुसहा अछि ।" आब बात उनटा छैक। जे घूस नहि लैत अछि, तकरेपर आङुर उठा लोक कहैत छैक–"देख रे, ई घूस नहि लैत छैक !' भ्रष्टाचार हमरालोकनिक राष्ट्रिय चरित्र भऽ गेल अछि । यदि कोनो दिन ऊठिकऽ देखबैक जे भ्रष्टाचार नहि रहल, तँ विश्वास करब कठिन भऽ

जायत जे हम जीवित छी। मुदा तोँ जीवित कोना रहबेँ ? एहिना साल-पर-साल बितैत जयतौक आ तोँ आदर्श धो-धोकऽ चटैत रहबेँ।"

हम दीपकक बातक कोनो उत्तर नहि दैत छिऐक। चुपचाप सभ टा सूनि लैत छी। ओ शान्त होइत बाजल-"हमर बात अधलाह लगलौक?"

हम ओकरा कोना कहितिऐक जे आब हमरा किछुओ अधलाह नहि लगैत अछि। ओ सीमा हम लांघि गेल छी जतऽ किछु नीक आ किछु अधलाह लगैत छैक। आब सभ टा सुन्न भऽ गेल अछि- संवेदनहीन!

ओ हमरा चुप्प देखि बाजल-"आब जे भेलैक से भेलैक! ठीके ओहिमे खतरा छलैक, नीके कयलेँ जे छोड़ि देलेँ। एक टा इन्टरव्यू छौक ने परसू, कलकत्ता चल जो!"

हमरा मोन पड़ि जाइत अछि जे एक टा इन्टरव्यूकार्ड आयल छल। मुदा हम मोड़ि-माड़िकऽ राखि देने छलिऐक। सरकारी नोकरीक तँ 'एज' खतमे भऽ गेल छल, प्राइवेटोमे इन्टरव्यू दैत थाकि गेल रही। पछिला बेर इन्टरव्यूमे झगड़ा जकाँ भऽ गेल। इन्टरव्यू लेनिहार प्रश्न पूछि दोसर कोठलीमे चल गेल। हम जबाब ककरा दितिऐक? कनेक काल बाद घुरिकऽ आयल तँ पुछलक- "अहाँ चुप्प बैसल छी! जबाव नहि देलहुँ प्रश्नक?"

हमहूँ कटुतासँ कहलिऐक- ''जवाब ककरा दितिऐक? एहि टेबुल-कुर्सी केँ?''

ओ नाक-भौँ सिकोरैत बाजल- "की मतलब? अहाँ इन्टरव्यू देबऽ आयल छी कि जवाब-सवाल करऽ?"

हमहूँ ओहिना रुच्छतासँ कहलिऐक-"आयल तँ रही इन्टरव्यू देबऽ! मुदा जतऽ सामान्य शिष्टाचारो नहि छैक, ततऽ काज नहि करबाक अछि हमरा।"

हम ऊठिकऽ चल आयल रही। तहियासँ फेर इन्टरव्यू देबाक इच्छा नहि होइत छल। मुदा दीपक जिद्द करऽ लागल तँ जाय पड़ल। एक टा भाइ छलाह ओतऽ, हुनके डेरापर ठहरि गेलहुँ।

इन्टरव्यूक बाद घूमऽ-फिरऽ बहराय लगलहुँ तँ भाइ टोकि देलनि- "कनेक सम्हरि कऽ जैहह! चिराग-बातीसँ पहिने घूरि अबिहह। आइ-कालि सुरक्षित नहि छैक, खासकऽ साँझक बाद घूमब-फिरब। तोरा तँ आरो खतरा छह। हृष्ट-पुष्ट देह देखि झट पुलिस बूझि जयतह आ ऊपरसँ एक टा बम खसा देतह।"

हम डेरा जाइत छी। घुमबाक उत्साह ठंढा भऽ जाइत अछि। भाइ लग बैसैत पुछैत छियनि-"एना किएक छैक? युवावर्ग एतेक हिंसक किएक भऽ गेल अछि?"

भाइ कहऽ लगैत छथि-"कारण बहुत रास छैक, सभ सुनाबऽ लगबह तँ समय लागत। आफिसो छूटि जायत। मुदा एक टा कारण तँ एकदम स्पष्ट छैक। एही कलकत्तामे कतेक लाख बेकार नवयुवक अछि। ओ आखिर की करत? भूखल पेट, बेकार उपेक्षित कतेक दिन सभटा सहत? व्यवस्थाक प्रति हिंसक विद्रोह भोतिआयल लोकक हाथमे आबि गेल छैक। व्यवस्थाक प्रतीक मानि ककरा मारैत अछि? अपने सन निरीह अल्प वेतनभोगी सिपाही वा प्राध्यापककेँ, कोनो निरीह छात्र आ बूढ़ अभिभावक आ उपकुलपतिकेँ। मुदा एहि हिंसक वर्गकेँ भड़कबैत के छैक? कतऽसँ एकरा सुरक्षा आ प्रोत्साहन भेटैत छैक? छात्र-अनुशासनहीनता आ युवा-संतोषक बात तँ सभ ठाम सुनैत छहक। मुदा असल समस्या कतऽ छैक? असल समस्या छैक राष्ट्रिय अनुशासनहीनताक- सभ क्षेत्रमे, सभ स्तरपर। घरमे बापक अनुशासन नहि छैक, स्कूल-कालेजमे शिक्षकक अनुशासन नहि छैक, समाजमे मुखियाक अनुशासन नहि छैक, देशमे प्रधान मंत्रीक अनुशासन नहि छैक। सभ स्तरपर ई अनुशासनहीनता, कमजोर योजना आ गलत व्यक्तिक नेतृत्व युवापीढ़ीक असंतोष बढ़ा रहल छैक। फलस्वरूप सभ ठाम हिंसा, तोड़फोड़ आ खून-खराबी। सभ दिन आफिस जाइत काल लगैत अछि जेना युद्ध-क्षेत्रमे जा रहल होइ, घूमिकऽ आयब वा नहि, सेहो ज्ञात नहि।"

भाइ आफिस चल जाइत छथि। हमहूँ घरमे बैसल-बैसल अकच्छ भऽ जाइत छी। बाहर आबि निरुद्देश्य बौआय लगैत छी। महानगर ऊपरसँ एकदम सामान्य बुझाइत अछि, ओहिना चहल-पहल आ जीवनसँ परिपूर्ण। हमरा आश्चर्य होइत अछि जे एहि लबालब जिनगीक बीच कतऽसँ बम विस्फोट भऽ जाइत छैक आ महानगरक लोक घोंघा जकाँ अपन कोष्ठमे नुका जाइत अछि। एकदम प्राणहीन, सुन्न आ भयावह। खाली धुआँ आ धमाका। रक्त आ आगि। लहास आ उत्तेजना। कतऽसँ आबि जाइत छैक ईसभ?

आ फेर कतऽ बिला जाइत छैक ईसभ? प्रात भेने महानगर फेर सामान्य भऽ जाइत अछि- ओहिना जिनगीसँ लबालब, चहल-पहलसँ परिपूर्ण। भरल ट्राम, बसमे लटकल लोक, फुटपाथपर ठेलमठेल। एहि भीड़मे कोना मृत्यु सन्हिया जाइत छैक? एतेक जनसमूहक बीच कोना दस-पाँच उपद्रव कयनिहार अपन काज कऽ सफलतापूर्वक भागि पड़ाइत अछि?

जवाब हमरा अपने मोनसँ भेटि जाइत अछि। एहि देशक भीरु आ नपुंसक

जनता । एक टा बसमे चारि टा गुंडा एक टा छौड़ीकेँ बेइज्जति कऽ दैत छैक आ एक सय यात्री तमाशा देखैत रहैत अछि । गुण्डाक हाथमे छूरा छैक । कहीं हमरे भोंकि देलक ? तखन के देखतैक हमर विधवा आ बिनबापक धीयापूता सभकेँ ? होबऽ दियौक जे होइत छैक से । हमरा कोन मतलब ? हमरा लोकनि अपन-अपन तथाकथित भद्रताक शाल ओढ़ि संच-मंच बैसल रहैत छी आ किछु असामाजिक तत्त्व जे मोन होइत छैक से कऽ जाइत अछि । नपुंसकक सन्तान छी हमरालोकनि, एक टा सम्पूर्ण नपुंसक समाज । हिजड़ा जकाँ नचैत छी आ भीड़ तमाशा देखैत अछि । कौखन हम स्वयं तमाशा, कौखन तमाशबीन ! खेल एक्के ।

हमरा अपन एहि तरहेँ सोचबापर आश्चर्य होइत अछि । हम तँ स्वयं एक टा कायर आ भीरु लोक छी । हम कोना एतेक बहादुरीसँ सभकेँ कायर आ पुंसत्वहीन कहि रहल छिऐक ? फेर लागल जे यैह तँ कायरक लक्षण थिकैक । कायर आदमी किछु करैत नहि अछि, खाली तमाशा देखैत अछि आ अपना छोड़ि बाँकी सभकेँ बकलेल आ कायर बुझैत छैक ।

मुदा एहनो तँ भऽ सकैत छैक जे हमरे सन कोनो शान्तिप्रिय आ व्यवस्थापसन्द लोकक हाथमे एक दिन पाथर आ मशाल आबि जाइक । ओ पाथरसँ एहि महानगरक सभ टा शीशा तोड़ैत जाय आ मशालसँ सभकेँ आगि फुकने जाय । ओकरा पाछू पुलिस दौड़ैक, गोली आ डन्टा दौड़ैक । ओ सौंसे शहरमे पाथर फेकैत मशाल लेने दौड़ल जाय ।

एना किएक भऽ जाइत छैक ? किताब पढ़ऽवलाक हाथमे पाथर कतऽसँ आबि जाइत छैक ? सृजनक हाथमे विध्वंस कहाँसँ आबि जाइत छैक ? के दऽ दैत छैक ? हमरा कोनो उत्तर नहि भेटैत अछि ।

सामने एक टा सिनेमाघरमे भीड़ देखैत छिऐक । पोस्टर देखैत छिऐक- सत्यजित रायक 'प्रतिद्वन्द्वी' ! हमहूँ एक टा टिकट कटा भीतर बैसि जाइत छी ।

पाँच वर्ष बाद गाम आयल छी । आयल की छी, आबऽ पड़ल अछि ।

कलकत्तोवला नोकरी नहि भेटल । मासमे एकाध कथा-कविता जे छपि जाइत छल सेहो बन्दे जकाँ । सधन्यवाद आपस । दीपकक कोठलीमे राति बितयबाक स्थान तँ सुरक्षित छल, मुदा पेटमे चारि टा अन्न देबाक उपाय सेहो बन्द । गाम घूरि अयबाक अतिरिक्त कोनो उपाय नहि रहल ।

बाबी हमरा देखि कानऽ लागलि- "आब भरि जिनगी पढ़िते रहबेँ ? बियाह-दान कहिया करबेँ ?"

हम हँसिकऽ रहि जाइत छी । बाबीक लेल हम एखन धरि पढ़िए रहल छी । ओ तँ मात्र दू टा श्रेणी जनैत छैक- जे कमौआ नहि से पढुआ ।

माय चुपचाप नोर पोछैत बाजलि- ''आब तोरा देखबो लोककेँ सेहन्ता भऽ गेलैक । पाबनियोँ-तिहारमे तँ लोक गाम चल अबैत अछि !''

हम ओकरो कोनो उत्तर नहि दैत छिऐक । ओकरा कोना कहितिऐक जे पाबनि-तिहारक नामो हमरा मोन नहि अछि आब ? मोन तँ एतबे अछि जे प्रत्येक वर्षमे तीन सय पैंसठि दिन होइत छैक आ प्रत्येक दिन पहाड़ सन । हम ओहि पहाड़केँ ठेलैत थाकि गेल छी । हाथ-पयर, सभ अंग शोणिते-शोणताम भऽ गेल अछि ।

मुदा बाबू लग पहुँचि हम आश्चर्यसँ अवाक् रहि जाइत छी । कहियो ने सोचने रही जे एक दिन एहनो बात हुनक मुँहसँ सुनब । मुदा ओ सामने ठाढ़ बाजि रहल छलाह- ''की फायदा भेल तोरा एतेक पढ़ा-लिखाकऽ ? एतेक पैघ संसारमे एक टा छोट-छीन काज नहि छह तोरा लेल ? आ काज नहि छह तँ घर बैसह, खेत-पथार देखह । अपन पेट भरबा जोग जमीन तँ अपना छह । बुढ़ारीमे आब ई जंजाल नहि सम्हरैत अछि हमरासँ ।''

हम ध्यानसँ बाबूक मुँह देखैत छियनि । रंग जरिकऽ झामर भऽ गेल छनि, कन्हा झुकल आ चेहराक घोकचल चाममे उभरल हड्डी । लगैत अछि जेना बाबूजी एहि पाँच वर्षमे किछु बेसी बूढ़ भऽ गेल होथि ।

बाबू जेना अपनेसँ बाजि रहल होथि- ''कतेक आस छल तोरासँ ! बड़ पैघ-पैघ स्वप्न । मुदा तोरासँ नीक तँ रतने बहरायल । तोरासँ कतेक आगू बढ़ि गेल अछि !''

बाबूक एहि बातपर हम तिलमिला जाइत छी । रतनाक गाम जहिया गेल रही, तहियाक बाबूजीक गप्प मोन पड़ैत अछि । आइ बाबूजी ओही रतनाक गुणगान कऽ रहल छथि । कोन बड़का तीर मारलक अछि ओ ?

हम बाबू लगसँ ऊठिकऽ चल अबैत छी । कोनो उत्तर नहि दैत छियनि ।

मुदा रतनासँ अपन तुलना हमरा बड़ अपमानजनक लगैत अछि, खासकऽ बाबूजीक मुँहसँ । हम ओही चोटसँ दिन भरि छटपटाइत रहैत छी ।

मुदा साँझखन हमरा पता लागि जाइत अछि जे बाबूजीक कथनमे वस्तविकता छलनि । रतना हमरा पाछू छोड़ि गेल छल ।

चर्चा कयलापर हमर छोट भाइ शंभू बाजल– "अहाँकेँ सेहो नहि बूझल अछि ? रतना अपन गामक मुखिया भऽ गेल अछि ।"

हमरा आश्चर्यमे पड़ल देखि ओ विस्तारपूर्वक सभ टा कहऽ लगैत अछि– "पछिला चुनावमे एकटा लहरि आयल छलैक । विरोधी शक्ति सम्मिलित छलैक । ठाम-ठाम उपद्रव भेलैक । नेतालोकनिकेँ कोनो उपाय नहि सूझि रहल छलनि । तखने नहि जानि कोना हुनकासभकेँ रतनाक पता लागि गेलनि । दोसरे दिनसँ रतनाक साइकिलपर झंडा फहराय लगलैक आ ओ गामे-गाम प्रचार करऽ लागल । ओकरा टोकबाक साहस ककरो नहि भेलैक । लोकसभ कहैत छैक जे ओकर प्रचारक झोरामे नीचाँ खाली नोट भरल रहैत छलैक । से तँ जे छलैक से छलैक । मुदा एतबा तँ सामने छैक जे ओहि चुनावक बाद रतनाकेँ धड़ाधड़ ठीका भेटऽ लगलैक । लाखो कमयलक । उपरका दवाबपर गामक मुखियाजी त्यागपत्र दऽ हँटि गेलथिन मैदानसँ आ रतना गामक मुखिया भऽ गेल । सुनैत छी, एहि बेर एसेम्बलीक हेतु ठाढ़ होयत ।"

शंभू विस्तारपूर्वक सभटा खिस्सा कहैत जाइत अछि । हमर आश्चर्य कम होइत चल जाइत अछि । सभटा हमरा स्वाभाविक लागऽ लगैत अछि । आब एहि बातपर आश्चर्य होइत अछि जे किएक तखनसँ रतनाक तरक्कीक इतिहासपर आश्चर्य भऽ रहल छल ।

शंभू अन्तमे बजैत अछि– "पछिला बेर एसेम्बलीक सीट संसोपा लऽ गेल आ पार्लियामेन्टक कांग्रेस । मुदा एहि बेर कांग्रेस विभाजित भऽ गेल अछि । संसोपाक हालत खराब छैक । जनसंघ एहि बेर दुनू सीट अबस्से लऽ लेतनि ।"

शंभू कट्टर जनसंघी भऽ गेल अछि, से हम सूनि चुकल छलहुँ । मुदा ओकर बात आ उत्साह देखि हमरा आश्चर्य होइत अछि । हमर घरमे तँ कहियो ककरो राजनीतिमे रुचि नहि रहलैक अछि, फेर एकरा कोना ई चस्का लगलैक ? पढ़ऽ-लिखऽसँ ध्यान हँटल जाइत छैक ।

मुदा प्रात भेने रतनाकेँ देखि निश्चित धारणा मोनमे बैसि जाइत अछि जे उन्नति करबा लेल पढ़ब-लिखब कोनो जरूरी नहि छैक । रतनाक संग एकटा पूरा

झुण्ड छलैक पछुलगुआ सभक । सभक बीचमे सगर्व मुसकाइत ओ हमरा देखि बाजल– "कहिया अयलेँ ?"

– 'भेल किछु दिन । की हाल छौक ?' हम पुछलिऐक !

– 'चलि रहल अछि कोनहुना ।" ओ एक टा पुरान अखड़ियल नेता जकाँ विनीत भावसँ बाजल– "बस जनता-जनार्दनक सेवामे लागल छी । तोँ अपन सुना । सुनैत छी, एखन धरि बेकारे बैसल छैँ !"

हम कोनो उत्तर नहि दैत छिऐक । ओ स्वयं बाजि उठैत अछि– "तोँ चिन्ता नहि कर आब । सभ ठीक भऽ जयतौक । कनेक ई संविद सरकार टूटऽ दही, अपन सरकार जहाँ बनल कि मुख्यमंत्रीसँ कहि कोनो नीक काज धरा देबौक ।"

ओ ओहिना बड़प्पनसँ मुसकिआइत चल गेल आ हम ओकर उदारता आ महानताक समक्ष बौन भेल ठाढ़ रहि गेलहुँ ।

गाममे बेसी दिन रुकब संभव नहि भेल । माय-बाबूक उदास चेहरा, बाबीक आकुल आग्रह, काकाक स्नेहपूर्ण चिन्ता । सभसँ ऊपर गामक लोकक विरूपता भरल जिज्ञासा– "की करैत छिऐक औ शहरमे ? एखन धरि बेकार बैसल छिऐक ?"

पाँचे दिन बाद हम विदा होबऽ लगैत छी । बाबू मौन रहैत छथि । खाली माय कानऽ लगैत अछि– "बापक बातकेँ लोक एतेक अधलाह मानैत अछि ! कनेक हुनकर मोनमे हुलकिकऽ देखहुन, केहन स्नेह भरल छनि तोरा लेल ! खटैत-खटैत मोन-शरीर दुनू पस्त रहैत छनि । दिन-दिन कमजोर भेल जाइत छथुन । तेँ कौखन तामस भऽ जाइत छनि । आ फेर तोरा नहि कहथुन तँ ककरा कहथिन ? तोँ सभसँ जेठ छह, चारि टा छोट भाइ छह, दू टा बिनबियाहलि बहीन । सभकेँ तोँही ने देखबहक ! बाप सभ दिन बैसल तँ नहि रहथुन !"

हम कोनो तरहेँ ओकरा विश्वास नहि देआ सकलिऐक जे बाबूक बातक हमरा मोनमे कोनो दुःख नहि छल । ओ मानि लेने छलि जे हम रूसिकऽ गामसँ जा रहल छी । आब ओकरा कोना विश्वास दियबितिऐक जे गामसँ रूसिकऽ नहि, एक टा संकल्पक संग जा रहल छी जे किछु अबस्से करब । बैसल नहि रहब ।

विदा होइत काल माय किछु टाका हाथमे दैत बाजलि– ''कोनहुना किरायाक इन्तजाम भेल छह । मुदा एना कतेक दिन चलतह ? काज शुरू कऽ दैह, कोनो काज । एना बैसल रहलासँ चलब कठिन छह आब ।''

हमहूँ एही निश्चयक संग गामसँ विदा भेलहुँ । काज करब, खाहे केहनो काज, कोनो काज, ककरो काज । सोचबा-विचारबाक अवसर नहि छल ।

मुदा पटना आबि फेर सोचमे पड़ि गेलहुँ । एहि छोट अनुपस्थितिमे हमर रैन-बसेरा उजड़ि गेल छल । दीपक गामसँ अपन स्त्रीकेँ लऽ अनने छल । एम्हर ओकर आमदनी बढ़ि गेल छलैक, डिपार्टमेण्ट बदललासँ बाइली आमदनीक बाट खुजि गेल छलैक । आब ओकरा खानाबदोशी जिनगीमे कष्ट होबऽ लागल छलैक। मुदा एतेक जल्दी ओ अपन कष्ट-निवारणक उपाय सोचि लेत, से हमरा नहि बूझल छल । पटना आबि एकाएक अथाहमे पड़ि गेल छलहुँ ।

ओ हमर चिन्ता देखि सहानुभूतिसँ बाजल– ''दू-चारि दिन लेल कोनो बात नहि छैक । कोनहुना एहीमे अँटावेश कऽ लेब । मुदा तोँ तँ बुझिते छेँ, एक कोठलीक मकानमे परिवारक संग आन ककरो राखब संभव नहि छैक । अधलाह नहि मानिहेँ ।''

हम हँसैत कहलिऐक– ''अधलाह मानबाक एहिमे कोन बात छैक ? ई तँ खुशीक बात छैक । तोँ आब बाकायदा गृहस्थ भऽ गेल छेँ । ला, एक कप चाह पिया, भौजीक हाथक । साँझ धरि कोनो इन्तजाम कऽ लेब हम अपन ।''

कहबा लेल तँ हम कहि देलिऐक, मुदा एतेक जल्दी कोन उपाय भऽ सकैत छल ? कोनो नव डेराक एडवांस देबा लेल टाका नहि छल । एहि राजधानीमे कमयनिहार परिचित-सम्बन्धी सभकेँ जगहक असौकर्य छलैक । हमरा अनायास रमण मोन पड़ल ।

रमण अपन क्लीनिकमे व्यस्त छल । खूब भीड़ छलैक । हमरा प्रसन्नता भेल । ओ हमरा देखि भीड़केँ ठेलैत बाहर आयल । अपन बगलमे बैसौलक । किछु काल कम्पाउण्डरकेँ रोगीकेँ भीतर पठयबासँ मना कयलकैक ।

– ''कहिया अयलेँ गामसँ ? बहुत दिनसँ नहि देखलियौक !''

– ''आइये आबि रहल छी । सुना हाल ।''

ओ उत्साहसँ बाजल– ''सभ-किछु ठीक-ठाक जा रहल अछि । किछु दिनमे रोगी ततेक बढ़ि गेल अछि जे ई क्लिनिक आ मकान छोट पड़ि रहल अछि। पर्याप्त एक्सटेनशन करऽ पड़त । पर्याप्त घाटा भऽ रहल अछि। आइ-कालि तँ

डाक्टरीमे बुझबे करैत छेँ, कोना टाउटसभ लागल रहैत छैक । झट रोगीकेँ टपा लैत छैक । मुदा छोड़ ओसभ, तोँ अपन सुना !''

–''सुनबऽ जोग की अछि जे सुनबियौक ? खाली कहऽ आयल छलियौक जे तोहर जान-पहचानमे कोनो काज होउक तँ कह । आब हम किछुओ करऽ लेल तैयार छी । तोरा कहलासँ कोनो काज भऽ सकय, तँ हम तैयार छी ।

ओ प्रसन्न होइत बाजल– ''आब आयल छैँ तोँ रस्तापर । हम तँ कहियासँ कहि रहल छलियौक । तोँही नै मानैत छलेँ । आदर्श आ मेरिटक गप्प करैत रहलेँ । देखलेँ मेरिटक किम्मति ? मेरिटक मतलब छैक पैरवी । पैघ लोक लग पहुँच । से हम करबा देबौक । तोँ घबड़ो जुनि । सभ ठीक भऽ जयतौक । तोँ जखने कोनो भेकेन्सी देखिहेँ, आवेदन कर आ पता लगा जे ककरा कहलासँ काज होयतैक । बाँकी इन्तिजाम हम कऽ देबौक ।''

हमरा लागल जेना रमण किछु अगुता रहल होअय । रोगीक भीड़ बढ़ि रहल छलैक । व्यवसायक समय छलैक— क्षति भऽ रहल छलैक । हम ओकरासँ बिदा लैत छी ।

रमण जे रस्ता देखौने छल, ताहिमे मासो लागत । हमरा लग अजुका गप्प छल । दीपकक मकान खाली करबाक अछि । रमणकेँ मकानक एक्सटेंशन करबाक छैक, रोगी अँटि नहि रहल छैक । जगहक बात हम कहियो नहि सकलिऐक ।

मुदा बाहर आबि फेर अथाहमे पड़ि गेल रही । उबरबाक कोनो बाट नहि सूझि रहल छल । ओहि निराश क्षणमे आनन्द मोन पड़ल । एही शहरमे अछि । अपरिचित भऽ गेल अछि । मुदा नीक ओहदापर अछि । काज आबि सकैत अछि । मान-अपमानक स्थिति हम पार कऽ गेल छी । आब हम अपमानित नहि होइत छी, तिरस्कृत नहि होइत छी, मात्र अस्वीकृत होइत छी । कतहु स्वीकृत होयबाक सभ चेष्टा निष्फल भऽ रहल अछि ।

आनन्दक डेरा लग खूब राति बितलापर पहुँचल रही । साँसे मकान इजोतमे जगमगा रहल छलैक आ लगैत छलैक जेना कोनो विशेष आयोजन होइक भीतर । हम बड़ी काल धरि गेटपर असमंजसमे ठाढ़ रही । एक टा नोकर ओम्हरसँ गेल । ओकरा बजाकऽ एकटा कागतपर अपन नाम लिखि आनन्दकेँ पठबा देलिऐक । तैयो पन्द्रह मिनट धरि क्यो नहि बहरायल । एक बेर लागल जेना आनन्द केबाड़ लगसँ हुलकी दऽ हमरा देखि गेल अछि । बेसी विलम्ब होइत देखि, रुकब व्यर्थ मानि घूरऽ लगलहुँ कि आनन्द धड़फड़ायल पहुँचल–''बड़ उकडू समयमे आबि गेलेँ शंकर ! भीतर

लोकसभकेँ 'डान्स' आ 'डिनर' पर बजौने छिऐक । पैघ-पैघ लोक आयल छथि । तोँ काल्हि आफिसमे भेँट कर । अधलाह नहि मानिहेँ, एखन कनेक व्यस्त छी ।''

हमरा किछु कहबासँ पूर्वे आनन्द भीतर चल गेल । सूतल आ मुइल आत्मा एक बेर चीत्कार कयलक– ''भेटि गेलौक मूड़ी नुकयबाक लेल जगह ? एतेक संघर्षक बाद अन्ततः यैह भीख माङब आ दुर्गति भोगब लिखल छलौक भाग्यमे– सेहो अपन कहियोक निकट मित्रसभ द्वारा। एहिसँ तँ तोँ मोटा उठा लितेँ, कुली-मजदूर किछु भऽ जैतेँ, से नीक छलौक ।''

हम एक टा आगिमे झरकैत एम्हर-ओम्हर शहरमे बौआइत रहलहुँ । पार्क, सिनेमा, बजार सभक चक्कर काटि गेलहुँ । पयर थाकि गेल, मुदा राति नहि बीतल। एतेक रातिकेँ परिवारवला दीपककेँ जगा ओकर अप्रसन्नता मोल लेबऽसँ नीक छल शहरक सुन्न रस्तापर बौआयब, कोनो पार्कक बेंचपर राति काटि देब ।

बाट सुन्न भऽ गेल छलैक । दोसर 'शो'क पसिंजर उठा रिक्शोवलासभ कतहु सड़कक कातमे रिक्शा ठाढ़ कऽ थाकल, मुदा सुखद निन्नमे पड़ि रहल छल। हमर मोनक अशांति कतहु एक ठाम स्थिर नहि बैसऽ देलक । एक सड़कसँ दोसर सड़क, एक मोहल्लासँ दोसर मोहल्ला बौआइत रहलहुँ जेना आइ भोर होयबासँ पूर्व शहरक चौहद्दी एक बेर आर नापि जायब ।

रातिक अन्तिम पहरमे एकटा मोटरगाड़ी हमर समीप रुकैत अछि । घूमिकऽ पाछू नहि देखैत छिऐक । गाड़ी फेर 'स्टार्ट' भऽ पाछुएसँ घूमिकऽ चल गेल । कनेक काल बाद हमर पाछाँसँ एकटा नारीकण्ठ फूटल— 'हलो'...

हम घूरिकऽ पाछाँ देखलहुँ । एकटा कारी सन छौड़ी ठाढ़ि छलि । चेहरा परिचित सन लागल, जेना कहियो देखने होइऐक । कनेक जोर देलापर झट मोन पड़ल— एही छौड़ीकेँ पटना मार्केट लग आनन्दक गाड़ीमे बैसलि देखने छलिऐक । अन्तर एतबे छलैक जे ओहि दिन साँझमे ओकर चेहरापर मेक-अप छलैक, कारी चेहरापर स्वस्थ आकर्षण छलैक । मुदा एखन राति बितलापर ओ मेक-अप झड़ि गेल छलैक आ ओ एकदम बासि आ चूसल सिट्ठी सन लागि रहलि छलि । हमरा हँसी लागि गेल आ हम उनटिकऽ अपन खाली पाकेट देखबैत कहलिऐक–''सौरी, रोंग नम्बर, मिस !''

ओ एक क्षणक लेल अप्रतिभ भेलि । मुदा फेर अपनाकेँ सम्हारि हँसैत बाजलि–''नम्बरसभ हमरा चीन्हल अछि, अहाँ चिन्ता जुनि करू । मालवला असामीकेँ नहि चीन्ही, तँ एहि लाइनमे काज कोना चलत ? मुदा अहाँ आउ ने हमरा संग, दामक चिन्ता नहि करू ।''

रातिक तीन अंश सड़क आ पार्कमे बिताकऽ हम क्लान्त भऽ गेल रही । विशेष निषेध करबाक शक्ति नहि छल । कमसँ कम एक टा कोठली तँ भेटि जायत बाँकी रातिक हेतु । हम ओकर संग लागि जाइत छी । दू-तीन चक्करक बाद ओ एकटा छोटछीन मकानक ताला बाहरसँ खोलि भीतर चल अबैत अछि । इजोत बारि दैत छैक । हमहूँ भीतर आबि जाइत छी । ओ बिनु हमरा दिस घुरने बजैत अछि– ''अहाँ एहि कोठलीमे बैसू । हम अबैत छी ।''

ओ दोसर कोठलीमे अदृश्य भऽ जाइत अछि । हम कोठलीमे चारूकात नजरि दौड़बैत छी । एकटा छोटछीन चौकीपर उज्जर चादरि, कोनमे रैकपर किताबसभ, एकटा टेबुलपर एकटा छोट सन लैम्प आ एकटा फ्रेम कयल फोटो । दोसर टेबुलपर क्राइस्टक मूर्त्ति— सूलीपर लटकल क्राइस्ट आ तकर आगाँमे एक टा पोथी । हमरा कोठलीमे तेहन किछु ने भेटल जकरा असर्थ वा कुत्सित कहिऐक । हम बिछौनपर बैसि जाइत छी ।

दोसर कोठलीसँ एकटा स्वर, पुरुष-स्वर आयल— ''एखन फुरसति भेलौक अछि तोरा ? अनलेँ हमर चीज ?''

–''लियऽ !'' ओ छौंड़ी किछु दैत छैक प्रायः ।

कनेक काल फेर निस्तब्धता । तखन फेर वैह पुरुष-स्वर— ''हम एकसर किलोल करैत रहैत छी आ तोँ एकसरि मजा करैत रहैत छैँ !''

–''पाप्पा !'' जेना ओ तड़पि उठैत अछि– ''खबरदार जँ एको बेर एहन बात बजलहुँ । अहीँ लेल सभटा करैत छी हम । माय तँ आत्महत्या कऽ छुट्टी पाबि गेलि आ हम भोगि रहलि छी । राति-बिराति बौआइत रहैत छी । मुदा अहाँकेँ तँ बोतल चाही । कोना अबैत अछि ओ बोतल ताहिसँ अहाँकेँ की ? आइ छोड़बे ने करैत छल ओसभ, कोना अबितहुँ ?'' युवती प्रायः कानऽ लगैत अछि । फेर निस्तब्धता । हम बड़ी काल धरि प्रतीक्षा करैत छी । फेर नहि जानि कखन आँखि लागि जाइत अछि ।

भोरे अकचकाकऽ उठैत छी तँ ओ सामने ठाढ़ि अछि । नहायल, कारी-कारी पैघ-पैघ केश पीठपर छिड़िआयल, एकदम स्वस्थ आ पवित्र । रातुक युवतीसँ एकर कोनो मेल नहि छलैक । हम बिछौनसँ उतरैत कहलिऐक–''माफ करब ! थाकल रही, नहि जानि कोना आँखि लागि गेल राति । अहाँकेँ असुविधा भेल ।''

ओ हँसैत बाजलि–''मुदा अहाँ किएक चिन्तित होइत छी ? हम तँ पहिने कहि देने रही जे दाम नहि लागत ।''

हम लज्जित होइत कहलिऐक–''हमरा माफ करू । राति हम अपमान कयने रही अहाँक ।''

ओ गम्भीर भऽ गेलि— ''एहन अपमान तँ हमर नित्य होइत अछि, कहाँ क्यो माफी मङैत अछि ?'' ओ फेर हँसऽ लागलि–''अहाँ माफी मङनिहार पहिल व्यक्ति छी, जाउ, माफ कयलहुँ ।''

ओकर निर्मल हँसी देखि रातुक गप्प आ वार्तालाप हमरा असह्य लागऽ लगैत अछि । हम पूछि बैसैत छिऐक–''राति अहाँ हमरा टोकने किएक रही ?''

ओ ओहिना हँसैत बाजलि— ''गाहक बूझि तँ कथमपि नहि टोकने रही । हमरा बूझल अछि जे अहाँ आनन्द बाबूक मित्र थिकियनि । ओहि दिन पटना मार्केट लग देखने रही । काल्हि ओहि 'डांसपार्टी'मे सेहो हम रही । अहाँकेँ गेटपर ठाढ़ देखने रही । फेर रातुक दू बजे सुन्न सड़कपर ठाढ़ देखि लागल जेना अबस्से कोनो विपत्तिमे छी अहाँ । मोन नहि मानलक, टोकि देलहुँ । कोनो अपराध कयलहुँ ?''

–''नहि तँ, अपराध तँ हमरासँ भेल । अहाँकेँ अण्ट-सण्ट कहि देलहुँ । बेर-बेर लज्जित नहि करू हमरा ।''

ओ खूब हँसलि । हँसिते बाजलि— ''अहाँ तँ तेना गप्प कऽ रहल छी हमरासँ जेना कोनो कुलीन कन्याक सामने बैसल होइ ! हमर असली रूपसँ तँ अहाँ परिचिते छी ।''

–''परिचित तँ नहि छलहुँ, मुदा राति परिचय भेटि गेल ।'' हम ओकरा विस्मित देखि बात बदलैत कहैत छिऐक–''ई फोटो ककर राखल अछि टेबुलपर ?''

ओ स्नेहसँ फोटो उठा लैत अछि । कनेक काल देखैत रहलाक बाद फोटो स्थानपर रखैत बजैत अछि–''हमर छोट बहीन थिक । राँचीमे पढ़ैत अछि । होस्टलमे राखि देने छिऐक । एहि वातावरणसँ दूरे रहय सैह नीक ।''

हम ऊठिकऽ ठाढ़ होइत विदाक नमस्कार करबा लेल हाथ जोड़ैत-जोड़ैत एकाएक पूछि बैसलिऐक–''अहाँक नाम तँ पुछबे नहि कयलहुँ मिस !''

ओ बीचेमे टोकैत बाजलि— ''मिस नहि, खाली रोजी ।''

हम कहलिऐक–''मिस नहि, तँ रोजी सेहो नहि, हम अहाँकेँ चम्पा कहब ।''

ओ हँसैत पुछैत अछि–''हिन्दू बनायब की ? क्रिस्तान महिला पसिन नहि ? मुदा चम्पा किएक, गुलाब किएक नहि ?''

–''चम्पा हमर नेनाक दोस्त छलि ।'' हम कहलिऐक ।

ओ गम्भीर भऽ गेलि–''आब कतऽ अछि ?''

–''दुनियाँक भीड़मे कतहु हेड़ा गेलि अछि ।''

–''केहन छलि ?'' ओ पूर्ववत गम्भीर छलि ।

–''केहन छलि से तँ हमरा नीक जकाँ मोनो नहि अछि । भऽ सकैत अछि नीक रहलि होअय । मुदा हमरा बड़ नीक लगैत छलि ।''

रोजीक मुँहपर कुमारि कन्याक मुँह सन लाली आबि जाइत छैक आ ओ एकटक हमर मुँह देखैत अछि ।

हम नमस्कार कऽ बाहर चल अबैत छी ।

ओही दिन एकाएक गाम आबऽ पड़ि जाइत अछि । दीपकक डेरापर घूरिकऽ देखैत छी जे एकटा तार प्रतीक्षामे पड़ल अछि । दीपक पढ़ि चुकल छल । तार हमरा दैत बाजल–''एखने चल जो । साँझेसँ ताकि रहल छियौक । कतऽ चल गेल छलेँ ?''

बाबी नहि रहलि । अन्तिम समय देखियो नहि सकलिऐक । मुदा ओकर काजमे नहि पहुँचब तँ लोक की कहत ? जाय तँ पड़बे करत । ओही दिन गाम विदा भऽ जाइत छी ।

काज यथासाध्य बाबीक मर्यादाक अनुकूले होइत छैक । सौंसे गाम तीन दिन धरि कचरिकऽ खाइत अछि । खूब दान-दक्षिणा होइत छैक । कतहु अभाव नहि ।

मुदा काज खतम होइते देरी काका-बाबूजी दुनू चिन्तामे पड़ि जाइत छथि । महाजन नीक जमीनक लोभमे टाका दऽ देने छलनि । आब ओकरा रजिस्ट्री चाहिऐक । ओहो काज सम्पन्न भऽ जाइत छैक ।

हम गाममे निरर्थक बैसल रहैत छी– अकर्मण्य । दुनू साँझ खाइत छी, जलखै करैत छी आ बिछौनपर पड़ल-पड़ल किताबकेँ उनटबैत रहैत छी । पटना जयबाक साहस नहि होइत अछि । दीपकक डेरामे आब जगह नहि, दोसरो कोनो व्यवस्था नहि । कतऽ जायब ? कोना रहब ? साहस नहि होइत अछि ।

कौखन अपनापर बड़ लज्जा होइत अछि । रोजी मोन पड़ैत अछि । शराबी बाप आ अबोध बहिनक हेतु शरीर बेचिकऽ एकसरि ओहि शहरमे रहि लैत अछि, तीन गोटेक पेट भरि लैत अछि, बहिनकेँ पढ़ा लैत अछि आ बापक हेतु शराबो लऽ अबैत अछि । हम एतऽ बूढ़ बापक छातीपर बैसल मुफ्तक रोटी खा लैत छी । शरीर बेचि ककरो पालन कऽ लेब की एहिसँ अधम काज छैक ?

दिनमे कतेको बेर निश्चय करैत छी बिदा भऽ जयबाक । मुदा सभ दिन साँझ होइत-होइत ओ निश्चय बदलि जाइत अछि । सोचैत छी काल्हिसँ खेते-पथार देखब, सेहो संभव नहि होइत अछि । एकटा निश्चियहीन अकर्मण्यतामे दिन कटैत रहैत छी ।

गाम शान्त अछि । कोनो खास उथल-पुथल नहि । नियमित दिनचार्यमे बान्हल लोकसभक जीवन । ककरो कोनो व्यतिक्रम नहि । मुदा शान्त गाममे एक दिन सनसनी पसरि जाइत अछि– चारू कात एहि कोनसँ ओहि कोन एक्के टा चर्चा– 'घूरन मिसरक बियाह भऽ गेलै । बियाह-दुरागमन संग-संग ।'

हमरो भेँट होइत छथि । आकृतिपर प्रसन्नता अँटैने नै अँटि रहल छलनि । हम हँसी कयलियनि– ''की औ ! एहि बेर सभा धारि गेल ।''

ओ हाथ जोड़ैत बजलाह– ''सभ भगवानक आ अपनेलोकनिक कृपा । साक्षात् लक्ष्मी भेटि गेलि छथि ।''

हम मोने-मोन हँसैत छी । एहि वयसमे आ सभ तरहेँ निराश भऽ गेलाक बाद, अनायास जे उपलब्ध भऽ गेल छलथिन, से तँ लक्ष्मी-सरस्वती दुनू एक्के संग लगबे करथिन ।

मुदा घूरन मिसरकेँ लक्ष्मीक छाया आफद भऽ गेलनि । प्राते भेने भरि गाम हल्ला मचि गलैक । कोनो स्त्रीगण देखिते चीन्हि गेलैक आ भरि गाम हल्ला कऽ देलकैक । हल्ला ओहि पार रतनाक गाम धरि पहुँचि गेलैक ।

आ घूरन मिसरक जीवन आफतमे पड़ि गेलनि । कहियो चारिटा पाथर

आङनमे खसि पड़नि, कहियो काँट-कूस । मुदा सेहो खेपि गेलाह । सभ-किछु पूर्ववत शान्त भऽ गेलैक । लोक ओहि बातकेँ स्वीकृत विस्मृत कऽ देबऽ लगलैक ।

हमरा शुरूहेसँ ओहि घटनामे तेहन आश्चर्य नहि भेल छल । ई नहि होइतैक तँ एहने किछु अबस्से होइतैक, किछु एहूसँ बेसी अधलाह । मुदा एहि काण्डक पटाक्षेप बाँकी रहि गेल छल ।

हम पटना जयबाक निश्चय कऽ चुकल रही । मोनक भर्त्सना असह्य भऽ गेल छल । गाम छोड़ि देबाक अतिरिक्त कोनो बाट नहि सुझाइत छल । नहि जानि किएक एतेक अभाव भऽ गेल छल आत्मबलक जे निश्चयपूर्वक किछु सोचि सकी आ कऽ सकी ? एहि विश्वासक संग पटना बिदा भऽ सकी जे एकटा दीपकक घर नहि रहल तेँ की, हजार टा घर ताकि लेब । रमण आ आनन्द नहि काज देलक तेँ की, अपनेसँ गुजर करबाक जोगाड़ किछु कऽ लेब । किछु कऽ सकब जीबाक अनिवार्य शर्त थिकैक । ओकरा पूरा नहि कऽ अकर्मण्य भेल मृतक जकाँ कतेक दिन पड़ल रहब ?

मोटा-चोटा बन्हा गेल छल । मोटा-चोटा की, एकटा बैग आ शतरंजीमे लपेटल एकटा गेरुआ । काँख तर दबा अपनहुँ विदा भऽ सकैत छलहुँ । मुदा गाममे एखनो क्यो कहबैत छलहुँ हमरालोकनि । अपने कोना मोटा उठायब ? चरबाह संग जाय लेल तैयार अछि ।

माय-बाबूजी, कक्काकेँ गोड़ लागि जहिना बिदा होबऽ लगलहुँ, घूरन मिसर अपस्याँत दौड़ल अयलाह– ''कने चलू शंकर बाबू ! नहि तँ काण्ड भऽ जायत हमर आङनमे । रतन मुखिया काण्ड करऽपर तुलल छथि ।''

हम बात टारैत कहैत छियनि— ''हमर गाड़ी छूटि जायत । देखैत नहि छी, लखना मोटा लेने ठाढ़ अछि ।''

—''से हम नहि मानब ।'' घूरन मिसर घिघिआय लगलाह– ''कने हमरे आङनक बाटे चलू । गाड़ी नहि छूटत ।''

ओ किन्नहुँ नहि मानैत छथि । नचार लखनाकेँ मोटा लऽ स्टेशन दिस बिदा कऽ दैत छिऐ । घूरन मिसरक संग हुनक आङन दिस बिदा होइत छी । हुनक आङनक चारूकात खूब भीड़ बुझाइत अछि । खाली स्त्रीगण सभ, टाटसँ आङनमे हुलकैत । दू-चारि टा पुरुष दूर-दूरपर ठाढ़ तमाशा देखि रहल छथि । एक्केटा घर छनि घूरन मिसरकेँ, आ टाटसँ घेरल आङन । बीच आङनमे ठाढ़ रतना गरजि रहल छल– ''जे क्यो अछि एहि घरमे, बाहर निकलओ, हम देखऽ चाहैत छिऐक ।''

ओकर गर्जना चारू कात प्रतिध्वनित होइत छैक । मुदा घरसँ क्यो नहि बहराइत छैक ।

रतना फेर गरजैत अछि– "हम आखिरी बेर कहैत छिऐक, जे क्यो अछि एहि आङनमे, बाहर निकलि आबओ नहि तँ हम घरमे पैसि जयबैक ।"

मुदा एहि बेर रतनाक गर्जना समाप्त होयबासँ पूर्वे एकटा युवती घरसँ बहराकऽ आङनमे आबि जाइत छैक आ झट अपन मुँहपरसँ आँचर हँटा कहैत छैक– 'ले, देखि ले आ चीन्हि ले । की देखऽ चाहैत छेँ, देखऽ चाहैत छेँ तोहर स्त्री छियौक, कि मिसरक ? ले, फेर देखि ले, आ बाज, छियौक तोहर स्त्री ? लऽ चलबेँ अपन घर ?"

ओहि स्वस्थ पिण्डश्याम स्त्रीक साहसपर आशंकित भऽ उठलहुँ । रतना कोनो काण्ड कऽ देतैक आइ एहि आङनमे । सभक सामने बलात्कार कऽ देतैक वा घिसियाकऽ आङनसँ बाहर लऽ जयतैक ।

मुदा से सभ किछु नहि भेलैक । रतना मूड़ी आ कन्हा झुकौने ठाढ़ रहल। जीवनमे पहिल बेर हम ओकरा लज्जित आ पराजित देखि रहल छलिऐक ।

कनियेँ काल बाद ओ घूरल । हमरा घूरन मिसरक संग ठाढ़ देखि हँसऽ लागल— "तोहूँ आबि गेल छेँ ? अनेरे लोकसभ गप्प उड़ाकऽ माथ खराब कऽ देने छल । एहनो कतहु संभव छैक ? अनेरे एकरा सभकेँ तंग कयलिऐक । माफ करब घूरनजी !" आ बिदा भऽ गेल जेना किछु भेले नहि होइ । ओ फेर अपन परिचित चालिसँ जा रहल छल— दुनू पंजापर बेराबेरी झुलैत आ माथपर लटकि आयल केशकेँ बेर-बेर ऊपर झटकैत ।

हम स्टेशन दिस बिदा भेलहुँ । हम बूझि गेलिऐक जे रतना एखन आर तरक्की करत । ओ आब आर बुझनुक भऽ गेल अछि । ओ एसेम्बलीक लेल अगिला चुनाव अबस्से जीति जायत ।

मुदा हम ? हम की करब ? एहिना गाम आ पटनाक बीच डोलैत रहब पेण्डुलम जकाँ । कहियो स्थिर नहि भऽ सकब । आनन्द, रमण, रतना सभ तँ आगू बढ़ल जा रहल अछि । हमहीँ ठाढ़ भेल तमाशा देखि रहल छी ।

एकाएक जेना सभ टा नस तड़तड़ा उठैत अछि, रक्तक वेग तेज भऽ जाइत अछि आ सौंसे देह उत्तेजनासँ काँपऽ लगैत अछि । हम लाइनपरसँ पाथर उठा-उठाकऽ बताह जकाँ बिजलीक खम्भापर मारऽ लगैत छी । मारने चल जाइत छी— अनधुन।

●

हमरा लग रहब ?